वर्ष 14, अंक 48-49, चैत्र - भाद्रपद 2078 (अप्रैल - सितम्बर 2021)(संयुक्तांक)

20/- टाका

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक

महाकवि पं. लालदास विशेषांक



साक्षात्कार
जगदीश प्रसाद मण्डल



महाकवि लालदास
डॉ शेफालिका वर्मा



महाकविक सौन्दर्य-बोध
डॉ. अमरनाथ चौधरी



सावित्री सत्यवान एकटा स्त्री शिक्षा प्रधान नाटक
डॉ. नबोनाथ झा



महाकवि लालदासक समायणमे लौकिक-अलौकिक पक्ष
डॉ. अरुणा चौधरी



सीताक चित्राणमे महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य
डॉ. रंगनाथ दिवाकर

Price : India Rs. 20.00, Nepal Rs. 30.00, Europe € 2.00, UK £ 1.5, US $ 3.00

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक पत्रिका

नई दिल्ली सँ प्रकाशित तथा सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

दाम - एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्र

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

मैथिली शुभ संस्कार-विधि विधान व गीत (तृतीय संस्करण)	(ब्रह्मदेव लाल दास एवं विन्देश्वरी दास)	200/- टाका मात्र
वट सावित्रि व्रत कथा	(ब्रह्मदेव लाल दास)	20/- टाका मात्र
मैथिली गीता	(डॉ. जनक किशोर लाल दास)	205/- टाका मात्र
गिरिजा गीत	(गिरिजा देवी)	75/- टाका मात्र
अहिं जकाँ	(बिनीता मल्लिक)	75/- टाका मात्र
मोहपाश	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	150/- टाका मात्र
आउ बढ़ि चलू	(विनिता मल्लिक)	200/- टाका मात्र
कोईली	(डॉ. उमा शंकर चौधरी)	150/- टाका मात्र
नागफांस (अंग्रेजी)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)(अनुवाद : राजीव वर्मा एवं जया वर्मा)	200/- टाका मात्र
नागफांस (मैथिली)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	200/- टाका मात्र

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करु :

मिथिलांगन
साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

मिथिलांगन (पंजी.)
ए–40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं0 2,
सेक्टर 4, द्वारका, नई दिल्ली–110078
फोन : 9312301160, 9810450229
ई–मेल : mithilangan@gmail.com



मुकेश दत्त
संपादक

वर्ष : 14, अंक : 48-49, चैत्र – भाद्रपद 2078, अप्रैल–सितम्बर 2021 (संयुक्तांक)

मैथिली साहित्यक देदिव्यमान नक्षत्र : पं. लालदास

श्रद्धेय मैथिलवृन्द
सादर प्रणाम

आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ अपन पाण्डित्यपूर्ण सृजनात्मक ज्ञानक बलेँ समृद्ध करयवला कायस्थ कुल शिरोमणी महाकवि पंडित लालदास (1856-1920) अपन सांस्कृतिक चेतना, प्रांग्वाङ्मय, विस्तृत ज्ञानसँ सदिखन माए मैथिलीक पाग ऊँच केने रहलाह। बहुभाषाविद्, साहित्य साधक, प्रकृष्ट पाण्डित्य हेतु महाराज रमेश्वर सिंहसँ 'धौत सम्मान', 'पण्डित', 'कायस्थर्षि' आदि सम्मानसँ सम्मानित लाल दास साहित्यक अलावे पुराण, तन्त्र वाङ्मय, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड आदिमे सेहो गम्भीर अध्ययन राखैत छलाह जे हिनक कृतिमे सेहो दृष्टव्य होइत अछि। हुनका विपुल शब्द-सम्पदा, गम्भीर अभिव्यंजना शक्तिक संग समृद्ध साहित्यिक अभिज्ञान प्राप्त छलैन्ह। बहुभाषाविद रहितो ओ अपन मातृभाषा माए मैथिली लेल असीम अनुराग आ श्रद्धाभक्ति राखैत छलाह। हिनक जिनगीमे एकटा अद्भुत संयोग देखल गेल, हिनक जन्म, विवाह आ मृत्यु तीनू कृष्ण पक्षक तृतीया, रवि दिन भेल।

जनक, गौतम, याज्ञवल्क्यक भूमि मिथिला धाम पूर्वेसँ विद्वानक गढ़ रहल अछि, मुदा एकरा लेल उन्नैसम शताब्दी बेसी महत्व राखैत अछि। एहि कालखण्डमे मनबोध, चंदा झा, लालदास सदृश्य व्यक्तित्वक अवतरण एहि धरा पर भेल जे अपन कृतिसँ मातृभूमि मिथिला, मातृभाषा मैथिली अओर मैथिलजनकेँ अतिशय गौरवान्वित केलैन्ह। लालदासक जन्मक समय नामकरण भेल 'चूड़ामणिदास' परञ्च भविष्यमे 'लालदास' नामसँ प्रख्यात भऽ माए मैथिलीक अनवरत सेवा करैत विभिन्न विधामे अट्ठारह गोट ग्रन्थक रचना कऽ मैथिली साहित्यक चूड़ामणि रूपेँ प्रतिष्ठित भऽ मैथिली साहित्य केर एकटा दीप्यमान नक्षत्र बनि गेलाह।

ई तऽ भेल हिनक संक्षिप्त परिचय, आब हिनक रचना कौशल पर चर्चा करी।

लालदासक रामायणमे पुष्कर काण्ड एकटा अप्रतिम रचना अछि, जाहिमे सीताक शक्तिरूपक व्याख्या कवि हृदय खोलि केने छथि। एहिमे कवि द्वारा आदर्श नारीक चरित्रक उजागर चंदा झाक रामायणसँ बेसी भेल अछि, हिनक सीताक चरित्र वंदनीय अओर अनुकरणीय अछि।

रहु प्रसन्न जानकि सदा, क्षमब हमर अपराध। राजौं कुपुत्र दूषण करय, जननीकाँ नहि बाध।।

(लालदास कृत रामेश्वरचरित मिथिला रामायणक पुष्कर काण्ड)

जे जन छथि ऐश्वर्य युत तेजस्वी श्री मान। तनि सभ मे अर्जुन बुझब हमरे अंश प्रमाण।।
बहुत अहाँ काँ की कहब एतवय सौं बुझु 'लाल'। सकल चराचर मे हमहिं व्यापित छी सभ काल।।

(लालदास कृत श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवाद दशम अध्याय)

एहि विधि कहि अर्जुन तखन, शर धनु देलनि त्यागि।
शोकाकुल बैसलाह गै, रथक पाछु मे लागि।।

(लालदास कृत श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवाद प्रथम अध्याय)

ज्ञान ज्ञेय ओ क्षेत्र हम, एहि विधि देल सुनाय। बुझता जे रहताह से, हमरे निकट सदाय।।

(लालदास कृत श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवाद त्र्योदशम अध्याय)

हमरहि हेतु क्रिया करथि, हमरहि गुरुतर मान। हमर भक्त हमरहि भजथि, संगरहित परधान।।
संग विवर्जित जीव सौं, वर भाव छनि त्याग। से हमरा पावथि सदा, जानव 'लालऽक' भाग।।

(लालदास कृत श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवाद एकादशम अध्याय)



संपादकीय

गीत :

1. *जय जय कुलक गोसाउनि पुरु मन-भाउनि हे!*
   कि कहब हम गुण गाउनि विनय सोहाउनि हे!!
2. *देखू देखू सजनी। वर कें विकट तीन आँखि भजनी।।*
   दुई आँखि रवि शशि जोति भंजनी,
   एक आँखि ज्वलित अनल रजनी।।
3. *कि कहब आगे माय, देखल न जग भरि एहन जमाय।*
   झूल झूल बूढ़ देह कपय सदाय, बरद चढ़ल शिर साँप फुफुआय।।
4. *भेलूँ अहँक वड़छतिया, हे! धनि।*
   नारद आबि कतेक मिथ्या कहि।।
   हरल गिरिक गति मतिया। हिमगिरि शुद्ध हृदय नहि वुझलनि।।
5. *कोना हयत विवाह।। सोनो प्रतिमा उमा दुलहा बताह।।*
   चरण लोटाय उमा शिर केश पाश।
   शिवक शिखर जटा पर से अकाश।।
   उमा दन्त देखि मुक्ता दाड़िम लजाय।
   बुढ़ाक दशन मुख हिलय सदाय।।

(लालदास कृत महेश्वर विनोद (पद्यमय) उत्तरार्द्ध)

उपरोक्त उद्धरणसँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे महाकविक रचना सरल, सुलभ, बोधगम्य अओर जनभाष्य होइत छल। महेश्वर विनोदक पूर्वार्द्धमे तऽ एक्कोटा गीत/गीतिका नञि अछि, मुदा उत्तरार्द्धमे एकर भरमार अछि, सेहो सुगेय जाहि माध्यमे ओ अपन कथ्य कहबामे सफल भेल छथि। एहिमे ओ भगवान शिवक विवाहक चर्चा एना केने छथि जे लागि रहल अछि ई विवाह मिथिलेमे भऽ रहल होए। एहिमे शिवक सिद्धांतक, वर-वरियातीक परिछनक, स्त्रीगण आ मेनाक चिन्ता-विषाद, स्त्रीगण-सखी-संगीक हँसी-ठट्ठा, गोत्राध्याय आदिक वर्णन अछि जे शिव विवाहकेँ रूचिकर अओर मिथिलामय बनाबैत अछि। पूर्व कालमे बेटीक द्विरांगमन काल खोईंछामे महाकवि रचित पोथी देल जाइत छल, एहन विध आ विद्याक प्रचार-प्रसार एहि मिथिलेमे देखल जा सकैत अछि।

मिथिलांगनक ई अंक ***महाकवि पं. लालदास*** केर समर्पित अछि। एहि अंकमे अनेको विद्वतजनक महाकवि केर व्यक्तित्व, कृतित्व, रचना, रचना शैली, रचनाधार्मिता, मैथिली साहित्यमे हुनक अवदान, समकालीन साहित्यकार पर हुनक आ हुनका पर आन साहित्यकारक प्रभाव, समाज पर हुनक लेखनीक प्रभाव, हुनक कृतिक पात्र समीक्षा, रचना वैशिष्ट्य आदि शीर्षक पर हुनक सारगर्भित लेख समाहित अछि जे पाठकवृन्दकेँ विस्मृत भेल **लालदासजी**केँ पुनः जागृत करबामे सहायक सिद्ध होएत, एहन हमर माननाय अछि।

अपन स्थायी स्तम्भक संग **मिथिलांगन**क ई तेसर ई-पत्रिका अपने लोकनिक आगाँ राखि रहल छी। आशा अछि अपने लोकनिकेँ **लालदास विशेषांक** रूपेँ मिथलांगनक नव पुष्प समीचीन लागत।

कहैत हर्षक अनुभूति भऽ रहल अछि जे **मिथिलांगन**क अगिला अंक पत्रिकाक ***पचासम (50म)*** अंक रहत, अपने लोकनिक स्नेह आ सहभागितासँ ई अंक स्मरणीय बनय एहि मंगलकामनाक संग-

अपनेक
मुकेश दत्त

व्यवस्थापन अओर विपणन कार्यालय : आदर्श इंटरप्राइजेज, 4393/4, तुलसीदास स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : (011) 23246131/32, 41009940, फैक्स : 23246130
ई-मेल : adarshbooks@vsnl.com

संपादक : मुकेश दत्त
(समस्त संपादकीय कार्य पूर्णरूपेण अवैतनिक)

आवरण : रविन्द्र कुमार दास
डिजाइन आ सज्जा : संजीव कुमार 'बिट्टू'

मिथिलांगन मे छपल रचना/लेख इत्यादि मे व्यक्त विचार लेखक लोकनिक निजी विचार छैन्ह आ ई आवश्यक नहि जे ओ मिथिलांगनक नीति वा विचार इत्यादि कें प्रतिबिम्बित करय।

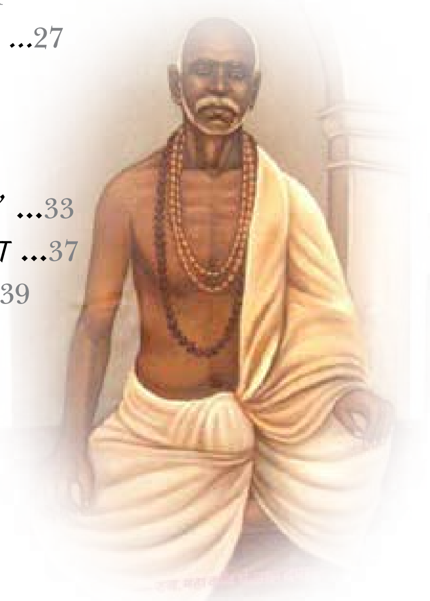
सब विवादक निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली स्थित सक्षम न्यायालय आ फोरम मे कएल जायत।

मिथिलांगन (पंजी.) संस्थाक दिससँ अओर लेल अभय कुमार लाल दास द्वारा ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078, सँ प्रकाशित अओर आनंद संस (इण्डिया), सी-87, गणेश नगर (पांडव नगर कॉम्पलेक्स), दिल्ली-92, मे मुद्रित।
सम्पर्कः 9910952191 (संपादकीय)
9312301160, 9810450229 (प्रकाशकीय)
ईमेल : **mithilangan@gmail.com**
वेबसाइट : **www.mithilangan.org**

शुल्क : भारत मे एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्रा (डाक खर्च सहित)।

अनुक्रम





मान्यवर,

जाहि पाठक लोकनिक एक वर्षीय सदस्यता समाप्त भऽ रहल छैन्ह वा नव सदस्यता लेबऽ चाहैत छथि, हुनका लोकनिसँ सादर अनुरोध जे अपन सदस्यताक नवीनीकरण वा नव सदस्यता लेबाक हेतु 100 टाका (डाक खर्च सहित) व्यक्तिगत रूपेँ, मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट वा नगद आदिक माध्यमसँ मिथिलांगन कार्यालयक पता पर अविलम्ब पठा दी। मनी आर्डर, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि MITHILANGAN नामसँ बनाओल आ दिल्लीमे देय हेबाक चाही।

- पत्रिका प्रसार व्यवस्थापक, मिथिलांगन

बच्चाकेँ भावनात्मक रूपसँ सशक्त बनाऊ



❑ डॉ. दीप्ति प्रिया

महामारी अओर लॉकडाउन दुनिया भरिमे भय आ चिंताक भावनाकेँ बढ़ा देलक। ई घटना बच्चा आ किशोरक लेल अल्पकालिकक संग-संग दीर्घकालिक मनोसामाजिक आ मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाललक अछि। वर्तमान परिस्थितिमे जीवनशैलीसँ लऽ कऽ शिक्षा धरि सब किछु एकटा अप्रत्याशित मोड़ लऽ लेने अछि। सोशल डिस्टेंसिंग, घरे मे रहनाय, कम-सँ-कम आजादी, ऑनलाइन कक्षा आदि सेहो बच्चामे भावनात्मक संकट बढ़ेबाक क्षमता राखैत अछि। किशोर पर प्रभावक गुणवत्ता आ परिमाण कतेको कारक द्वारा निर्धारित कएल जाइत अछि, जेना- विकासात्मक विषय, शैक्षिक स्थिति, पहिने सँ मौजूद मानसिक स्वास्थ्यक स्थिति, आर्थिक रूपसँ वंचित भेनाय वा संक्रमण वा संक्रमणक डरसँ चिंतित भेनाय। अपन बच्चाकेँ एहि बारेमे बात करबाक लेल आमंत्रित करू जे ओ केहन महसूस कऽ रहल छथि। उदासी, निराशा, चिंतित भेनाय आ क्रोधित महसूस करनाय मनोवैज्ञानिक तनावक संकेत भऽ सकैत अछि। ध्यान राखु जे किशोर आ युवा वयस्क दोसर पर बोझ डालयसँ बचय लेल, डर, शर्म वा जिम्मेदारीक भावनाक कारणेँ अपन संघर्षकेँ छिपाबाक कोशिश कऽ सकैत छथि। भऽ सकैत अछि जे छोट बच्चा एहि भावनाक बारेमे बात करय नञि जानैत होथि, कतेको बच्चा एहि भावनाकेँ समैझो नञि पाबैत छथि, मुदा हुनक व्यवहार आ विकासमे बदलाव देखाय पड़ि सकैत अछि।

आजुक परिवेशमे, चिंताक भेनाय वास्तविक अछि। चिंता हमर समय आ ऊर्जाकेँ खरच करैत अछि अओर मानसिक स्वास्थ्यकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि। एहि लेखक उद्देश्य ई चर्चा करनाय अछि जे माता-पिता कोना अपन बच्चक सहायता कऽ सकैत छथि वा किशोर स्वयंक मदति कोनो कऽ सकैत छथि।

शिशु, बच्चा आ छोट बच्चामे एहि निम्न बातक खास ध्यान दी-

1. घबराहट आ चिड़चिड़ापन, बेसी आसानीसँ चौंक जेनाय वा आसानीसँ कानि देनाय।
2. जरूरतसँ बेसी सुतनाय आ राति बेसी जागनाय।
3. कब्ज वा पातर पैखाना वा पेट दर्दक शिकायत।
4. अलगावक चिंता भेनाय, माता-पितासँ बेसी चिपकनाय।
5. मार-पीट करनाय, हताशा आ अत्यधिक नखरा करनाय।
6. बार-बार बिस्तर गीला करनाय।
7. तत्काल जरूरतकेँ नञि बतेनाय, असंतुष्ट रहनाय।
8. खेल आ बातचीतक दौरान बीमारी वा मृत्यु जेहन विषय पर डरि जेनाय।

पैघ बच्चा आ किशोरमे निम्न बातक खास ध्यान दी-

1. लगातार चिड़चिड़ापन, निराशा वा क्रोधक भावना, मित्र/परिवारक संग बेर-बेर बहस करनाय वा लड़नाय।
2. व्यवहारमे बदलाव, जेना- व्यक्तिगत संबंधसँ पाछाँ हटनाय। उदाहरण लेल- जौं सामान्यतः बाहर जायवाला अहाँक किशोर अपन मित्रक संग संदेश भेजय वा वीडियो चैट करयमे कम रूचि देखाबैत छथि, तऽ ई चिंताक कारण भऽ सकैत अछि।
3. पहिलुक पसंदीदा गतिविधि सबमे रूचि कम भेनाय। उदाहरणार्थ- कि अहाँक संगीतप्रेमी बच्चा अचानक संगीत वाद्ययंत्रक अभ्यास करनाय बंद कऽ देलैन्हे? कि अहाँक आकांक्षी शेफ (chef) खाना पकाबयमे रूचि हेराय देलैन्हे?
4. नींदमे कमी वा वृद्धि एनाय।
5. भूख, वजन वा खेनायक पैटर्नमे



बदलाव। जेना कि- खेनायमे कमी वा हर समय खेनाय।
6. स्मृति, सोच वा एकाग्रताक समस्या।
7. स्कूलक कार्यमे कम दिलचस्पी आ प्रयासमे गिरावट।
8. बुनियादी व्यक्तिगत स्वच्छतामे कमी।
9. व्यवहारमे लापरवाहक वृद्धि।
10. मृत्युकेँ बारेमे बेसी विचार।

एकटा व्यक्तिकेँ संतुलनमे रहय, जीवन महसूस करय, पूर्ण रूपेँ प्यार महसूस करय, खुशी महसूस करय अओर उत्पादक हेबा लेल छह जैविक आ मनोवैज्ञानिक जरूरत पूरा हेबाक चाहि। मनोचिकित्सक डॉ. एरिक बर्न द्वारा प्रतिपादित निम्नांकित मनोवैज्ञानिक आवश्यकता वर्तमान स्थितिसँ जुड़ल चिंताक रूपमे छिपल तड़पकेँ प्रकट करयमे मदति कऽ सकैत अछि। आऊ ओहि छह प्रमुख भावनात्मक जरूरतकेँ जानी जकरा भावनात्मक आवश्यकताक रूप लेबासँ रोकबाक लेल पूरा प्रयास करबाक चाहि। ई सभ आवश्यकता आपसमे जुड़ल अछि, एहिसँ जखन अहाँ एक-दू भावनात्मक आवश्यकता पर लालायित महसूस करब तऽ बाकी सेहो स्वयं प्रभावित भऽ जाइत अछि। अहाँ एकटा जरूरतक पूर्ति करबाक प्रयास करैत छी तऽ दोसर जरूरतक पूर्णता पर स्वयें कार्य शुरू भऽ जाइत अछि। कानो एकटा जरूरतमे कमी भेला सँ बाकियोमे तकलीफ महसूस भेनाय स्वाभाविक अछि। जीवंतता महसूस करबाक लेल ई महत्वपूर्ण अछि जे सभ छओ जरूरतकेँ समान रूपसँ पूरा कयल जाए।

डॉ. एरिक बर्न द्वारा प्रतिपादित छओ मनोवैज्ञानिक आवश्यकता निम्न अछि-

1. **संपर्क -** शारीरिक स्पर्श, गला लगेनाय, हाथ पकड़नाय।
2. **पहचान -** अपना दिश ध्यान आकर्षित करबाक आवश्यकता।
3. **घटना -** कोनो रोमांचक गतिविधिक जरूरत।
4. **उत्तेजना -** एहन संवेदनशील कार्य जाहिमे पाँचो इन्द्रिय शामिल होए।
5. **संरचना -** जीवनकेँ स्वयं निर्देशित करबाक आवश्यकता।
6. **जुनून -** सृजन (किछु बनेबाक) केर आवश्यकता।

आत्म जाँचसँ चिंतनक पाछाँक लालसाक पता लगाबयमे मदति मिलैत अछि। निम्नलिखित प्रश्नसँ अहाँ स्वयंक आ अपन बच्चकेँ सही दिशामे सोचय लेल प्रोत्साहित कऽ सकैत छी।

1. अहाँ कि चाहैत छी? अओर किएक चाहैत छी (मनोवैज्ञानिक आवश्यकता)?
2. अहाँक इच्छाकेँ पूरा करबामे महत्वपूर्ण चुनौती कि अछि?
3. अहाँ एकरा कोना दूर कऽ सकैत छी (पहिने सावधानी सुनिश्चित करी)?
4. अहाँक इच्छाकेँ पूरा करय लेल वैकल्पिक तरीका कि भऽ सकैत अछि?



(7 वर्षसँ कम उम्रक बच्चाक लेल एहि प्रश्नकेँ अपन सुविधानुसार फेरसँ तैयार कएल जा सकैत अछि)

उपर्युक्त अपूर्ण इच्छा चिंता पैदा करैत अछि। हम चिंताक प्रकारमे अंतर कऽ कऽ आ उपयुक्त उपाय कऽ कऽ एकरा कम कऽ सकैत छी।

वास्तविक चिंता : वास्तविक समस्या ओ होइत अछि जे वर्तमानमे हमरा प्रभावित कऽ रहल अछि। **उपाय :** योजना बनाऊ, उचित कार्रवाई करू।

काल्पनिक चिंता : ई एहन समस्या अछि जे वर्तमानमे मौजूद नञि अछि, अहाँ स्वयं सबसँ खराप परिदृश्यक बारेमे सोचि रहल छी। **उपाय :** मानसिक स्वास्थ्य बढ़ेबा लेल ध्यान करबाक आदत डालु।

चरण 1

1. सांस लीय - अपन सांसकेँ अंदर जाइत महसूस करू।

2. सांस छोड़ू - अपनी सांसकेँ बाहर आबैत महसूस करू।

चरण 2

1. सांस लीय - (पुष्टि करू) हम शांत आ स्वस्थ छी।

2. सांस छोड़ू - (पुष्टि करू) हम सभ तनावकेँ दूर करैत छी।

(एकरा 12 बेर करू)

चिंता स्थगनक अभ्यास करू। चिंताकेँ 30 मिनट लेल स्थगित करू, जेना 'अखन चिंता नञि करब। 30 मिनट बाद एहि पर विचार करब।' फेर २ घंटा लेल स्थगित करू, आगाँ 6 घंटा लेल, बादमे अगिला दिनक लेल।

एहन गतिविधिमे शामिल होऊ जाहिमे शारीरिक व्यायामक आवश्यकता होए वा जाहिमे संज्ञानात्मक कार्य शामिल होए।

तत्कालिक विचार पर ध्यान दी। अपन अस्वस्थ विचारकेँ चुनौती दऽ आकरो स्वस्थ बनेबाक प्रयास करू। उदाहरण-

अस्वस्थ विचार- "हम घर पर ऊबि गेल छी।"

स्वस्थ विचार- "ई हमर घर अछि, हम एतय सुरक्षित छी।"

कल्पना करू जे जौं अहाँक कोनो प्रिय व्यक्ति तनाव मे छथि तऽ अहाँ हुनका केहन प्रतिक्रिया देब? स्वयंक संग सेहो वएह समान करुणाक प्रयोग करू। अपना आपकेँ दया, शक्ति, ज्ञान आ गर्मजोशीक संग जवाब दी।

भावनात्मक आवश्यकताकेँ पूरा करयमे अभिभावकक भूमिका-

जखन माता-पिता घरकेँ सुरक्षित, स्वस्थ, आरामदायक स्थानक उदाहरण बनाबैत छथि

तऽ बच्चो घरमे स्वयंक खुशि खोजिये लैत छथि।

1. अस्वस्थ विचारकें स्वस्थ विचारमे बदलयमे बच्चा (स्वयंकें सेहो) सहायता करैथ। प्रारंभिक परिणाम आमतौर पर धीमा होइत अछि, मुदा ई अवचेतनमे स्वस्थ दृष्टिकोणकें विकसित करैत अछि। विकासक लेल मजबूत नींव दैत अछि। बच्चामे एकता, सुरक्षा, अपनापन, करुणा पैदा करैत अछि।

2. घरसँ काम करय/कक्षामे भाग लेबाक संग-संग घरक आन काजक प्रबंधन करनाय, माता-पिता आ बच्चा दूनूक लेल मुश्किल भऽ सकैत अछि। कठिनाइ पर चर्चा करयसँ बच्चाकें अपन क्षितिजकें व्यापक बनाबयमे मदति मिलत। बच्चाकें बाजयकें अनुमति दी, भले अहाँकें ई अनावश्यक लागय।

3. अनुशासित बनु। अनुशासनकें आत्मसात करबा लेल बच्चकें प्रेरित करू। अनुशासित भेनाय विलंबसँ बचाबैत अछि जे समयक आभावक तनावकें खत्म करैत अछि। ई जीवनकें संतुलित करबाक अति महत्वपूर्ण कुंजी अछि अओर ई जीवनक हर पहलूकें स्वस्थ रूपसँ स्वीकार करबामे सेहो सहायक होइत अछि।

ऑनलाइन कक्षा

ऑनलाइन कक्षा मे भाग लेबाक व्यावहारिक मुद्दा बेहद जरूरी होइत अछि, जेना- घरमे एक्केटा लैपटॉप/कंप्यूटर/स्मार्टफोनक भेनाय, एक्के समय पर घरक दू सदस्यक मीटिंग भेनाय, इंटरनेटक कनेक्शनक स्पीड धीमा भेनाय, बीच-बीचमे इंटरनेट डिस्कनेक्ट भऽ जेनाय, बाधित बिजली, दस्तावेज तैयार करनाय, प्रिंटरक नञि भेनाय आदि-आदि। समान पहलु तनावकें बढ़ा सकैत अछि, घबरा जेबाक बजाय चर्चा करय आ योजना बनाबय सँ चीजकें संभालयमे मदति मिलत।

1. बच्चकें योजना बनाबय, रणनीति बनाबय आ अपन प्राथमिकता बताब दीयौ। हुनक प्राथमिकताकें समझयमे हुनक मदति करू, हुनक कार्यकें प्रोत्साहित करबाक लेल स्वस्थ सीमा बनाऊ।

2. स्क्रीन समय आ आन व्यावहारिक मुद्दामे वृद्धि भावनात्मक वा शारीरिक तनावकें बढ़ा सकैत अछि। पानि पीबा लेल ब्रेक लिय, नीक रोशनीवाला जगहक इस्तेमाल करू, स्वस्थ कंप्यूटर-प्रथाक पालन करू, नियमित रूपसँ स्ट्रेचिंग व्यायाम करू अओर प्रत्येक राति दस मिनट ध्यानक अभ्यास करयसँ अनजानमे आओल अवांछित तनावसँ छुटकारा पेबामे मदति मिलैत अछि।

3. 20/20/20 नियम आंखक तनावकें कम करयमे मदति करैत अछि। प्रत्येक 20 मिनटक स्क्रीन-टाइमक बाद, 20 सेकंडक लेल, 20 फीट दूर कोनो वस्तुकें देखु।



4. व्यस्ततम दिनोमे किछु समय अपन परिवारक संग मजे करय लेल सुनिश्चित करू। ई मानसिक स्वास्थ्यक पोषण करैत अछि।

5. प्रत्येक दिन शारीरिक गतिविधि आ सूर्यक प्रकाशक संपर्कमे रहनाय सुनिश्चित करू। ई शरीरमे स्वस्थ हार्मोनमे सुधार करैत अछि, संगे सुस्ती, घबराहट, उदासी आदिकें कम करैत अछि आ खुशीक ऊर्जाकें बढ़ाबैत अछि।

मानव विकासकें पहिनहिंयो महामारी चुनौती देलक, तैयो हर बेर मानव नञि केवल एहिसँ मजबूतीसँ बाहर आयल, वरन् ओ एकटा पैघ छलांग लगौलक। चाहे ओ हमर चिकित्सा व्यवस्था होए वा स्वयंक संग समाजक लेल हमर संवेदनशीलता आ जिम्मेदारी होए। अतीत मे महामारीक सभ अनुभव व्यक्ति आ समाजकें परिपक्व बनेलक। कतेको मापदंड लेल विचारशील सेहो बनेलक। सवाल सिर्फ ई अछि जे हमर संकल्प कोन ध्येयसँ प्रेरित अछि। संकल्प जौं जीवन कें बेहतर करनाय अछि तऽ उपायो जीवनकें बेहतर करबाक मिलत। सकारात्मक भावेक वृद्धि होएत, अन्यथा अपन खिन्नता आ हताशामे स्वयं उद्वेलित भऽकऽ मनोवैज्ञानिक कठिनाईकें बढ़ायब। सचेत रहय आ सकारात्मक प्रयाससँ अप्रत्याशित मोड़मे सुखद सुधार हेबाक संभावना बढ़ि जाइत अछि। अपन गतिविधि पर योजना बनाऊ आ ओहि पर अमल करू। वर्तमान समयमे सावधानी आवश्यक अछि, एकरा अपन हर योजनामे शामिल करी।

लेखिका वरिष्ठ स्तम्भकार, मनोवैज्ञानिक, जीवन प्रशिक्षिका अओर कवयित्री छथि।

अनुवाद – मुकेश दत्त

गृहस्थाश्रम



❑ डॉ. जितेन्द्र लाल दास

आइ एहन मार्मिक घटना सभ घटित भऽ रहल अछि जे देखि-सुनि हृदय विदीर्ण भऽ जाईछ। किछु दिन पूर्व पढ़ल जे एकटा उच्च पदस्थ पदाधिकारी अपन दूनू बेटाकेँ खूब पढ़ा-लिखा विदेश-पठोलैन्ह। दूनू बालक विदेश मे रहि पूर्णतः विदेशी भऽ गेलाह। अपन घर-द्वार आ वृद्ध माता-पिताकेँ बिसरि गेलाह। अपन जीवन संगिनी पसिन कऽ विवाहोपरान्त भारतीय संस्कृतिकेँ तिलाञ्जलि दऽ देलैन्ह। वृद्ध माता-पिता किछु दिन विदेश मे रहि वापस आबि गेलाह। लगभग नब्बे वयसक दूनू बूढ़ा-बूढ़ी एकसर जीवन बितवैत रहलाह। अचानक बूढ़ी लकवा ग्रस्त भऽ बौक भऽ गेलीह चलबा-फिरबासँ पुर्णतः लाचार। बूढ़ अपने हुनक सब सेवा सुश्रुषा करैत रहलाह। एक दिन बूढ़ा रातिमे सूतलाह तऽ सूतले रहि गेलाह। बूढ़ीक परिचर्या नञि भेलैन्ह तऽ पलंग पर बूढ़ाकेँ निःशब्द देखि बुझि गेलीह। अपनाकेँ घिसियाबैत चारि घंटा मे फोन टेबुल लग पहुँचि फोन पड़ोसीकेँ लगा स्वयं सदा-सदाक लेल मौन भऽ गेलीह। पड़ोसी घंटा मे कोनो हलचल नञि देखि स्वजन आदिके बजा केबाड़ तोड़लक तऽ सब किछु समाप्त छल। सूचनाक बादो पुत्र नदारद। अंततः क्रिया कर्मक औपचारिकता पड़ोसी सभ केलैन्ह। आजुक समाचार पत्र मे पढ़ल जे फुटपाथ पर रहनिहार वृद्धक प्राणंत भेल तऽ सेवारत पुलिसकर्मी हुनका कंधा देलैन्ह आ इंसपेक्टर महोदय मुखाग्नि!

धियापूताकेँ नीक-सँ-नीक बनेबाक हेतु जे अभिभावक अपन वर्तमान सुखक त्यागि बच्चाक भविष्य हेतु अपन सर्वस्व अर्पित कऽ दैत छथि हुनक अंत कालिक दुर्दशा अकल्पनीय। बेटा-बेटी सुयोग्य भऽ नीक नौकरी पाबि शहरमे रहैत छथि से हर्षक विषय, मुदा अपन सभ्यता, संस्कृति, संस्कारकेँ पूर्णरूपेण धकिया दैत छथि। बिनु अभिभावक केर इच्छासँ अपन निर्णय लऽ रहलाह अछि। स्वेच्छासँ विवाह जाहिमे अधिकांशतः विजातीय बुझू! गाम-घरक अस्तित्वकेँ नकारि शहर सर्वस्व। अखन हालेमे सुनल जे एकल पुत्री जिनका लेल हुनक माता-पिता पूर्णरूपेण समर्पित छलथिन्ह। नीक शिक्षा, नौकरी पाबि अपन माए-बाबूक पसंद कएल लड़काक विरूद्ध स्वेच्छा सँ विवाह कएलन्हि। पुत्रवती भेलीह आ किछु दिन बाद छुट्टम-छुट्टा। आइ इभिशप्त जीनगी बिता रहल छथि। बेटीक हाल देखि माता-पिता दुनियासँ विदा लऽ लेलाह।

पहिने दहेजक कुप्रथा छल, शिक्षाक प्रसारसँ ओहिमे सुधार भेल। लड़की सेवारत भऽ अपन पएर पर ठाढ़ भऽ जाइत छथि तऽ वर खोजबामे ओतेक परेशानी नञि। निम्न मध्यमवर्गीय परिवारकेँ दहेज अखनो पररेशान कऽ रहल छैन्ह! अपन पसिन्नक विवाह कयला उपरान्तो कतेकोक जीवन सुखद नञि रहि पाबैत छैन्ह। अलगाव, तलाक अव्यवस्थित जीवन रोजमर्राक क्रियाकलाप भऽ गेल अछि।



संचारक सब माध्यम पर प्रायः प्रत्येक दिन एहन समाचार देखबामे आबैत अछि।

अपन मैथिल समाज जकर कीर्तिपताका सर्वत्र फहराईत अछि ओ अपन संस्कारकेँ तजने जा रहल छथि। गाम-घरक नामसँ वितृष्णा। कुल, परिवार, समाजसँ तटस्थता। वृद्धावस्थामे माता-पिताकेँ अनाथालय, पुअरहोममे छोड़बाक क्रम, परिवारवाद पर स्त्रीवाद तेहन हावी भेल जा रहल अछि जे परिवारक भाषामे पति-पत्नी आ अविवाहित छिया-पूता धरि सिमटल जा रहल अछि। ई सब देखैत हमर बुझना जाइत अछि जे 'गृहस्थाश्रम'धर्म आब प्रसांगिक भऽ रहल अछि।

गृहस्थाश्रमकेँ नर्कक द्वार आ पतनक कारण मानल जाइत अछि। परञ्च मनुष्यक पतन केर कारण गृहस्थ जीवन नञि अपितु गृहस्थाश्रमक निर्धारित अनुशंसामे भटकाव अछि। लोभ, मोह, व्यसन आदि दुष्प्रवृति सभकेँ प्रभावित केने जा रहल अदि। चाहे ओ गृहस्थ होथि वा विरक्त! जीवन मात्र वासनापूर्तिक केन्द्र नञि अपितु चारू आश्रमक आधार आ केन्द्र बिन्दु अछि जेना समस्त जीव-जन्तु अपन जीवन लेल वायु पर आश्रित रहैत अछि।

ऋषिगण गृहस्थाश्रमकेँ सर्वापरि मानि एकर गुणगान केने छथि। अर्थात् जेना ओ

सब संयमित आ मर्यादित जीवन यापन करैत परमसुख आ मोक्षक मार्ग प्रशस्त केलाह तहिना गृहस्थाश्रमक समस्त दायित्वक निर्वहन करैत अनुशासित रूपेँ सुखक उपभोग करी। छियापूताकेँ खूब नीक-सँ-नीक शिक्षा दऽ एहि भैतिकवादी युगक स्पर्धामे अग्रणी बनाबी मुदा अपन संस्कारसँ समझौता कथमपि नहि। हुनका शिक्षितक संग संस्कारी अवश्य बनाबी।

जतय पवित्रता ओतय श्रद्धा, जतय श्रद्धा ओतय विश्वास आ जतय विश्वास ओतहिये प्रेमक उदय होतय अछि। एहिसँ एक दोसराकेँ सुख पहुँचेबाक इच्छा जागृत होइत अछि। एहन पवित्र वातारवरण मे भोजन, वस्त्र, आवास पर ध्यान नहि जाइत अछि, एक दोसराकेँ सुख पहुँचेबाक भावना होइत अछि।

प्यासक कखनो अंत नहि होइत अछि। जतबे भोग लिप्सा ओतबे ओकर वासना। ध्यानतव्य जे गृहस्थाश्रम भक्तिमे बाधक नञि साधक होइत अछि। वस्तुतः भक्ति मे बाधक होइत अछि लोभ, मोह आ व्यसन; जकरा पर विजश्री हेतु ओकरा साधब आवश्यक।

गृहस्थाश्रम मात्र कामोपभोगक साधन नञि अपितु मानवता केर विकासक सरलतम साधन अछि। एकर उद्देश्य संसाररूपी सागरसँ पार उतारब होइत अछि। एहि लेल पुरुषकेँ 'नाविक' आ स्त्रीकेँ 'नाव' केर भूमिका निवाहब आवश्यक। जाहिसँ दूनूक सहयोगसँ पारिवारिक दायित्वरूपी नैया सुचारू रूपसँ चलैत रहय। परस्पर सहयोग, विश्वास, विचार मे एकता आ पवित्रता, कर्त्तव्यपालन मे तत्परता, एक-दोसरक सुख पहुँचेबक लिप्सा आावश्यक अछि। जाहिसँ जीवनमे परमानन्द संग परमात्माक प्राप्ति होए। अपन सभ्यता, संस्कृति, संस्कार अक्षुण्ण रहि सकय। हम सब आनन्दित आ सुखी रही। धियापूताकेँ अपन गामघर समाज, देशसँ जड़ल रहबाक हेतु शिक्षित करैत रही।

लेखक– वरिष्ठ स्तम्भकार, सेवानिवृत्त पदाधिकारी, बिहार सरकार अओर नवचेतना परिषद, पटनाक अध्यक्ष छथि।

बीहनि कथाक दशा-दिशा



❑ *मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'*

पौराणिक उत्सें(स्रोत)सँ बहरएल कथाक, संशोधित, संबर्द्धित आ परिष्कृत आधुनिक संस्करण थिक **'बीहनि कथा'**। जकरा स्पष्ट कथ्य आ गसल शिल्पमे न्यूनतम बीस आ अधिकतम डेढ़ सए शब्द धरि लिखबाक प्रावधान अछि। इ आन कोनो विधाक विधान्तरण, नामान्तरण वा कायान्तरण नञि, संपुष्ट कथाक एकटा स्वतंत्र विधा थिक।

वर्तमान स्थितिः- गद्य लेखन उपन्यास (नोवेल)सँ शुरू भऽ लघुकथा (शॉर्ट स्टोरी) होइत बीहनि कथा (सीड स्टोरी) धरि पहुँचल। वर्तमान मैथिली कथा साहित्य मध्य पूर्ण प्रासंगिक, सर्व परिचित आ लोकप्रिय विधा भऽ स्थापित भेल।

लघुकथा छल तऽ बीहनि कथाक खगता?

समयान्तरे, विकासक क्रममे खगताक जन्म होइत अछि। से समयावधिक अनुसारे प्रासंगिक होइत अछि आ तखने ओकर पूर्ति सेहो आवश्यक। जेना जहन चलनसारिमे समाद लेल चिट्ठी छल तऽ तार (टेलिग्राम) किएक आयल? चिट्ठीमे लोक अपन मोनक बात खुलिकेँ लिखैत छलाह। कोनो बन्हन आ नियम/प्रावधानसँ मुक्त। मुदा तार? तारमे अपन बातक निचोड़ किछु सिमित शब्दमे कहि पाठक/पावककेँ पूर्णतः क्रियाशील बना दैत छल। तऽ लघुकथा चिट्ठी भेल, जकरा लिखबाक कोनो सिमाना/विधान नै अओर बीहनि कथाकेँ तार बुझू जे अल्प शब्दक स्पष्ट कथ्य आ गसल शिल्पसँ संपुष्ट कथाक खगतापूर्तिक निश्शन माध्यम भेल।

अन्य पक्ष देखू :-

भाषण, कोनो बात बजैत चलू, कोनो लगाम नै! मुदा कोनो निश्चित विषय-वस्तु पर विद्वतापूर्ण विचार कहाइत अछि **बीज भाषण**।

एहिना संस्कृतमे शुद्धिकरण वा सशक्तिकरण लेल रचल गेल मंत्र (श्लोक नै) आ तकरो सक्षम वा प्रभावी बनेबाक खगतापूर्तिक लेल आयल बीज मंत्र। जेना बीहनि कथाक कथ्यकेँ (शब्द नै) विस्तार दैत शॉर्ट स्टोरीसँ नॉवेल धरि रचि सकय छी, तहिना एकटा बीजमंत्र (ऊँ... ह्रीं... क्लीं...)सँ अनेको मंत्र जन्म लेने अछि। ओहिना कतेको रास कथा रहितो ओकर सशक्त आ परिष्कृत रूपमे उपस्थित अछि बीहनि कथा।

वैश्विक स्थिति :-

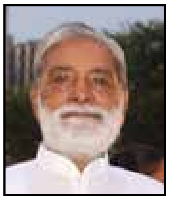
जहन हमसभ विश्व विधाकेँ अंगिकार कऽ अंगेजने छी तहन अपन एकमात्र विधा 'बीहनि कथा'केँ विश्व भरिमे किएक नञि पसारि सकै छी? मुदा ताहि लेल पहिने बराबरी तऽ कऽ ली। विश्व कथा साहित्य उपन्यास सँ चलि- वॉन्डर स्टोरीज, हण्ड्रेड वर्ड स्टोरीज, फिफ्टी फाइव वर्ड स्टोरीज, वन लाइनर होइत सिक्स वर्ड स्टोरीज पर अंटकि प्रकाशन आ विमर्श मे लागल अछि आ हमसभ एकैसम सदीमे आइयो छी बीहनि कथाकेँ बढ़बाक-रोकबाक घोंघाउज मे फंसल!

बीहनि कथा मैथिली कथा साहित्यक चर्चित, परिचित आ लोकप्रिय विधाक रूपेँ भलहिं ख्यात भेल हुअए मुदा वैश्विक परतर मे पांतिसँ बाहर, सेहो अदौ कालसँ! विश्व साहित्यक मुकाबले भारतीय साहित्य बड्ड पछुएल आ भारतीय साहित्यक मध्य मैथिली साहित्य मात्र पछुएलेटा नै वरन् विकासक क्रम मे क्रमसँ बाहर हेराएल-भुतिएल! हँ, मौखिक आ फेसबुक पर वैश्विक सँ ऊपर।

बीहनि कथा भलहिं मैथिली कथा साहित्यक संशोधित, परिमार्जित आ परिष्कृत आधुनिक संस्करण भऽ उभरल मुदा आन भाषाक समकक्ष विधासँ बड्ड पछुएल सन। जेना बीससँ एकसए पचास शब्दमे अनबाक कारण लेखककेँ लघुकथाक मानसिकतासँ उबारि मानस पटल पर बीहनि कथाकेँ समाहित करबाक उद्देश्य छल। एकरामे एखनहु कतेको दोष अछि जकरा अओर परिष्करणक खगता अछि, विश्व साहित्यक धारा मे अनबाक लेल। समवेत प्रयास चलि रहल अछि, सभहक सहयोग सादर अपेक्षित।

लेखक– वरिष्ठ स्तम्भकार अओर बीहनि कथाक ध्वजवाहक छथि।

मधुर कामना



❑ अर्जुन नारायण चौधरी

हे प्रभु!
चरण धूलि दीअ शीश लगा ली,
अपन जीवनकेँ धन्य बना ली।
कण-कण व्यापी अहाँकेँ हम
नश्वर दुनियामे लक्ष्य बना ली।
त्याग-तपस्या प्रभु चिंतनसँ,
पशुवत जीवन दिव्य बना ली।
पीड़ित प्राणीक सेवासँ
प्रभु-प्रेमक अलख जगा ली।
वर्ण वा वर्ग विभेदमे हमर धर्मदृष्टि
आ ब्रह्मबोध सदिखन अविचल हो।
निशि-दिन प्रभु-चिंतन भावदृष्टिसँ
अभिनव मानव समाज निर्मल हो।
चरण धूलि दीअ शीश लगा ली,
अपन जीवनकेँ धन्य बना ली।
कण-कण व्यापी अहाँकेँ हम
नश्वर दुनियामे लक्ष्य बना ली।



शिव संदेश



❑ डॉ प्रमोद झा 'गोकुल'

विदित सर्व शिव छथि
रुद्र रूप पशुपतिमे,
भव भवानी एक जैखन
कृपा दृष्टि वर्षणमे।
रत जगत मंगलमे
अनवरत रहय छथि जे,
अर्धनारिश्वर भए
छथि विख्यात जगमे।
दही दूध घृत मधु संग
शक्कर शुद्ध जल स्नायी,
जनावथि जगकेँ सदति
सुधा वसुधाक ई स्थायी।
जल गंग निर्मल धार
जटा जूट पथ प्रवाहित,
भू जीवन मातृस्वरूपा
सएह भेलि हो प्रदूषित।
बहु पुष्प धथुर आक
भंग संग अंग बेलपात,
जनाबथि सर्व वनस्पति
मिलि पुष्ट करय गात।
स्वच्छता मे शिवक वास
गन्दगीमे रोगक निवास,
जल थल नभमे ई खास
निर्मलताक होए निवास।
शिव उपासक जौँ अहाँ
खाउ शपथ सब ई महाँ,
देखब हम गन्दगी जहाँ
करब भस्म जहाँ तहाँ।
निर्मल नभ थल अमल
जल वायु स्वच्छ हो धवल,
शिव सन्देश ई पसरल
बनत स्वर्ग हमर भूतल।

सपनाक गाम



❑ बिनीता मल्लिक

एक गाम होए हमर सपनाकेँ
जतय बसेरा सब अपनहिंकेँ,
नञि कोनो रगड़ा नञि कोनो झगड़ा,
नञि बाँचय जगह रकन्नाकेँ।
एक गाम होए हमर सपनाकेँ।।

जतय उन्मुक्त हम विचरि सकी,
सुकाज मन सँ करि सकी,
कृत्य दृश्य होए बिनु झपनाकेँ।
एक गाम होए हमर सपनाकेँ।।

सुनी खटमिठ चहटगर बोल,
मुदा बाजथि सब हृदय तोल,
नञि लागय दोष रसनाकेँ।
एक गाम होए हमर सपनाकेँ।।

सबपर बनल रहय विश्वास,
धोखा दय नञि टूटय आस,
भेटय मोजर सब मनकमनाकेँ।
एक गाम होए हमर सपनाकेँ।।

घृणा, दारिद्र, क्रूरता समाप्त,
शांति,सौहार्दक प्रचुरताव्याप्त,
दी बढ़ाबा एहि प्रार्थनाकेँ।
एक गाम होए हमर सपनाकेँ।।

किछो नै करू



❑ डॉ किशन कारीगर

अहाँकेँ कोन चिंता?
तै हरदम चुप्पे रहू,
अहाँ सब चिंतेटा करू
समस्याक नेदानमे किछो नै करू।।

जोगारी पुरूस्कारी बनू,
हरदम लॉबिक पछोड़ धेने रहू,
मैथिलीमे एहिना होइत एलै,
विरोध भेला पर लोककेँ ठकैत रहु।।

मानकीकरणसँ मैथिलीकेँ खंडित करू
अहिंटा काबिल ज्ञानी
अनकर लेखनीकेँ कोनो मोजर नै दियौ
आयोजनटामे पाग पहिर बमकल फिरू।।

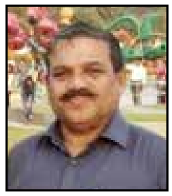
मैथिलीमे खूम वर्ग भेद भैइए रहलै
हमरो अहाँकेँ हइ बूझल,
विरोधक कोन बेगरता, कँ करत राड़?
कारीगरकेँ कहबाक भावे बुझू।।

आन जाति ने अकादमीमे सोनहिया जाए
ओकरो कहुँ नाम नै भऽ जाए,
पिछलगुआ बना ओकरा भरमेने रहू
अपना सुआरथे निब्बदी मारने चूप्पे रहू।।

पिछलगुआ किएक बिरोध करत
जी हजुरीक फिराकमे रहत,
अहुँ तऽ सएह चाहि जे ओ हो-हो करै
आ मैथिली बपौतीमे हमहिंटा रही।।

मिथिला मैथिलीक आयोजन करू
टाइटल जातिक षडयंत्र अहिंक रचल,
किशन बड्ड अलूइर, ओहेन की प्रभावी
लिखत?
सब मंचदौग्गा साहित्यकार बनल रहू।।

बेटी की विदाई



❑ विजय कुमार लाल

दूनू कुलक बेटी

दूनू कुलक आशा,

कोनो लड़का सँ कम छी पढ़ल

अछि एतबय प्रत्याशा।

आब की बेटी

की बेटासँ कम होइत छैक,

की विागरी करबा लेल

गाड़ी भेजल जायत छैक।

हमेशा वाट्स-अप पर उपलब्ध

बेटा जकाँ बेटी रहैत छैक।

तँ बेटी सासुर नञि, जाऊ अपन घर,

नञि कहियो होयब अहाँ बेघर।

इएह छैक संसारक रीति

बढ़त दूनू माए बाप सँ प्रीति।

सभ दिन रही अहिना अहिवात,

लियऽ आशीर्वाद हुअए सुन्दर प्रात।

दम्पति युगल रही एक हृदय दुइ देह,

जखन मोन हुअए उपस्थित होयब सदेह।

बेटी जन्म सँ रहलौंह सभ दिन संग,

अखनो छी मोबाइल पर दुई देह संग।

केवल नौकरीक स्थानान्तरण जकाँ,

जीवन बिताऊ उत्कृष्ट, दाम्पत्य संग।

आउ करी मोनक बात



❑ देवानंद मिश्र

देश मे पसरल सन्नाटा छै
आउ करी हम मोनक बात।।

बंद पडल सब कल-कारखाना
अर्थव्यवस्थाक खस्ताहाल,
महंगाई छै गगन छू रहल
आउ करी हम मोनक बात।।

शिक्षाक स्तर खसैत प्रतिदिन
स्वास्थ्य व्यवस्था स्वयं बीमार,
जनता केर आवाज दबल छै
आउ करी हम मोनक बात।।

जाति-धर्म मे ओझरायल छै
पढ़लो-लिखल केर समाज,
मंदिर-मस्जिद मुद्दा बनलै
आउ करी हम मोनक बात।

दहो दिश बेरोजगारी छै
लूट-डकैती भ्रष्टाचार,
त्रहि-त्रहि कऽ रहलै जनता
आउ करी हम मोनक बात।।

राजनीति बस एक रोजगार
फरै-फुलाइ छै दिन आ राति,
नेताकेँ तऽ पौ-बारह छै
आउ करी हम मोनक बात।।

देशक कृषक छै कलोहाल मे
संसद अपने ताल-बेताल,
एक-दोसराकेँ बात नञि बूझै
आउ करी हम मोनक बात।।

दहेज प्रथा



❑ निशा किरण

सुनु यौ बाबू भैया लोकनि,
सुनि लिय सऽर समाज यौ।
कहिया धरि धधकैत रहत,
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

पिताक छलीह राजकुमारी,
मायक छलीह बड़ दुलरी,
बेटी खुशीक खातिर पिता किछो करताह
अपना बेटी पर कोनो आंच नञि आबय
अनका बेटीकेँ किएक झोंकि देलौंह आंचमे यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

गाम-घर सब छोड़ि बिसरलहुँ,
अपन सर-समाज सब छोड़लहुँ।
बाबा-दादाक नाम छोड़लहुँ
अपन सभटा धरोहर छोड़लहुँ।
अखन धरि दहेज प्रथा किएक नञि छोड़लहुँ यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

गाम छोडि शहर अयलहुँ,
नाम, इज्जत, बैंक बैलेंस बनेलहुँ।
सुख-सुविधाक भरपुर साधन बनेलहुँ
ठाठ सँ सबकियो जिनगी कटलहुँ।
तखनो दहेजक मृगतृष्णा नञि छोड़लहुँ यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

हर युग मे बेटी दैत रहलीह अग्नि परीक्षा,
चाहे सती हो या चाहे सीता।
कलयुगक राक्षस लेलक बेटीक जान
कतेक माएक कोखि भेल सुन्न
कतेक बच्चा बनल अनाथ
आबो रोक लगाऊ मचि रहल चहुँदिश हाहाकार यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

सभ कहै छी बेटा-बेटी एक्के छी,
युग परिवर्तन भेल दूनू एक सामान छी।
अधिकार दूनूक समान अछि
तैयो दूनू मे फर्क बड़ अछि
तैयो तऽ बेटीये झुलसैत अछि
एहिना बेटी जरैत रहतीह, कोना बाँचत सृष्टि यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

नियम-कानून एहन बनाऊ,
जाहिसँ समाजक रक्षा होए।
स्वस्थ, सामर्थ समाज होए
दहेज मुक्त समाज आ देश होए
तखने बचत घर घरक बेटी
बेटीक करुणा सुनि बचा लिय संसार यौ।
काहिया धरि धधकैत रहत
दहेज प्रथाक आगि यौ।।

मोनक मंगल



❑ जया दास

शनि-रवि सब सोचमे बीतल
आयल सोमक बारी
दिन बाँचल छल पूरा मुदा
वर्क फ्रोम होम केलक
फेरसँ मोनकेँ भारी
एहिना बहिना बीत गेल
सोमवला माछ-माउसक तैयारी
आयल एहन दिन, जे कहलहुँ हिनका
आइ किछ नञि भऽ सकत
यौ हमर भोला भंडारी
मोनमे किछ आ चौकामे किछसँ
मनेलहुँ कछ मंगलवारी
भारत-चीनक रगड़ासँ बड़का
समस्या अछि मेन्यूमे तरकारी
बुध या शुक्र?
एतय सवाल!
बस एक्केटा मुद्दा!
पूछता आ उठेता सभहक घरक मुरारी!

धिया सिया सन सुकुमारि



❑ मनोरमा झा

हमरासँ चहकय आंगन बारि,
ब्रह्मा केर अनुपम सृष्टि नारि।
कतबो विपत्ति नहि मानी हारि,
हम धिया सिया सन सुकुमारि।।

हम छी शीतल पवन बिहाड़ि,
नदी झरना कुहुक कचनारि।
गमकय दूनू कुलक फुलवारि
हम धिया सिया सन सुकुमारि।।

हमरे पाबि गुंजय किलकारि,
बाँटी प्रेम हम आँचर पसारि।
संहारक क्षमता प्रलयंकारि,
हम धिया सिया सन सुकुमारि।।

सहलौंह आब सहब नहि गारि,
'रमा' केर कहब लिअ अवधारि।
करियौ अस्तित्व हमर स्वीकारि,
हम धिया सिया सन सुकुमारि ।।

आउ चलू गाम पर



❑ ओम जी

छहरक पार घुमब, कमलाक धार देखब,
टूटा पाकैर होयत पोखैरक महार देखब।
जेबय हम कनुवाहि कात पर,
आउ चलू गाम पर।।

मंदिरमे किर्तन करब, सिरागुमे गोर लागब,
तुलसीमे जल दैत अंगना मे भेटब।
ध्यान लगेने भगवती पर,
आउ चलू गाम पर।।

अंगना सब उपटल, बाड़ी सब निपटल,
प्रेम खाली बोलीयेटामे अछि सिमटल।
सालोमे एक बेर आबियौ तऽ ठाम पर,
आउ चलू गाम पर।।

दुर्गापूजाक अपन भव्य आयोजन,
नाटकक तखने होइत अछि मंचन।
आबयकें अछि सबसँ नीक प्रयोजन,
किछ दिन निकालू गामक नाम पर,
आउ चलू गाम पर।

व्हाट्सएप, जूम सबगोटेकें जोड़लक,
लॉकडाउनमे चिन्हा परिचय करेलक।
खगता अछि बस आउ कोनो काज पर,
आउ चलू गाम पर।

किछु याद करू



❑ मीरा कर्ण

अहुँ सब किछु याद करू,
अहुँ सब किछु याद करू।
याद अबैत अछि बारिक पटुआ
तरूआ तिलोकरक बाते छोड़ू,
कतय गेल मडुआ रोटी संगहिं
अँचारक स्वाद धरू।
अहुँ सब किछु याद करू।।

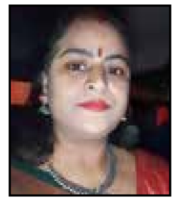
घर दलानक शान बेस छल,
आमक गाछी देखि बनैत छल।
आब देखि सेहंता होइत अछि
छुई पकड़ि जा कऽ फेरि तोड़ू।
अहुँ सब किछु याद करू।।

देश-विदेश चाहे रहि रहल छी,
छिया-पुताक संग बसैत छी।
मिथिलाक किछु बात बतबियौन्ह
मन विचार सँ एक रहू।
अहुँ सब किछु याद करू।।

जे जतय छथि छठि करै छथि,
गामक विधि सब याद रखै छथि।
पर धर्मक जन भेल आकर्षित
अपन संस्कृतिक छाप छोड़ू।
अहुँ सब किछु याद करू।।

परदेश गाम नञि अंतर करियौ,
विचार-विशर्मक रंग सब मिलि भरियौ।
ऊँच नीच नञि आनब मन मे
मिथिलावासी सब एक रहू।
अहुँ सब किछु याद करू।।

नीलकंठ



❑ नूपुर 'नवीन'

कंठ ग्रीवामे निगलल नील
नीर ओ, नीलकंठ कहेला,
हरिकें दुःख दुखित हरमा
बिष पीबि ओ, बिसधरि कहेला।
लचकत बघछाल जेना स्वेत बाघंबर
पहिरि नभ अंबर, बसहा पीठे चलला।।

लेपि-लेपि भसम रमल तमल
रून्द्रहार पहिरि ओ,
अजब-गजब रूप सजेला।
आमहि मंजरि जेना कोयली बसे
तहिना ओ, शशि शीश सजेला।
बहल चलति गंग जलधारा, बान्हि जिनका
जटा ओ, गंगेश कहेला।।

गौर अंग रंग करपूर सन
जग ओ, कर्पूर गौरं कहेला।
लै पिनाक हस्त, करल त्रिपुर कें
ध्वस्त ओ, त्रिपुरारी कहेला।
शिव बड्ड ज्ञानी औढर दानी
दोश पाप संताप सभहक
हरिकें ओ, महेश कहेला।।

फैसला



❑ नेहा रानी

किशोर बाबू T.V. खोललैथ तऽ सब चैनल पर अपन बेटी रानीक नामक घोषणा राष्ट्रपति पुरस्कारक लेल देखैत खुब गर्वक अनुभूति भेलैन्ह। ततेक नै फोन आबय लागलैन्हे जे किशोर बाबू आ मृदुलाक आँखि नोरसँ भरि गेल। शुभकमानाक वर्षा होमय लागल। आइ किशोर बाबुकेँ अपन फैसला पर खुब गर्व भेलैन्हे। जौं लोक-लाज आ समाजक डरसँ रानीकेँ आगाँ पढ़यसँ रोकने रहितैथ तऽ कि रानी आइ राष्ट्रपति पुरस्कारसँ सम्मानित होयतीह? शायद नञि! जौं ओ अपन पत्नीक बात सुनने रहितैथ तऽ शायद रानी कोनो घरक चुल्हा फुकैत रहितैथ।

किशोर बाबुक पहचान संभ्रात परिवारक रूपेँ छैन्ह तऽ ओकर हकदार हुनक एकमात्र संतान रानी छथि। समाजसँ भेटल इज्जत, शोहरत, मान-सम्मानक श्रेय ओ अपन बेटीकेँ दैत छथि। “यै सुनैत छी” किशोर बाबु अपन पत्नीकेँ आवाज देलैन्हे। मृदुला बेटीसँ फोन पर बात करैत अपन स्नेहक बरखा कऽ रहल छलीह। दूनू प्राणी अपन कल्कटर बेटीकेँ आँजुर भरि-भरि आर्शीवाद दैत एहिना अपन समाजक नाम रौशन करय लेल कहि रहल छलाह। फोन राखिते किशोर बाबुक आँखिक सोझा पाँच साल पहिलुक बात चलचित्र जेना उभरि गेलैन्हे—

पसीनासँ तर-बतर किशोर बाबु घरमे पएर राखबे केलैन्ह, मुखमंडल पर चिन्ताक लकीर स्पष्ट छलकैत छल कि पत्नी पुछलथिन्हे, “कि भेल, आइयो कतौ दाँव नै सुतरल?”

पत्नीक बात सुनि किशोर बाबु कनि खिसिया कऽ बाजलैथ, “कनि दम तऽ लेबय दिय। कनि बेना डोलाउ आ एक लौटा जल लाउ।” मृदुला बुझि गेलैथ जे फेर कोनो वरक बाप दिशसँ आश्वासन नै भेटलैन्हे। ओ निढ़ाल भऽ परल छलाह। माए-बापक बात सुनि रानी गहन सोचमे डुबि गेलीह जे बेटी भऽ कऽ जन्म लेनाय अभिशाप अछि? बेटा आ बेटीमे अन्तर किएक? रानी जहियासँ स्नातकक डिग्री लऽ घरमे बैसलीह तहियेसँ अपन पिताकेँ गामे-गाम फोटो आ परिचय लऽ कऽ वर ओतय बौआईत देखलैथ। मुदा कतौसँ कोनो संतोषजनक उत्तर नहि पाबि ओ निराश भऽ गेल छलाह। एहि क्रममे रानी स्नातकोत्तरक डिग्री प्राप्त केलैथ। सामान्य शक्ल-सूरतक रानी पर सरस्वतीक बेसी कृपा छलैन्ह, मुदा बढ़ैत वयषक कारणेँ टोल-पड़ोस आ समाज खिस्सा करय लागल। माए सेहो मंदिरक चौखट पार कऽ सब देवताकेँ गोहराबयमे लागि गेलीह, ज्योतिष सबसँ देखौलैन्ह मुदा परिणाम ढाकक तीन पात।



किशोर बाबुक आर्थिक स्थिति सेहो किछु ठीक नै छल। कथा-कुटमैतिमे सेहो खर्च होइत छल। एक दिन रानी साहस कऽ कऽ पिता सँ कहलैन्ह, “जे पाई अहाँ हमर विवाह लेल ओरियौने छी ओहिसँ हम आगाँ पढ़य चाहैत छी।” ओ अबाक भऽ अपन बेटीकेँ निहारय लगलाह। माए कपार पीटय लगलीह, समाज आ पिताक स्थिति अओर परिवारक कर्तव्यक बताबय लगलीह। रानी पुछलैथ, “किएक माँ? हम अहाँ सब पर बोझ छी कि?” बेटीक एहन बात सुनि मृदुला रानीकेँ करेजमे साटि लेलैथ।

किछ सोचि किशोर बाबु दृढ़ निश्चय केलैथ जे रानीक फैसला सही अछि। ओ रानीकेँ दिल्लीमे उच्च शिक्षा लेल व्यवस्था कऽ अयलाह। रानी पर माता सरस्वतीक कृपा रहबे करैन्ह, खूब मेहनत कऽ प्रथमे प्रयासमे IASकेँ परीक्षा उत्तीर्ण केलैथ तऽ समाजक टीका-टिप्पणी अपने बन्न भऽ गेल। रानी अपने जिलामे जिलाधिकारीक पदकेँ सुशोभित कयलैन्हे। आब तऽ नीक-नीक वरक आमंत्रण आबय लागल। रानी अपन दायित्वक पालन खुब नीक जेना करैत छलीह। हुनकर कर्तव्यनिष्ठा देखि सरकार हुनका राष्ट्रपति पुरस्कारसँ सम्मान करबाक घोषणा केलक। “कि बात अछि आइ भोजन नै करब” मृदुलाक आवाज किशोर बाबुकेँ वर्तमानमे घुरा आनलक।

फगुआक दिन



❑ सविता दास

फागुन पूर्णिमा होली दिन।
रंग आनब हम भिन्न भिन्न।।
सबसँ सुन्दर अछि रंग लाल।
करब हम भौजक गाल लाल।।
पहिर कऽ साँझ मे नवका कपड़ा।
पूजब अपना सँ बड़का।।
रखब सभहक पएर पर अबीर।
आशीष लऽ खैब पूआ आ खीर।।
आशा पूरल हमर एहि साल।
आशीष पाबि भेलौँ निहाल।।

बिपटा



❑ *डॉ. नारायणजी*

वैशाख मासक सांझ अछि। पुल पर ठाढ़ छी। धारमे पानि नञि अछि। दूर-दूर धरि पसरल दिनुका जरल बाध अछि।

खेतिहर परिवारक एकगोटे जुत्ता आ पायजामा आ कुर्ता पहिरने धार पार करैत जाए रहल छथि।

हमर लगमे ठाढ़ परिचित हमरासँ कहैत छथि, "एह, मैथिल! कोनो स्वरूप नहि, बिपटा देखाइत अछि। बगएसँ चीन्हि नञि सकबैक अहाँ जे मैथिल छी?"



हम कहल, "भरिसक हिनकर एकटा बेटा कमाइत हेतैन्ह असाममे, दोसर बेटा दिल्लीमे आ जमाए भिवण्डीक कपड़ाक मिलमे काज करैत हेतैन्ह। हुनकें सभक देल जुत्ता, पायजामा आ कुर्त्ता पहिरने जाए रहल छथि। आ अहाँकेँ बिपटा देखाइत छथि?"

बड़दक प्रश्न



❑ *डॉ प्रमोद कुमार*

बड़द पुछलकै हरवाहासँ, "ऐं हौ कक्का! एकटा बात कहबऽ?"

की? पुछऽ ने!

पुछलियऽ जे तोरा देहमे कत्तेक ठेल्ला?

हौ की पुछलह तों! सौंसे देह ठेल्ले ठेल्ला। हर जोतै छी, हाथमे ठेल्ला! पएरे चलै छी, पएरमे ठेल्ला!

आ जेना तोहर नांगरिमे ठेल्ला, तहिना



हमर देहमे ठेल्ला।

देहमे ठेल्ला! से कोना?

जेना हमर पेनासँ तोहर देहमे ठेल्ला तहिना गिरहथक सटकीसँ हमर देहमे ठेल्ला।

हर जोतनाए छोड़ि दहक नै!

बाप धरेलक धेने छी। नञि कमेबै तऽ खयबै की?

हँ से तऽ सत्ते! हमरो संगे उपरका सएह कैलकै! बुझलहक?

नाचघर



❑ *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'*

बौआ बाबाक संग थियेटर देखने छल। बौआक पप्पाक एक्सीडेंटमे टांग टूटि गेल तऽ अप्पन बाबाक संग अस्पतालमे



आपरेशन थियेटर केर बाहर बैइसल अछि।

आ ललका बल्ब भूकुर भौं सेहो कऽ रहल अछि।

बौआ पचमामे पढ़ैय यै।

बाबाक पुछलक - बाबा यौ, ई बल्ब किएक जलै छै आ नाच केखन हेतय?

बाबा - चुपकर बुरबक, ई नाचघर नै छिक ई अस्पतालक आपरेशन थियेटर अछि!

इयह बुझियौ जे हिंया सिबाय चीरफाड़कें कुच्छ नञि होयत अछि।

रूपैयाक मोल



सबिता झा 'सोनी'

मोनी - मम्मी हमरा आइ आइसक्रीम खेबाक मोन अछि।

मम्मी - कोना खाएब पापा तऽ ऑफिस गेल छथि आ ड्राइवर सेहो हुनके संग अछि।

मोनी - हमरा एखन आइसक्रीम पार्लर जेबाक अछि, रिक्शासँ चलु ने...!



रिक्शाबला - बीस रूपैया लागत... मैडम..।

मम्मी - एतेक रेट बढ़ा देलहक! दस रूपैया देबह चलबाक छह तऽ चलह...!

रिक्शाबला - मैडम हम गरीब आदमी... हमरो परिवार, बच्चा हए दस रूपैया मे सागो नै भेटैहइ...! चलू पनरह रूपैया दऽ देब...!

मोनी - मम्मी 200 रूपैया दिय आइसक्रीम लेल...।

मम्मी - सबसँ नीक आइसक्रीम लेब बड़ू रूपैया आर लऽ जाऊ... अओर रिक्शाबला लेल 10 रूपैया भजेने आएब... बड्ड एला पनरह रूपैया लेबऽबला....!

मिन्नी



❑ *इरा मल्लिक*

एक बेर फेरसँ कहु तऽ, "पप्पाऽऽऽ!" बौआ कहु नऽ! मिन्नी, हमर बेटा छी नऽ अहाँ! बाजू, बाजू! पप्पाऽ!

अपन धुनमे पिता सुरेश बाबू अपन बेटीकेँ दुलारैत, बजनाए सिखा रहल छलाह!

दस मासक मिन्नी किछु सुनैत, किछु बात अकानैत अपन पिता दिस ताकि रहल छलीह। गोल मटोल, गोर धब-धब मिन्नी! ओ औंठिया कारी केशसँ सजल माथ! मुरूतकेँ गढ़ैन छलखिन भगवान।

भानस घरसँ मिन्नीक दादी कहलखिन्ह- बौआ! मिन्नी दाइ सबसँ पहिने माँ बाजल छैथ। आ अहुँ माँ ए बाजल छलहुँ। सब बच्चा सबसँ पहिने जननीयेकेँ सुमरैत अछि, बुझलौंह नै। आ बाबा सेहो बजैत छैथ। खाली हम आ



अहाँ एखन छुटल छी।

सुरेश हँसय लगलाह आ बजलाह, "बेस माँ! हम सब ताधरि इंतजार करी। कोठरीसँ मिन्नीक माए मुस्किया देलैन्ह।

उच्चाकांक्षा



❑ *कल्पना झा*

कार्यालयसँ घुरैत आन दिन जकाँ बाजैत नञि देखि पत्नी शीलाकेँ अनुभव भऽ गेलैन्ह जे उमेश बाबूक गुम्मीक किछु कारण अछि।

"की बात छै, एना चुपचाप किएक बैसल छी?" "काल्हि शुक्ला जीक विवाहक पचीसम वर्षगाँठ छैन्ह तऽ बेरू पहर चारि बजे सत्यनारायण भगवानक पूजामे सम्मिलित होमए लेल कहलैन्ह अछि आ संध्याकालक भोजन पर आमंत्रित केलैन्ह अछि, सेहो सपरिवार। बेर-बेर आग्रह केलैन्ह सभ गोटेकेँ अएबाक अछि।" कुमोने उमेश बाबू एक्के सुरमे बाजि गेलाह।

"ई कोनो चिंताक विषय तऽ नञि थिक, चलब सभ गोटे।"

"चिंताक विषय ई अछि जे ओतय जौँ केओ सोनूक चैप्टर खोलि देलैन्ह तऽ की बाजब? कोना कहबैक जे दू सालसँ तैयारी कऽ रहल छलाह तैयो सफलता प्राप्त नञि भेलैन्ह। ओमहर शुक्ला जीक बेटा आइ .आइ .टी. क्रैक कऽ लेलक।"

ऑनलाइन क्लासमे बाझल बेटी बाजि उठलीह, "बाबूजी! अपन संतान अहाँ लेल एकटा चैप्टर भऽ गेल? एतबो उच्चाकांक्षा नीक नञि।"



लोभसँ परहेज करैत अपन स्वतंत्र जीवनक गठन करू



2011मे प्रकाशित अपन पहिल रचना 'गामक जिनगी' (कथा संग्रह)क लेल चौबीस भाषाक टर्ममे मैथिली लेल 'टैगोर लिटरेचर एवार्ड'सँ सम्मानित, साहित्य अकादेमीसँ अनुशंसित, कोरिया सरकार द्वारा प्रदत्त पुरस्कारसँ पुरस्कृत, कतेको साहित्यिक मंचसँ 'यात्री सम्मान', 'बाबू सहाएब चौधरी सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'वैदेह सम्मान', 'कौशिकी सम्मान', पूर्वांचल सम्मान, आसाम सम्मान आदिसँ सम्मानित, ग्राम्य जीवन पर अपन कलम चलाबयवला, सरल, सौम्य, मृदुभाषी, विभिन्न विषय पर बेबाकपूर्ण आ तर्कसंगत अपन विचार राखयवला, मैथिली साहित्यक स्वर्ण हस्ताक्षर जनिक रचनामे विषयक सघनता लेल वरिष्ठ स्तम्भकार उमेश मण्डल जी 'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचनामे परिवर्तनक स्वर' पर शोध केलैन्ह। मैथिली साहित्यक भंडारकेँ अपन कथा, उपन्यास, नाटक अओर दर्जनो प्रकाशित पोथीसँ भरयवला श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीसँ हालहिं मे गामक यात्राक दौरान हुनक सुखद सानिध्य प्राप्त भेल, प्रस्तुत अछि ओकर सारगर्भित अंश :-



❑ *मुकेश दत्त*

अपन प्रारम्भिक जिनगीक बारेमे संक्षेपमे बताबियौ।

बेरमा गामक मध्य, मध्यवर्गीय जातिक मध्यवर्गीय परिवारमे जन्म भेल। एहिठाम स्पष्ट कऽ दिअ चाहै छी जे हिन्दू परिवार मोटा-मोटी तीन रूपमे विभाजित अछि, ऐगला, पैछला, बीचला। इएह बीचला भेल मध्य वर्गीय जाति। दोसर आर्थिक रूपेँ मध्यवर्गीय परिवार ओ भेल जिनका गुजर करय जोकर अपन जमीन छैन्ह। ओना, पैघ किसान कहियौ आकि जेठ रैयति जमीन्दार, एक श्रेणी ओहो छथिए। तहिना भूमिहीन, बिनु बासभूमिबला एक श्रेणी। तीनूक मध्यक परिवारमे जन्म भेल अछि।

भैयारीमे पिताजी असगरे छला, तैँ समटल परिवार छल समटल जे माता-पिताक देख-रेखमे चलय छल। हमरासँ तीन बर्ख जेठ एक भाएक संग दू भाएक भैयारी छल। तीन बर्खक रही, तीस बर्खक अवस्थामे पिताजी मरि गेलाह। माएक देखरेखमे परिवार चलय छल। बटाइ लगा एक हरक जोत परिवारमे छल। जने-हरबाहक बले खेती होए छल। ओना, अपना एहिठाम दूटा पिसियौत भाए सेहो रहय छलाह। कोसी कातक गाम रहने, हुनकर गामे नष्ट भऽ गेल छेलैन्ह। ओ दूनू भाए थोड़-बहुत खेतियो देखैथ आ महींसो चराबै छला जे 1960 इस्वीमे अपन गाम जगने 'हरिनाही' पुनः चलि गेलाह।

गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल छल, जे भीतघर छल, 1934 इस्वीक भुमकममे खसि पड़ल। जेकरा गामक लोक अशुभ मानि स्कूलक जगहे बदैल देलैन्ह। दोसर ठाम स्कूल बनल, तइ स्कूलमे पहिने जेठ भाए नाओं लिखौलैन्ह, पछाइत पाँच बर्खक अवस्थासँ हुनकेँ (भाइक) संगे हमहुँ स्कूल जाए लगलौंह।

तहिया दूनू पहर स्कूल चलै छल। एकटा शिक्षक छला, जिनकर आवा-जाही बेसी काल परिवारमे होए छलैन्ह।

मैथिली साहित्य दिश झुकाव कोना भेल?

बच्चेसँ लोक भाषा-साहित्यसँ जहिना जुड़ि जाए छथि तहिना हमहुँ जुड़ि गेलौंह। कविता-कथासँ विशेष प्रभावित भेलौंह। ओना, हाई स्कूलसँ आर्ट-साइंस-कॉमर्सक फुटकान होए छल जाहिमे पनरह-सँ-बीस प्रतिशत साइंस, पाँच-सँ-दस प्रतिशत कॉमर्स आ बाँकी सभ आर्टे पढ़ै छलाह। अपनो विषयक बोध नहियेँ छल मुदा मनमे एकटा ललक उठि गेल छल जे मैट्रिक पास करब। गामक लोअर प्राइमरी स्कूलसँ कछुबी अपर-प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखेलौंह, पछाइत मिडिल स्कूल कछुबीए मे नाओं लिखेलौं। मिडिल पास केलाक पछाइत केजरीबाल हाई स्कूल झंझारपुरमे नाओं लिखेलौंह। हायर सेकेण्डरीसँ निकैल पछाइत जनता कॉलेजमे नाओं लिखेलौंह। विचारोमे बदलाव आएल। विचारमे बदलाव ई आएल जे एम.ए. पास करब। ओना, अखन धरि गाममे आठ गोटा बी.ए. पास, जेनरल कॉलेजसँ, कऽ चुकल छला मुदा एम.ए. पास कियो नै केने छलाह।

ओना, संस्कृत माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान गाममे छलाह, जे दीप संस्कृत महाविद्यालय,

नवानी महाविद्यालय, लगमा महाविद्यालयक संग केतेको महाविद्यालयमे बेरमा गामक विद्वान सभ सेवा दऽ चुकल छथि। अखनो किछु गोटा छथिए।

जनता कॉलेजमे हिन्दी ऑनर्सक पढ़ाइ नै होए छल, अपने हिन्दीक विद्यार्थी छलौंह। पछाइत सी.एम. कॉलेजमे नाओं लिखेलौंह। जाहिठामसँ एम.ए. पास केलौंह। कॉलेजे अवस्थामे वामपंथी राजनीति (कम्युनिस्ट पार्टी)सँ 1967 इस्वीमे जुड़ि गेलौंह। एम.ए. पास करैत-करैत एहेन मनक विचार बनि गेल जे नौकरी नै करब। तैँ नौकरी लेल जीवनमे कहियो परियासो नहियेँ केलौंह।

पहिल रचनाक प्रेरणा कोना आओल?

बच्चेसँ कविता-कथा पढ़ैत रहलौंह, केते कविता रटियो नेने रही। कहिया काल कविता-कथा लिखैक मन अपनो भऽ जाए आ किछु लिखियो ली, मुदा तइ सभहक ठेकान नञि रहल। कहब जे किनकोसँ प्रभावित भऽ वा संरक्षणमे लिखब शुरू केलौंह से बात नहि अछि। कथा-उपन्यास लिखला पछाइत भाए मन्त्रेश्वर झा, डॉ. तारानन्द वियोगी, डॉ. शिवशंकर श्रीनिवाससँ देखौलियैन्ह जे अपन-अपन विचारो आ सुझावो देलैन्ह। हर्षक बात ईहो जे अखनो धरि मन्त्रेश्वर भाएकेँ अपन रचना पठाबै छियैन्ह आ विचार लइते छी। वएह 'भाषाक बाजीगर' कहि अपन मन्तव्य सेहो देलैन्ह।

दू हजार इस्वी धरि अबैत-अबैत विचारमे बदलाव सेहो आएल। ओना आन्दोलनक बीच, सूदखोरी आ बटाइदारी आन्दोलनक बीच, गामक खेती केना आगाँ बढ़त ताहि दिशामे समाज झुकि गेल छल, जाहिसँ उपजामे काफी बढ़ोत्तरी भेल। विचारधारामे समाजक बदलाव होए, ताहिसँ साहित्येक जरूरत अछि। तैँ लिखब शुरू केलौंह।

जीवनक शुरूक जे कथा छल, माने जीवनक पहिल कथा- 'भैंटक लाबा', तैठामसँ शुरू भऽ 'गामक जिनगी' कथा संग्रह अछि, जे 2009 इस्वीमे गजेन्द्र ठाकुर जीक सहयोगसँ प्रकाशित भेल। भाए डॉ प्रेमशंकर सिंह जे तिलका माँझी विश्वविद्यालयसँ प्रोफेसरक रूपमे सेवानिवृत भऽ चुकल छलाह, 'गामक जिनगी' कथा संग्रह पढ़िते बेहद खुश भेलाह। समीक्षा लिखबाक विचार सेहो देलैन्ह। मुदा बिमारीक चलैत हाथमे कम्पन्न आबि गेल छेलैन्ह जाहिसिँ लिखब कठिन भऽ गेलैन्ह, नहि लिखि पेलाह।

कोन-कोन विधामे लेखन केने छी? अहाँकेँ कोन विधामे लिखब नीक लागैत अछि? संक्षेपमे बताओल जाए।



जाहि विधामे काजे शुरू नञि केलौंह, तै विधाक नीक-बेजाए की कहब। किएक तऽ कोनो विधामे प्रवेश केलाक पछाइत ने रमन्त आबय छै, से तऽ भेबे नै कएल तऽ तेकरा छोड़ि कहै छी। कथा-उपन्यास दूनू लिखब संगे शुरू केलौंह। एहनो होए छल एक दिन कथा लिखी आ दोसर दिन उपन्यास। जे क्रम अखनो अछि। किछु दिनसँ कथा लिखै छलौंह, जे दरभंगा 'सगर राति दीप जरय'क मंचपर तीनटा संग्रहक रूपमे लोकार्पण भेल, आ आगूक जे कार्यक्रम अछि ताहि लेल तीनटा उपन्यास रखने छी। एहि बेरक पानि (वर्षा-बाढ़ि) तेना मनकेँ डोला देलक जे बाढ़िये-बर्खासँ सम्बन्धित अखन कथा लिखि रहल छी।

उपन्यास, कथा लिखब जे जीवनक शुरूमे पकड़लक से अखनो ओहिना पकड़ने अछि, तैँ कोन नीक कोन बेजाए, केना कहल जाए। नाटक, एकांकी सेहो लिखलौंह। आजुक जे मोबाइल युग आबि गेल अछि ताहिमे अपना एहिठामक नाट्य साहित्य रहत कि पाठ्य साहित्य बनत से तऽ प्रश्न अछिए। तैँ एहि पर कोनो बात नहि कहब। कविता सेहो पाँच साएसँ ऊपर लिखने छी, जे करीब बारहटा संग्रहमे प्रकाशित अछि। कविता लिखब नै छोड़लौंह हन आ नै लिखै छी। लिखै छी ओतबे जेते कोनो कार्यक्रममे पाठ करय छी। कविता लिखला पछाइत अपने मन झुझुआ लगैए। झुझुआ ई लगैए जे जे विचार राखए चाहय छी ओ राखि नञि पाबै छी। दूनू कात धार अछि, माने ई जे सीमित समयमे पाठ हुअए आ दोसर छन्द-अलंकारक इलाका। बिनु छन्द-अलंकारक कविता केहन हैत। तैँ अपने झुझुआएल मन झुलि रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे अहाँ अपनाकेँ किनकासँ प्रेरित मानैत छी वा साहित्यमे अहाँक प्रेरणाक स्रोत केँ रहलाह?

दत्तजी, अपन सीमामे अहुँक प्रश्न सहिये अछि, किएक तऽ आँखिक सोझोमे देखबो करै छी आ सुननहुँ तऽ छीहे। तैँ अपन जगह पर अपन विचारानुकूल प्रश्न अछि, मुदा अपन बात कहय सँ पहिने बीचमे एकटा प्रश्न अछि ओ अछि 'प्रेरणाक स्रोत केँ रहलाह?' तऽ अखन एहि दिस नहि बढ़ि एतबे कहब जे अपन जे जीवन रहल, वएह न अपन विचारो आ काजो निर्धारित केलक, जाहिसँ जीवन ठाढ़ भेल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे बेकतीगत रूपमे नञि सामूहिक रूपमे हजारो एहेन प्रेरक छथिए जिनकासँ प्रेरित

छीहे। ताहिमे अनेको प्रेरक साहित्यकार सेहो छथिए। कहब जे किनको खास प्रभाव हेबे करतैन्ह। ई तऽ मानसिक प्रश्न छी, किनकर भाषा, किनकर भाव आ किनकर रचनाक की प्रभाव पड़ल...? जहिना तुलसी बाबा आशा हारि बजलाह जे 'को बड़ छोट कहत अपराधू..।' तहिना अपनो आशा हारि कहय छी, एक-सँ-एक पूजनीय महापुरुषक धरती मिथिला रहल। कामधेनु सन जकर भूमिमे उर्वर शक्ति अछि, ओ नञि कहियो बाँझ भेल अछि आ नञि हैत।



अहाँक रचना ग्रामीण परिवेशकेँ समेटने वास्तविक जिनगीक परिदृश्यसँ भरल रहैत अछि, एकर कारण?

सम्पादकजी, परिवेश मनुक्ख स्वयं अपन अपना लेल सृजन करैत छैथ। अखन परिवेशक चर्च नञि करब। अखन एतबे कहब जे अपन चौहत्तैर-पचहत्तैर बर्खक जीवन गामेमे बितल अछि, जाहिसँ गाम देखैक अवसर भेटबे कएल अछि। पैघ-सँ-पैघ बाढ़ि, रौदी आ भुमकम देखनहि छी, ओकर की परिणाम होइए से तऽ अपन आँखिक देखल अछिए। सभ जनिते छी जे अपन आँखिक देखल सत्य सबसँ अकाट्य होइते अछि। तीनूक माने बाढ़ि, रौदी, भुमकमक चर्च करब उत्तरकेँ नमहर बनाएब हएत। से नहि मुदा भुमकमक दूटा घटनाक चर्च करय छी। पहिल, 1934 इस्वीक भुमकमक चर्च करै छी। झंझारपुर बाजारमे जयदेव चौधरीक परिवार छेलैन। बनियाँ जाति, कारोबारी लोक छेलाहे। भुमकममे घर-अँगना खसि पड़लैन। एगारह गोरेक परिवारमे नअ गोरे मकानमे दबिकऽ मरि गेलैन। एकटा बौकी बहिन आ जयदेव चौधरी अपने मात्र दू बेकती बँचलाह। मन विचलित भऽ टुटि गेलैन। जयदेव चौधरी बेरमा आबि बसि गेलाह। सन्तान नहि भेने परिवारक अन्त भऽ गेलैन्ह।

दोसर घटना 1987 इस्वीक भुमकमक। अपना घरसँ करीब दू बीघा हटि ब्राह्मण परिवार छैथ। अढ़ाइ-तीन बजे भोरमे भुमकम भेल छल। केदारबाबूक घर भितघर छेलैन। सुतलेमे घर खसलैन। सभ प्राणी, माने तीन गोटा, मरि गेला। मात्र पाँच बर्खक एकटा बेटा बँचलैन्ह। ई बात लोक बुझलक भिनसरमे। एकटा बच्चा मइटुग्गर-बपटुग्गर भऽ ऐ धरतीपर रहि गेल।

आब चलू अपन जिनगीक परिदृश्यपर। किसानी जीवनसँ जुड़ल परिवार छेलै हे तेँ देखा-देखी किछु अनुभव भइये गेल छल। जखन बटाइदारी, सूदखोरीक विषयमे आन्दोलन ठाढ़ भेल तऽ कृषिक पैदावारक सभ अंगकेँ पकड़ि समाजकेँ आन्दोलित सेहो कएल गेल। कृषि जीवनक हर विधापर समाजोक आ अपनो नजरि दौड़ेलौंह। अपनो ततेक बेसी काजसँ जुटि गेलौंह जे ताश-शतरंज खेलैक समये नै भेटल। काजक रूप तेहन बनि गेल जे 'रामदेव योग'क जरूरते नै पड़ल।

लेखक आ पाठकक मनोदशाक सामंजस्यकेँ एकटा साहित्यकार केर रूपमे कोना देखैत छी?

देखियौ, दूनूक माने लेखकोक आ पाठकोक, पहिने मनक स्तरकेँ देख लिय पड़त। शरीरक जे आन-आन इन्द्रीय- आँखि, कान, नाक इत्यादि अछि तेना मन नहि अछि, ओ मनन क्रियाक रूप जकाँ अछि, से अखन नहि अखन एतबे जे केतौ लेखक आ पाठकक एक स्तर रहने रचना उपयोगी बनैये आ दब-उनार रहने माने केतौ रचनाकार उन्नैस आ पाठक बीस रहलासँ रचना अधखिज्जूक रूप बनैये आ केतौ रचनाकार बीस आ पाठक उन्नैस रहने काँचो-कोचिल खट-मधुर भइये जाइए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे अपन रचनाक जे सिलसिलेवार चलल ओकरा अपन शक्तिक अनुकूल समाजसँ जोड़ि चलैक परियास केलौंह, तइमे केते अनुकूल छी आ केते प्रतिकूल छी, ई तऽ अपन-अपन नजैरिक विचार अछि।

अपन जे शुरूक रचना अछि आ अखुनका जे रचना अछि ताहिमे अन्तर आबिये गेल अछि। सिलसिलेवार पढ़निहारकेँ जैं नीको लगतैन्ह तऽ ओहन पढ़निहारकेँ खटमधुर आ खटाइन लगबे करतैन्ह जे पहिने पछातिक रचना आ पछाइत पहिलुका रचना देखताह। तहिना जौं कियो बीचक रचना पहिने पढ़ि लैथ आ पछाइत अखुनका पढ़ैथ आ तेकर पछाइत पहिलुका पढ़ैत, तऽ हुनका आरो तीत-कसाइन सेहो लगबे करतैन्ह। अखन एतबे जे समाजक बहुसंख्य लोक जे छैथ ओइ सामाजिक ढाँचाकेँ पकड़ि अपन रचना करै छी, तेँ एकधाराक अन्तर्गत रहनौं समाजक जे पूर्वसँ अबैत धारा अछि ताहिमे जे दूरी बनल अछि, से समरस केना बनत, ई प्रश्न तऽ समाजमे बनले अछि। जौं गौर करबै तऽ बुझि पड़त जे रत्ती-बत्ती, फत्ती भेल समाजक मति अछि। वर्त्तमानक परिवेशकेँ अँकैत समाजक दिशानुमुख रचना होए तऽ बेसी उपयोगी हेबे करत।

एकटा नाटककारक रूपमे अहाँ पाठक आ दर्शकसँ की अपेक्षा रखैत छी?

नाटकक चर्च भऽ गेल अछि। ओना, पैछला पीढ़ीक जे दर्शनीय दृश्य छेलैन्ह, आ अखुनका जे भऽ गेल अछि ओ बहुत अधिक दूरी बना लेलक अछि। जेकर फलाफल

समाजपर पड़िये रहल अछि जे गामक लोककेँ गाममे अपन बाप-दादाक परिचय अपन गाममे दिय पड़ि रहलैन्ह अछि।

वर्त्तमान समयमे मैथिली साहित्यक दशा-दिशापर किछ प्रकाश दियौ।

जौँ एकधारामे साहित्य-रचना चलैत रहैत तऽ दशा-दिशा भँजियाएब असान होइत मुदा से तऽ अछि नञि। अनेको धारामे रचना प्रवाहित अछि। अपन जे वैदिक साहित्य अछि ओ सभहक जीवनक कल्याणक विचार करैत भेल अछि तैँ अपना सभहक जड़ि निस्सन अछिए। कहलो गेल अछि- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।' मुदा जेना-जेना समय आगाँ बढ़ैत गेल आ मनुक्खक विकास होइत गेल तेना-तेना कुटिनीतिता विचारमे अबैत गेल। जे सोभाविको तऽ अछिए जे हजारो बर्खक अपन समाजकेँ गुलामीक जिनगी बितबए पड़ल छैन्ह। देश स्वतंत्र भेला पछातिक रचनाधर्मिता आ पूर्वक जे रचनाधर्मिता अछि ओ कोन दिशामे बहि रहल अछि।

अनेको रंगक पथ-प्रदर्शकक विचार समाजक विचारमंचपर अछिए। अपन वेद की कहैए, अपन गीता की कहैए, बुद्धदेव की कहलैन्ह, महावीर की कहलैन्ह, विवेकानन्द की कहलैन्ह, रामक माध्यमसँ तुलसी बाबा की कहै छैथ, तऽ सूरबाबा कृष्णक माध्यमसँ की कहै छैथ। ताहि संग कबीर बाबा अपन निर्गुण रामक माध्यमसँ की कहै छैथ। सभ विचार तऽ समाजमे अछिए।

शास्त्रक बीच शुरूयेसँ विचारक विवाद रहल अछि। कियो अद्वैत मानै छैथ तऽ कियो द्वैत। द्वैतोमे द्वैताद्वैत, विशिष्ठा द्वैत इत्यादिक बीचक विवाद अछिए। तहिना वुद्ध आ महावीरक बीच छैन, कियो 'बहुजन हिताय' तऽ कियो 'सभ-जन हिताय'क विचार दैत छैथ। वुद्धदेवोक विचारधाराक बीच हीनयान-महायान बनि ठाढ़ अछिए।

हम अपना जनैत मिथिलाक रूप कहलौंह अछि। ओना, जीवनक अनेको अंग एहिसँ अलग अछि। तखन, निष्पक्ष आ कल्याणकारी रचना हुअए, बस इएह न भेल समाजक दशा आ दिशा देखबैक दर्पण।

साहित्य जगतमे चलि आबि रहल कतेको परिपाटी समाजक नवांकुर आ उत्कृष्ट



रचनाकारकेँ दबा देलक। अहाँ एकरा कोना देखैत छी?

सब संकीर्ण मानसिकताक खेल अछि, तैँ अपनाकेँ अलग बुझै छी। अपन स्वतंत्र जीवन अछि स्वतंत्र रूपमे निष्पक्ष विचार करैक अपन धारणा अछि।

नावांकुर रचनाकारकेँ कहबैन्ह जे अपना सभहक समाजमे अदौसँ विचार आबि रहल अछि जे लोभ आदमीकेँ सुगतिसँ हटा दुर्गतिक बाट धड़ा दइए, तैँ लोभसँ परहेज करैत अपन स्वतंत्र जीवनक गठन करू, निरविचारी बनि समाज आ साहित्यक सेवा करू।

मैथिली साहित्यक एहि दशा लेल मैथिल (साहित्यकार आ समाज दूनू) कतेक आ कोना जिम्मेदार छथि?

साहित्यकार आ समाज, दूनूक प्रश्न अछि, तैँ दूनूकेँ फुटा-फुटा देखए पड़त। नमहर उत्तर नहि देब। कममे इएह कहब जे जे साहित्यकार सत्तासँ जुड़ल रहला अछि हुनकर विचारधाराक संग बेवहार एहेन रहलैन्ह जे नव आ पछुआएल परिवारक साहित्यकारक संग जेहेन बेवहार हेबा चाही से नञि केलैन्ह जाहिसँ साहित्यकारक बीच नमहर दूरी बनि गेल अछि। रहल समाज, समाजो तऽ समाज छीहे। अनेको रंगक रूप ओकर छइहे। मुदा समाज गाए जकाँ निमूधन छीहे, तैँ जेहेन रूपमे ओकर सेवा करब तेहेन दूध हेबे करत।

रचनाकारक प्रथम प्रयास होइत अछि पाठकक हृदय धरि पहुँचब। अहाँ अपनाकेँ अपन रचनाक माध्यमे एहि प्रयोगमे कतय धरि सफल मानैत छी?

अपन कएलकेँ मानैक प्रश्ने नञि अछि। रहल करैक प्रक्रिया? अखन धरि अपन जीवन गामक धरतीसँ जुड़ल रहल अछि, तैँ अविसबासक प्रश्ने नञि अछि जे गामोमे हमरा सन लोक जीब सकै छैथ। गामे समाज निर्माण करैए आ समाजे गामक निर्माण सेहो करिते अछि। एक गाममे अनेको रंगक गाम सेहो अछिए। समाजक जाहि जीवनक विषय-वस्तु निरमबै छी, ताहि जीवनक वास्तविक धरती पकड़ैक परियास करै छी। देखल, भोगल समस्या सभ अछिए तैँ समस्याक छुबि रचना करै छी, ओ पाठकक हृदय धरि कतेक प्रवेश करैत छैन्ह, ई तऽ पाठकक विचार भेलैन्ह।

अपने अपन वृत्तिसँ फराक साहित्यिक कर्म

करैत, अपन रचनाधर्मिताक पालन करैत मैथिली साहित्यकेँ अपन कतेको रचनासँ सम्पूष्ट कएल। आगाँ भविष्यक की योजना अछि?

अपन वृत्तिसँ फराक साहित्यिक कर्म करैत...। दत्तजी, साहित्यिक कर्म आ जीवनक कर्म, दूनूमे अन्तर करैत प्रश्न केलौंह अछि। जीवन वृत्तिक अन्तर्गत अपन जीवनक भरण-पोषण हएत। आ सामाजिक जीवनक भरण-पोषण हएत। एक भेल आर्थिक वृत्ति आ दोसर भेल बौद्धिक। शरीर आ मनमे अन्तर अछिए। अपन जीवनक नियमित वृत्ति माने कर्म रहल अछि। जहिना निश्चित समय अर्थोपार्जण लेल तहिना निश्चित समय सृजनोमे लगैबिते छी, जाहिसँ दूनू काज (वृत्ति) अपना गतिये चलिये रहल अछि। ऐसँ बेसी कइये की सकै छी।

भविष्यक योजनासँ सम्बन्धित जे प्रश्न अछि, तकरा हम तीनू काल- माने भूतकाल, वर्त्तमान काल आ भविष्यकालकेँ तीन कालखण्डमे देखै छी। बेसी की कहब, वर्त्तमानमे जीबै छी तैँ वर्त्तमानक जे क्रिया अछि ओ जेहेन भविष्य निरमाबए। अपन कोनो कल्पना कहियौ कि सपना भविष्यक लेल, मनमे नञि अछि।

एहन कोनो साहित्यिक विधा जाहिमे अहाँकेँ काम करब बाँचल होए आ निकट भविष्यमे ओ रचना आबयबला होए?

पहिले कहिये देने छी जे वर्त्तमानमे जीबय छी, अखन कथा-उपन्यासक काज चलि रहल अछि, तैँ अपन कोनो विधा मनमे नहि अछि। रहल साहित्यिक विधा, ओ अनन्त अछि, जहिना तुलसी बाबा कहने छथि 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' तहिना साहित्योक अछिए। तैँ अथाह समुद्रमे अपना थाहिये केते सकय छी। तखन एतबे जे मन शरीरक आ शरीर मनक संग जगल चलैत रहए।

अन्तमे, नवयुवक रचनाकार लोकनिक हेतु किछ सन्देश देबय चाहब?

नवयुवककेँ हम की सन्देश देबैन्ह। ओ तऽ स्वयें सन्देशकर्त्ता छैथ। ओ अपन शक्तिकेँ जगा अपनासँ परिचित करथु। जाहिसँ जुआनी पानिमे नञि भँसिया जाइन्ह।

मिथिलांगनक निम्न अंक 'साक्षात्कार' हेतु अवश्य पढ़ू

1.	अंक 1 (अप्रैल-जून 2008)	:	श्री प्रदीप बिहारी आ श्रीमती शशिकला देवी
2.	अंक 2 (जुलाई-सितम्बर 2008)	:	श्री अच्युतान्नद चौधरी आ श्रीमती गोदावरी दत्त
3.	अंक 3-4 (अक्टूबर 2008-मार्च 2009)	:	श्री प्रत्युष कुमार आ श्री शरद कुमार
4.	अंक 5 (अप्रैल-जून 2009)	:	श्रीमती सुभद्रा देवी आ डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण
5.	अंक 6 (जुलाई-सितम्बर 2009)	:	श्री निर्मल कुमार कर्ण आ श्री चन्द्र भूषण कूमार
6.	अंक 7-8 (अक्टूबर 2009-मार्च 2010)	:	आचर्य सोमदेव, श्रीमती चानो देवी आ श्री संजय चौधरी
7.	अंक 9 (अप्रैल-जून 2010)	:	श्री रमान्नद रेणु, श्रीमती शांती देवी आ श्री प्रभात प्रभाकर
8.	अंक 10 (जनवरी-मार्च 2011)	:	श्री कृष्ण कुमार कश्यप
9.	अंक 11 (अप्रैल-सितम्बर 2011)	:	श्री निशिकांत ठाकुर आ डॉ. ललित कुमुद (परिचय)
10.	अंक 12 (अक्टूबर 2011-मार्च 2012)	:	श्रीमती उषा किरण खां
11.	अंक 13 (अप्रैल-सितम्बर 2012)	:	श्रीमती गोदावरी दत्त
12.	अंक 14-15 (अक्टूबर 2012-मार्च 2013)	:	श्रीमती शेफालिका वर्मा
13.	अंक 16-17 (अप्रैल-सितम्बर 2013)	:	श्री सुन्दरम्
14.	अंक 20-21 (अप्रैल-सितम्बर 2014)	:	श्रीमती राखी दास
15.	अंक 22-23 (अक्टूबर 2014-मार्च 2015)	:	श्री मानवर्धन कंठ
16.	अंक 24-25 (अप्रैल-सितम्बर 2015)	:	श्री ब्रह्मदेव लाल दास
17.	अंक 26-27 (अक्टूबर 2015-मार्च 2016)	:	कमांडर (रि.) कौशल कुमार चौधरी
18.	अंक 28-29 (अप्रैल-सितम्बर 2016)	:	श्रीमती संजु दास आ श्री रविन्द्र कुमार दास
19.	अंक 30-31 (अक्टूबर 2016-मार्च 2017)	:	श्रीमती अम्बीका देवी
20.	अंक 32-33 (अप्रैल-सितम्बर 2017)	:	श्री (डा.) नागेश्वर लाल कर्ण
21.	अंक 34-35 (अक्टूबर 2017-मार्च 2018)	:	श्री पुष्कर कुमार
22.	अंक 36-37 (अप्रैल-सितम्बर 2018)	:	श्री सुधाकर दास
23.	अंक 40-41 (अप्रैल-सितम्बर 2019)	:	लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश मल्लिक
24.	अंक 42-43 (अक्टूबर 2019-मार्च 2020)	:	श्री आमोद कंठ
25.	अंक 44-45 (अप्रैल-सितम्बर 2020)	:	श्री मानस बिहारी वर्मा
26.	अंक 46-47 (अक्टूबर 2020-मार्च 2021)	:	श्री छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाए', श्रीमती प्रेमलता झा, श्री रोहिणी रमण झा, श्री संजय चौधरी, डॉ. प्रकाश झा अओर श्री मुकेश झा

महाकवि लालदास



❑ डॉ शेफालिका वर्मा

मैथिली-साहित्यमे एक दिस चन्दा झा आधुनिक मैथिलीक प्रवर्तक मानल जाइत छथि तऽ दोसर दिस महाकवि लालदास मैथिली केर उन्नायक। सीताकेँ अपन काव्य-रचनाक आराध्य बना वो जे सृजन केलैन्ह अपना आपमे एकटा उदाहरण बनि गेल। माताक आराधना, शक्तिसँ परिपूरित स्वयं शक्तिक रूप-स्वरूपक उजागर मात्र नञि केलैन्ह, वरन् प्रणम्य बना हुनक पूजा केलैन्ह।

नारी नारी नय कहु, नारी नर कें खान।
नारीसँ तऽ सुत उपजै ध्रुव, प्रह्लाद समान।।

लालदासक साहित्यमे नारीक गरिमा ओकर महिमा सीताक रूपमे इजोरिया जकाँ पसरल अछि। एकरे फल छल जे स्वयं महाराज दरभंगा हिनक साहित्यसँ अभिभूत भऽ हिनका 'धौत सम्मान'सँ सम्मानित कऽ पंडितक उपाधि प्रदान केलैथ। महाराजा कतहु जायत छलाह तऽ एहि महाकविकेँ अपना संगे लऽ जायत छलाह।

महाकवि लालदासक जन्मस्थान खड़ौआ, मधुबनी अछि। अत्यन्त तेजस्वी व्यक्तित्व आ कुशाग्र बुद्धिक स्वामी छलाह। किशोरावस्था सँ ओ साहित्य सृजन आरम्भ कऽ देने छलाह। हिनक पोथी सब मे सांग सप्तशती, स्त्री-शिक्षा (चारि खंड मे), बालकाण्ड, सुंदरकाण्ड, सावित्री-सत्यवान (नाटक) यानि मैथिलीमे प्रायः बीस-पचीससँ बेसी पोथीक सृजन केलैन्ह। प्रत्येक पोथी मिथिलाक संस्कार-संस्कृतिसँ ओत-प्रोत। नारी सशक्तिकरण पर हिनक अत्यन्त जोर छल तैं नारीक शिक्षा पर विशेष जोर देलैन्ह।

फारसी, अंग्रेजी, मैथिली, हिन्दी सब भाषामे प्रवीण छलाह। महाराज रामेश्वर सिंहक कार्यालय मे विभिन्न पद पर काज करैत छलाह। महाराजक संगे भागलपुर, राजनगर आदि सब ठाम रहलाह।

जखन लालदासक मान-सम्मान, यशोगाथा सुनि महारानी मंत्रमुग्ध भऽ गेलीह, तऽ हुनका अपन ड्योढ़ीक सुपरिन्टेन्डेन्ट बना देलैन्ह। हुनक साहित्यक क्षेत्र व्यापकता आ विविधता नेने छल।

भारतमे विभिन्न भाषा मे रामायण लिखल गेल, करीब तीन सैय से हजार धरि मुदा एहि सबमे संस्कृतमे लिखल वाल्मीकि रामायण सबसँ पुरान अछि, जकरा आर्ष रामायण सेहो कहल गेल अछि। फेर तुलसीदास रामचरित मानस लिखलैन्ह। एहि सबमे रामक जीवनक विभिन्न भाव-भंगिमा, कार्यकलाप देखाओल गेल अछि। मुदा, अचरज अछि महाकवि पंडित लालदासक 'जानकी रामायण' एकमात्र रामायण अछि जे आरम्भ सँ अंत धरि सीताक वर्णन अछि। एहिमे सीताक असीमित शक्तिक व्याख्या कयल गेल अछि, ओ सीताक स्वरूपक तात्विक विवेचना करैत हुनका शक्ति स्वरूपा कहने छथि।

जानकी रामायणमे सीताक तीन स्वरूप अछि, पहिल स्वरूपमे वो शब्दब्रह्ममयी तऽ दोसरमे महाराज जनक केर यज्ञभूमिमे हलाग्र (हरक अग्र भाग)सँ अवतरित शक्ति आ तेसर स्वरूपमे माँ सीता अव्यक्तस्वरूपा मानल गेलीह यानि आदिशक्ति भगवती मानल गेलीह।

सीता त्रिगुण प्रकृति प्रधान।
कारण सृष्टिक सैह निदान।।
स्वर्ग-तपक से सिद्धि स्थान।
महती विद्या विद्या ज्ञान।।
ऋद्धि सिद्धि सभ गुणमयिवेश।
निराकार पुनि गुणक न लेश।।
सकल सृष्टिमे व्यापित रहथि।
ज्ञानी तनिकहि चिन्मयि न हथि।।



हे लालदास
अहाँक चरण धूलि
अपन माथसँ लगा ली
जाहि गाममे अहाँ छलौंह
ओहिठामक माटिसँ लेखनी
अपन भरि ली...
जखन अहाँक पदचिन्ह पर
चलबाक हम व्रत लेलौंह
कल्पना कऽ अहाँक
पग रज हम बनि गेलौंह!
गीता रामायणसँ मैथिलीक
मुदित मोन
हमहुँ हेरितौंह...
हे लालदास एक बेर
अहाँक चरण रज
हम छूबि सकितौंह
एक बेर काश एक बेर...
नमन नमन शत बेर नमन।।

लेखिका प्रख्यात स्तम्भकार अओर साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत साहित्यकार छथि।

महाकविक सौन्दर्य-बोध



❑ *डॉ. अमरनाथ चौधरी*

महाकवि पंडित लालदासक रचना सबमे मूलतः भक्ति-भाव, धर्म-कर्म वा रीति-नीतिक वर्णन भेटैत अछि। हिनक काव्यक लालित्य तऽ एहन अछि, जे वीर रस अथवा वीभत्स रसमे सेहो एकटा माधुर्य रहैत अछि। लालदास रचित रामायणसँ लऽ कऽ महेश्वर विनोद, स्त्री धर्म शिक्षा, हरितालिका तीज कथा, सावित्री-सत्यवान, गीता अनुवाद प्रभृत सब रचना भक्ति-भावसँ ओत-प्रोत अछि। मुदा बिनु सौन्दर्य-बोध साहित्य ओहिना लगैत अछि जेना बिनु पुष्पक तरुण वृक्ष। साइत महाकवि साहित्यक एहि मर्मसँ पूर्ण परिचित छलाह। तैं हुनक रचना सबमे भक्ति आ सौन्दर्य बोधक अद्भुत सम्मिश्रण भेटैत अछि।

महेश्वर विनोदमे शिवक सौन्दर्य विवरण

भस्म विलक्षण चन्दन भेल
अमूल्य सुरत्न कपालक माला।
भेल बघम्बर दिव्य पट्टाम्बर
माणिक मौक्तिक भूषण व्याला।।
शीश जटाक किरीट मनोहर
शेश फणाक सुछत्र विशाला।
धैल सदाशिव सुन्दर रूप
सुधाकर खण्ड विराजित भाला।।

उमाक सौन्दर्य विवरण

नव यौवन संगम सौं तन पुष्ट
प्रभा बढ़ि गेल उमाक अपारा।
कुच भार सौं नम्र शरीर विशेष
तें मन्दहु सौं गति मन्द प्रचारा।।
कटि सौं नमि लेल नितम्बक उपर
केशर दामक किंकिणि हारा।
से जनि काम धनुर्गुण दोसर
लेल उमा निज हाथ पसारा।।

सावित्री-सत्यवान नाटक मे सावित्रीक रूप सौन्दर्य विवरण

चन्द्र वदनि केर मुख पर पसरल
असित कुटिल घन केशे।
श्याम सर्प जनु अमिय लोभ
सौं घेरल इन्दु प्रदेशे।।
भाल लाल सिन्दूर बिन्दु
पर शोभा अति विस्तारे।
यथा बाल रवि उदय काल
विच तिमिर निकल संहारे।।
चंचल युगल नयन बिच
नासा ललित अधर तट शोभे।
यथा युगल खंजन विच शुक
एक बैसल बिम्बक लोभे।।

ओहि पद्यक गीत

शिर शोभित घन चामर केश।
भृकुटी धनुष ततय बड़ बेस।।
शर कटाक्ष मृग दृग अनुमानि।
कंठ कपोत कोकिला बानि।।
रह हीरा नासा शुक शोभ।
विद्रुम अधर स्वर गत लोभ।।
घोघट वसन विचित्र मयूर।
कंचल कलश दुहू कुचपूर।।
कदली जंघ सिंह कटि देश।
हाथी हंस गमन बड़ वेश।।

रमेश्वरचरित रामायण पुष्कर कांड मे माता सीताक अप्रतिम सौन्दर्य विवरण

कंचन कमल भरण तन सुंदर विकसित सौरभ भारे।
श्याम घटा घन केश विराजित चन्द्र ललाट प्रचारे।।
काम धनुष सन भौंह धनुर्गुण कज्जल गुण विस्तारे।
विषम विशिष सर निमिष प्रसर पर करय कटाक्ष प्रहारे।।
कमल वदन पिंजर गत लोचन खंजन राखल मारे।
चंचल गति चल जाय मनहु दुहु श्रुतिपुट विवर विहारे।।
दशन वसन पाकल बिम्बाफल दाड़िम दशन उदारे।
तेहि लोभें नाशा शुक बैसल चहय करय आहारे।।
ग्रीवा कम्बु सनाल कमलभुज परिधन उर वर हारे।
पीन पयोधर तनसौं बाहर युगल कमल मद भारे।।
उदर रेख त्रिवली तीनू गुण नाभी भार सुधारे।
सुभग नितम्ब क्षीण कटि जंघा करिकर सन सुखसारे।।
हंस गमणि सुखमा किंकिणि ध्वनि नूपुर पद संचारे।
रक्त कमल सन चरण सुरंजित नख द्विजराज सतारे।।
लाल वसन भूषण चंदन तन सौरभ सुमन अपारे।
परमासुन्दरि जनकसुताकृति मोहिनि रूप पसारे।।

दैहिक सौन्दर्यक एतेक मधुर वर्णन अन्यत्र दुर्लभ। महाकविक लेखनीसँ मानवीय सौन्दर्यक जेना मधुवृष्टि होइत अछि।

महाकविक रचना सभमे दैहिक सौन्दर्यक संगहि प्राकृतिक सौंदर्य सेहो भरल पड़ल अछि। किछु उद्धरण प्रस्तुत अछिः-

सावित्री सत्यवान नाटकमे बरखा ऋतुक वर्णन

शोभय वर्षा ऋतु सुन्दर मूलत्तमान आकाशे।
सन्ध्या रागरूप चन्दन सौं चलचत देह विकासे।।
मुक्तामाल विशाल सदृश उर पहिरि वलाका पाँती।
मेघरूप पट पहिरि चलल नभ कामातुर मदमाँती।।
वर्षय बुंद अमंद धवल जल प्रेरित पवन झकोरे।
भेल वृष्टि सौं सुखित सृष्टि भेल विगत घाम दुख घोरे।।

शरद ऋतुक वर्णन

आयल सुखद शरद ऋतु वेश।
रहल कतहु नहि मेघक लेश।।
मरुत मेघ मातंग मयूर।
सभक शब्द सुख भ गेल दूर।।
विकसित कुमुद सरोवर बीच।
शून्य विवेक भेक भेल नीच।।
आयल सरुवर हँसक वृन्द।
शोभ गगन जनु अगणित चंद।।
हँसक पांति शोभ बिच धार।
पहिरल सर जनु चन्द्राहार।।
सुरभित पसन बहय बहु रंग।
सुमन कलीपर गुञ्जय भृंग।।

पुष्कर कांड मे मिथिलाक सौन्दर्य विवरण

मिथिला देश परम अभिराम।
सकल तीर्थमय धर्मक धाम।।
आवथि ततय मुनीश अनेक।
मिथिला वास करथि सुविवेक।।
दुष्कर तपकर मुनि समुदाय।
जनक सुश्रूषा करथि सदाय।।

शेषांश पृष्ठ संख्या 26 पर

लेखक प्रख्यात स्तम्भकार, अओर वरिष्ठ साहित्यकार छथि।

‘सावित्री सत्यवान’ एकटा स्त्री शिक्षा प्रधान नाटक



❑ डॉ. नबोनाथ झा

सावित्री सत्यावान एकटा स्त्री शिक्षा प्रधान नाटक अछि। एकर रचयिता कविवर लाल दास छथि। ओ मैथिली साहित्यक जाज्वल्यमान। नक्षत्रमे सँ एक छथि। मैथिली साहित्यकमे वर्तमान विकसित स्वरूप अछि, ताहिमे हुनक योगदान महत्वपूर्ण छैन्ह। ओ बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकारक सगहिं संग एकटा चित्रकार, समाज सुधारक ओजस्वी वक्ता आदि बहुत किछु रहथि। ओ मैथिली साहित्यक बहुँविध सेवा केलैन्ह, मूलतः काव्य ग्रंथहिंक रचना केलैन्ह, मैथिली गद्यमे बड्ड कम लिखलैन्ह। ओ बहुभाषा विज्ञ रहथि, मैथिली गद्य बड्ड कम लिखलैन्ह, हिन्दी मे सेहो ‘मिथिला माहात्म्य’ नाटक अछि जकर विषय वस्तु मैथिली गद्यमे वर्णित अछि। एहिनाटकमे अठाइस गोट गीत सेहो अछि। ओ मैथिली साहित्य जगतमे कवि महाकवि रूपमे तऽ चर्चित रहबे करथि। ‘सावित्री सत्यवानक’ रचना कऽ ओ एक नाटककार गद्यकार ओ गीतकारक रूपमे सेहो स्थापित भऽ गेलाह।

‘सावित्री सत्यवान’ नाटकक नामकरणहि सँ ज्ञात होइत अछि जे एहि नाटकक नायक सत्यवान ओ नायिका सावित्री छथि। सावित्री भद्रदेशक राजा अश्वयपति ओ रानी मालवीक पुत्री छलीह। राजा अश्वयपति जखन अवस्थगर भऽ गेलाह आ हुनका कोनो संतान नञि भेलैन्ह तऽ ओ संतान प्रातिक हेतु दैवीक अनुष्ठान आवश्यक बुझि तपोवन जाए ऋषि पराशरसँ निवेदन केलैन्ह। ओ हुनका देवी गायत्रीक शरणमे पठा देलैन्ह। देवी गायत्री हुनक घनघोर तपस्यासँ प्रभावित भऽ ब्रह्माक आज्ञासँ अपनहिं अंशसँ एकटा पुत्री प्राप्त हेबाक वरदान देलैन्ह। फलतः हुनका स्त्रीसँ एकटा पुत्रीक जन्म भेलैन्ह। ब्राह्मण लोकनि हुनक नामकरण सावित्री केलैन्ह अओर कहलैन्ह जे ओ सर्वगुण सम्पन्न हेतीह आ कालान्तमे पितृकुल ओ पतिकुल दुहूक धर्म पताका फहरेतीह। हुनक अलौकिक कृतिक कारणहिं भविष्यमे सधवा स्त्रीगण लोकनि हिनक पूजा ओ कथाक श्रवणसँ भाग्यशालिनी हेतीह।

सावित्री गायत्रीक अंश छलीह। अतः ओ एकटा अलौकिक बालिका छलीह। ओ जखन बाजब शुरू केलैन्ह, तऽ राजा हुनकसँ तोतर बोलीमे गप्प कऽ कृत्य-कृत्य भऽ जाथि। ब्रह्मा शायद स्वयं बड्ड आयाससँ हुनक सृजन केने रहथि। फलतः ओ अपूर्व सुन्दरी रहथि। हुनक बुद्धि तऽ एहन प्रखर रहैन्ह जे राजा सुनि कऽ प्रमुदित भऽ जाथि। ओ जखन बच्चहिं रहथि तऽ हुनकासँ गप्प करैत राजा कहलैन्ह, “जौ हम अहाँकेँ किछु खेबाक हेतु नञि दी, घरमे नञि रहऽ नदी, तऽ अहाँ कतय जायब? कतय रहब, ओ की खायब?

सावित्री दाड़िमक वृक्ष पर एकटा सुग्गा बैसल रहैक ओकरा दिशि आङुर देखाय बजलीह, “ओ कतय रहैये? की खायई? तहिना हमहुँ।”

बेटीकेँ बढ़ैत विलम्ब थोड़बहिँ होइत अछि। सावित्री राजसी सुख-सुविधा पाबि देखितहिं देखितहिं विवाहोयोग्या भऽ गेलीह। फलतः राजा हुनक कन्यादान कऽ देब आवश्यक बुझलैन्ह। हुनका जोगरक वर तकबाक अथक प्रयास केलैन्ह, मुदा असफल रहलाह। फलतः राजा अपन पुत्री सावित्रीसँ स्वयंवर कऽ लेबाक हेतु कहलैन्ह, सावित्री पिताक आदेशकेँ स्वीकार कऽ लेलैन्ह।

सावित्री पिताक आदेशसँ अपन प्रिय सखी सुलोचना संग स्वयंवरक हेतु प्रस्थान केलीह। एहि क्रममे एकटा तपोवनमे हुनका महान ऋषि गौतमक दर्शन भेलैन्ह। ऋषिकेँ कऽ वनमे अएबाक कारण बतौलैन्ह। गौतम ऋषि सावित्रीसँ कहलैन्ह, “पुत्री! अहाँक मनोरथ सिद्ध होए इएह हमर आशीर्वाद। एहि दिशामे अहाँ चलि जाऊ।”

सावित्री गौतम ऋषिकेँ प्रणाम कऽ हुनक बताओल बाट दिश बढ़ि गेलीह। ओतहि सावित्र-सत्यवानक प्रथम भेट भेल। दुहूमे गप्प-सप्प सेहो भेल आ दुहू गोटे विवाह लेल तैयार भऽ गेलैथ। राजा अश्वपति एहि शुभ समाचारकेँ बुझि अति प्रसन्न भेलाह। देवर्षि नारदक ओतए रहथि। ओ तऽ भविष्य द्रष्टा एहि रहस्यकेँ बुझैत रहथि जे सत्यवान अल्पायु छथि। ओहि दिनसँ हुनक आयु मात्र एक वर्ष शेष रहनि। मुदा सावित्री नञि मानलीह ओ कहलैन्ह जे हम मनहिं मन सत्यवानकेँ वरन कऽ लेलहुँ आछि।

रानी मालवी बड्ड भावुक भऽ बेटी सावित्रीकेँ स्वयंवर हेतु विदा केलैन्ह। सावित्री एकटा अलौकिक महिला छलीह। ओ सर्वगुण सम्पन्नत छलीह, तथापि माए मालवी आ आन स्त्री हुनका स्वयंवरक हेतु प्रस्थान करबाक समयमे भरपूर शिक्षा देलैन्ह।

रानी मालवी बेटीकेँ स्त्री धर्मक उपदेश दैत कहलैन्ह, “स्त्रीक मुख्य धर्म पतिसँ देवता ओ परमेवरक सदृश व्यवहार करबाक चाही, स्त्रीकेँ पतिक आज्ञाक पालन करबाक चाही। जहिना ईश्वर विरोधी भेला पर मनुष्य दण्डित होइत अछि, तहिना पति विरोधी भेला सन्ता स्त्री एहिलोक आ परलोक मे दण्डित होइत अछि। पति संग सतत् मृदु बजबाक चाही। पति आ गुरु दुहूकेँ निस्वार्थ भावसँ सेवा करबाक चाही। पतिसँ सतत् प्रेम राखक चाही। हुनका अपन व्यवहारसँ सतत् संतुष्ट रखबाक चाही। स्वामी जौँ कोनहुँ कारणवश चिन्तीत रहथि तऽ हुनकासँ नीक जँका गप्प कऽ हुनका संतुष्ट करबाक चाही। पति सर्वोतम आभूषण छथि तैँ हुनकासँ सतत् प्रसन्न रहबाक चाही। स्वामी जौँ कष्टहुँ देथि तऽ सेहो विसरि जे बाक चाही। स्वामीक

दर्शन मात्रसँ प्रसन्न रहबाक चाही। स्वामीक सेवा करब मुक्तिक मार्ग अछि।"

रानी बेटीकेँ एहि तरहेँ कतेको उपदेश देलैन्ह जेना- स्त्रीकेँ सतत् मृदु बजबाक चाही,ककरहुँसँ कटु वचन नञि कहबाक चाही, सतत् निर्लोभ रही, अन्न-वस्त्र-आभूषण जतबहिं रहय ताहीमे संतुष्ट रहबा, दोसराक सुख ओ सम्पत्तिसँ कोनो सम्बन्ध नञि राखब। जहिना चकोर पक्षी चन्द्रमा मात्रक दर्शनसँ असीम आनन्दक अनुभव करैत अछि, तहिना अपन पतिमात्रसँ सम्बन्ध राखब। एहि तरहेँ कतेको स्त्री शिक्षासँ भरल बात रानी सावित्रीकेँ बतौलैन्ह।

अन्त मे रानी यथार्थकेँ सेहो स्वीकार केलैन्ह जे अहाँ सत छी। हुनका संग आन दस स्त्री सेहो सावित्रीकेँ पातिव्रतधर्मक उपदेश देलैन्ह।

प्रथम स्त्री कहलैन्ह, "कल्पद्रममे वर्णित अछि जे सौभाग्यवती स्त्रीकेँ ब्राह्म मुहुर्तमे उठि सर्वप्रथम स्वामीक दुहू चरणकेँ प्रणाम कऽ हुनक मुँहक दर्शन करथि, तदुपरान्त गृहकार्यमे लागथि।"

दोसर स्त्री सावित्रीकेँ उपदेश दैत कहलैन्ह, "स्कन्द पुराणक अनुसारे स्त्रीकेँ पतिक ईच्छाक प्रतिकूल कोनो काज नञि करबाक चाही। पतिक कल्याणक हेतु सोहाग सामग्री यथा सिन्नूर, लछठी, काजर, आभूषण आदि धारण करब आवश्यक अछि। एकर त्याग केलासँ स्वामीक आयु क्षीण होइत अछि। तीर्थमे स्नान करबाक इच्छुक स्त्रीकेँ स्वामीक चरणोदक पान केला मात्रसँ वांछित फल भेट जाइत छैन्ह। स्त्रीक हेतु पति ब्रह्मा, विष्णु आ महादेवसँ सेहो श्रेष्ठ छथि।"

तेसर स्त्री व्यास संहिताक उदाहरण दैत बजलीह, "पतिव्रता स्त्री स्वामीकेँ उठवासँ पूर्वहिँ उठि पतिक दर्शन करथि, तदुपरान्त शरीर पवित्र कऽ घर, आंगन, चिनमार आदि नीपथि। राति मे लोढ़ी-सिलौट, उखरि-मूशर, शूप-तामा आदि सबकेँ एक्के संग राखिथि। भानस कऽ सर्वप्रथम पतिकेँ भोजन करबाथि आ स्वयं पतिक भोजनक बादहिँ भोजन करथि। पतिव्रता स्त्रीकेँ सोहाग-सामग्री अवश्य धारण करवाक चाही। स्वामीक हेतु आकर्षक विछाओन बिछेबाक चाही, शयन-शय्या पर पतिक यथाशक्ति सेवा करक चाही।"

चारिम स्त्री सावित्रीकेँ श्रीमद्‌भागवतक उद्धरण दैत उपदेश देलैन्ह, "पति वृद्ध, मूर्ख, रोगी, गरीब आदिहिँ किएक नञि होथि, मुदा पतिव्रता स्त्रीकेँ हुनक लक्ष्मी-विष्णु सदृश्य अराधना करक चाही तऽ ओ सेहो अपन स्वामीक संग वैकुण्ठ मे वास करतीह।"

पांचम स्त्री न्यासक वचनकेँ उद्धृत करैत सावित्रीकेँ उपदेश देलैन्ह, "नित्य द्वार पर बैसब, खिड़कीसँ झाँखब, बिनु बजोनहिये आनक आंगन जाएब, आन पुरुषसँ हँसी-ठट्ठा करब, पर पुरुषक संग सहवास करब कुलटा स्त्रीक लक्षण अछि, कुलीना स्त्री कथमपि नञि करथि।"



छठम स्त्री 'कृष्ण खंड'क उद्धरण दैत कहलैन्ह, "नन्दजी एक बेर भगवान श्रीकृष्ण ासँ पतिव्रता स्त्रीक लक्षण पूछलैन्ह, तऽ ओ कहलैन्ह प्रतिव्रता स्त्रीकेँ सतत स्वामीसँ प्रेम रखबाक चाही। स्त्री व्रत, पूजा, देवार्चना आदि करथि वा नञि मुदा स्वामीक चरणसेवा अवश्य करथि। जे वस्तु पति भोजन नञि करैत छथि से ओहो नहि खाथि। कोनो स्थितिमे स्वामीसँ वाद-विवाद नञि करथि। कुलीना स्त्रीकेँ स्वामीक दर्शन मात्रसँ अमृत पीबाक तुल्य आनन्दक अनुभव होइत अछि।"

सातम स्त्री 'कूलखण्ड'क उदाहरण दैत कहलैन्ह, "पतिव्रता स्त्रीक हेतु स्वामीये सर्वस्व छथि। हुनका लेल स्वामीसँ बढ़ि आन केओ दोसर उपकारी परम गुरु नञि। देव पूजन, व्रत, दान, तपस्पया, जाप, तीर्थस्नान, यज्ञक पुण्य, पृथ्वीक परिक्रमा, ब्राह्मण अतिथिक सेवन आदिसँ प्राप्त होबएवाला पुण्य स्वामीक सेवासँ प्राय होबएवाला पुण्यक पोडशांसो नञि अछि। स्त्रीक हेतु स्वामीक सेवा परमधर्म अछि।"

आठम स्त्री सावित्रीकेँ उपदेश देलैन्ह, "कृष्ण खण्डक सातम अध्यायमे महालक्ष्मीक कथन छैन्ह जे स्त्रीक स्वामीहिँ बन्धु, देवता आदि छथि। स्त्रीक हेतु स्वामीक सेवा परमधर्म, परमव्रत, परमतप, परमसत्य ओ परमदान अछि। स्वामीये स्त्रीकेँ सर्वश्रेष्ठ एहिलौकिक ओ पारलौकिक सुख देनिहार छथि। स्त्रीकेँ सभ देवताक पूजनसँ बेसी पुण्य स्वामीक सेवासँ प्राप्त होइत छैन्ह।

नवम स्त्री सावित्रीकेँ पतिव्रता स्त्रीक उपदेश दैत कहलैन्ह, "ब्रह्मवैवर्त कृष्ण खण्डमे ओपिमुनिक कथन छैन्ह जे जे स्त्री स्वामीक

प्रति अपन कर्तव्यक पालन नञि करैत छथि आ पतिकेँ क्रोध, भ्रम वा अनादरसँ कटु वचन कहैत छथि तिनका धर्मशास्त्रक अनुसार ब्रह्माक सय धर्म धरि नरकमे वास करय पड़ैत छैन्ह। एतबहिं नञि स्वामीक अनादर केनिहारि स्त्रीकेँ सय वर्ष धरि कएल गेल पुण्य नष्ट भऽ जाइत छैन्ह।"

दसम स्त्री 'ब्रह्मवैवर्त' पुराणहिंक सताबनम अध्यायमे भगवान श्रीकृष्णक उक्तिकेँ उद्वत करैत कहलैन्ह, "जे बुद्धिहीना स्त्री स्वामीकेँ विष्णु तुल्य नञि बुझैति छथि से कुम्भीपाक नरक मे खसाओलि जाइत छथि। पतिभक्ति विहीना आ आन पुरुषक स्नेही स्त्रीक उचित कर्तव्य छैन्ह जे विलम्बहुँ सँ ओहि कुकर्मकेँ त्यागि दैथ।

उपर्युक्त उपयोगी शिक्षाक अतिरिक्तहुँ सावित्रीकेँ किछु स्त्री विधवा स्त्रीक कर्तव्यक शिक्षा सेहो बतौलैन्ह, जकरा कथमपि व्यवहारिक नञि मानल जाए सकैत अछि, कारण विवाहक समयमे विधवाक चर्चहुँ अशुभ मानल जाइत अछि। यद्यपि स्त्री शिक्षाक अन्तर्गत ओ शिक्षा सेहो आबि जाइत अछि, मुदा तकर उपयुक्त अवसर नञि छल। सावित्री विवाह करय हेतु जाए रहल छलीह।

विधवाक कर्तव्यक प्रति **प्रथम** स्त्री सावित्रीकेँ उपदेश दैत कहलैन्ह, "जे स्त्री अपन कर्मवश विधवा भऽ गेलीह सेहो जप, तप पूजा आदि करथि। फलतः ओ निष्पाप भऽ पतिलोककेँ प्राप्त करतीह। 'काशी खण्ड' मे वर्णित अछि जे जे विधवा स्त्री नित्य तिलोदकसँ तर्पण करथि। ओ सर्वप्रथम पतिकेँ जल दैथि, तखन पिता अओर पितामहकेँ नाम, गोत्रसँ तर्पण करथि, तदुपरान्त ओ विष्णुक पूजन करथि आ अपन पतिकेँ सेहो विष्णुहिक भावनासँ पूजन करथि।"

दोसर स्त्री सावित्रीकेँ बुझबैत कहलैन्ह, "कृष्ण खंडमे वर्णित अछि जे विधवा स्त्री सतत् स्वामीकेँ विष्णु स्वरूप ध्यान करथि। विधवाकेँ बुझबाक अछि जे हुनक पतिये बन्धु, गुरु, देवता आदि सभ किछु छथि। हुनका स्वामीक प्रति आस्था रखला सन्ता गति प्राप्त हेतैन्ह।"

तेसर स्त्री 'काशी खण्ड'मे वर्णित विधवा स्त्रीक कर्तव्य पालनक उपदेश दैत सावित्रीकेँ कहलैन्ह, "विधवाकेँ स्वयंक कल्याण आ दोसरहुँ जन्ममे पतिसँ संयोगक इच्छा हेतु धर्मक मार्गक अनुसरण करैथ। ओ कार्तिक, माघ आ वैशाखमे नियमपूर्वक स्नान, दान, तीर्थाटन आदि करथि। ओ भगवान विष्णुक बेर-बेर श्रद्धापूर्वक स्मरण करथि, जाहिसँ ओ पापमुक्त भऽ जेतीह। पतिव्रता स्त्री गंगातुल्य छथि, सती स्त्रीक धर्मसँ हुनक स्वामी आ पुत्रकेँ सतत् कल्याण हेतैन्ह। हुनकासँ साक्षात् यमराज सेहो भयभीत रहैत छथि। प्रतिव्रता स्त्री अंतकालमे स्वामीक संग वैकुण्ठमे निवास करैत सर्वदा पमानन्दक सदृश सुख भोग करैत छथि।

प्रतिव्रता ओ विधवा दुहू स्त्रीक हेतु उपयुक्त शिक्षा सतत् महत्वपूर्ण रहत। सावित्रीकेँ देल गेल शिक्षा समग्र स्त्री जातिक हेतु सतत् उपयोगी बनल रहत। सावित्री तऽ एकटा आदर्श पतिव्रता नारी छलीह, ओ पतिव्रता स्त्रीक अलौकिक स्वरूप प्रस्तुत केलैन्ह। हुनकामे दुर्गुणक लेशो मात्र समावेश नञि छल, ओ जे कऽ गेलीह से हुनकहिं मात्रसँ सम्भव छल। ओ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे सम दृष्टिकोणसँ पटु छलीह। हुनक कृतिक इतिहास यावत् सूर्य-चन्द्र-पृथ्वी रहत तावत् अक्षुण्ण बनल रहत। ओ सतत् अनुकरणीय बनल रहतीह।

'सावित्री सत्यवान' नाटक एकटा स्त्री शिक्षाक नाटक अछि। लालदासकेँ विविध शास्त्र पुराणक गहन अध्ययन रहैन्ह जाहिमे यथावसर स्त्री कर्तव्यक वर्णन अछि। नाटककार ताहिसँ बड्ड प्रभावित रहथि। ओ स्त्री शिक्षाक प्रति सेहो बड्ड सतर्क रहथि। हुनक अन्य कृतिमे तऽ यथावसर स्त्री शिक्षाक वर्णन भेवे केलैन्ह अछि, ओ स्त्रीकेँ कर्तव्यक बोध करबाक हेतु एकटा पृथक 'स्त्री धर्म शिक्षा' नामक ग्रंथक रचना सेहो चारि खंड मे केलैन्ह।

लालदास स्वयं एकटा धार्मिक प्रवृतिक व्यक्ति रहथि। ओ प्रायः अपन सभ कृतिक रचना कोनो-ने-कोनो धार्मिक भावनासँ प्रभावित भऽ केलैन्ह। 'सावित्री-सत्यवान' सेहो एकटा धार्मिक, नायिका प्रधान नाटक/रचना अछि। एहि नाटकक आदिसँ लऽ अंत धरि सकल घटनाक्रम प्रायः एकर नायिका सावित्रीसँ प्रभावित अछि। सावित्री सर्वगुण सम्पन्ना अवश्य छलीह, मुदा ओ अन्ततः एक स्त्री छलीह। दाम्पत्य जीवनमे प्रवेश कऽ रहल छलीह। व्यवहारिक ओ परिवारिक जीवनमे स्त्रीक व्यापक महत्व अछि। स्त्रीसँ पिता ओ पति दुहू कुल प्रभावित होइत अछि। फलतः स्त्रीकेँ कर्तव्यक बोध कराओल गेलैन्ह, हुनकासँ दुहू कुलक इतिहासमे चारि चाँद लालि गेल। दुहू कुल सर्वदाक हेतु अमर भए गेल। सावित्री एकटा अनुकरणीय महिला भऽ गेलीह।

लेखक, अवकाश प्राप्त विश्वविद्यालय प्राध्यापक सह अध्यक्ष, मैथिली विभाग, सबौर महाविद्यालय सबौर, भागलपुर अओर वरीष्ठ साहित्यकार छथि।

महाकविक सौन्दर्य-बोध

क्रमशः पृष्ठ संख्या 23 सँ

एक समय एक मुनि विज्ञान।
अयला भ्रमयित ततय महान।।
देखि जनकपुर अति रमणीय।
अकथनीय महिमा कमनीय।।
निकट हिमालय उत्तर दीश।
दक्षिण गंगा बहथि नदीश।।
यज्ञभूमि मिथिला महि देश।
बसथि जतय मुनि विज्ञ विशेश।।
विविध नदी पावन जँह बहय।
पाप कलाप दहय सुख लहय।।
देवालय तँह विविध प्रकार।
शक्तिपीठ महिमा विस्तार।।

महाकविक प्रायः सब रचना सौन्दर्य-अनुभूतिसँ ओत-प्रोत अछि। एहि लेखमे उद्धृत पद्य, छन्द, गीत अथवा चौपाई सभ तऽ एकर बानगी मात्र थिक। असल सौन्दर्यक आनंद तऽ हुनकर रचना-समंदमे डूबिकऽ मात्रे पाओल जा सकैत अछि।

महाकवि लालदासक समायणमे लौकिक-अलौकिक पक्ष



❑ डॉ. अरुणा चौधरी

विगत शताब्दीमे जाहि मिथिलाक मनीषि लोकनिमे मूलतः मैथिलीक पुरातत्व इतिहास, संस्कृतिक विगत अध्ययन प्राप्त होइत अछि। ताहिमे महापंडित, महाकवि लालदासक नाम अबैत अछि। महाकविक लेखन ओ चिन्तन मूलतः लौकिक-अलौकिक, संस्कृति वा पौराणिक इतिहासक क्षेत्रसँ सम्बद्ध रहल अछि। ई सृजनात्मक साहित्यक रचना आ काल साहित्यक विवेचनक प्रति अत्यन्त सजग देखल जाइत छथि। हिनक रचनामे बुझि पड़ैत अछि जे ई दायित्वपूर्ण सामाजिक कर्मक प्रति सजग रहलाह अछि। कविवर अपन साहित्यमे व्यक्तिवादिताक नञि अपितु सामाजिकताक पक्षधर छलाह। भाषाकेँ एक सामाजिक सम्पत्ति आ लेखनकेँ सामूहिकताक सामाजिकताक पक्षधर छलाह। भाषाकेँ एक सामाजिक सम्पत्ति आ लेखनकेँ सामूहिकताक अभिव्यक्ति माध्यम बनौलैन्ह। हिनक महत्वपूर्ण रचना सभमे साहितियिक महत्व देखबामे अबैत अछि। साहित्य एकक नञि अनेकक होइत अछि। ई जन-जनक साहित्य अछि। साहित्यमे अभिव्यक्त भावना लौकिक परिधिसँ सम्बन्ध राखएवाला व्यवहारिक अभिव्यक्तक भावना जन-जनक अछि। कवि जखन साहित्यक माध्यमसँ अभिभूतकेँ रूपायित करैत छथि तऽ ओकर अनुभूति मात्रक अर्थमे जन-सामान्यक लेल रहैत अछि अओर ई जन सामान्य लोकहितक भावनासँ लौकिक-आलौकिक विशेष विधिक द्वारा हिनक रामायणमे परिलक्षित होइत अछि। महाकवि सम्मानक रूपसँ 'पंडित' सम्मानसँ विभूषित छलाह। किएक तऽ ई अपन विद्धता, सदाचार, नियनिष्ठाक प्रति सजग रहैत छलाह तैँ ब्राह्मणमे मूर्धन्य विद्वान लोकनि हिनका 'पंडित' कहए लगलथिन्ह। एहि विशिष्ट रामायणक प्रणेयता पंडित महाकवि लालदासक जन्म मधुबनी जिलाक खड़ौआ गाममे प्रतिष्ठित कर्ण कायस्थ, रत्नदेव वीजी पुरुषक परिवारमे 1856मे भेलैन्ह, हिनक पिताक नाम बचकन दास (बच्चु दास) छलाह।

कविवर लालदास महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारक रत्न छलाह। हिनक प्रमुख रचना 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' अछि। एकर अतिरिक्त हिनक 17 गोट रचना अछि। सांगसप्तशती, दुर्गाक टीका चण्डीचरित अर्थात् सप्तशती दुर्गा, स्त्रीधर्म-शिक्षा, गणेशखण्ड, महेश्वर-विनोद वा गौरी शम्भू विनोद, हरिताली व्रतकथा, वैधव्य-भजनी अर्थात् सोमवारी व्रत कथा, विरूदावली, गंगामहात्म्य, जानकी रामायण, श्रीमद्भगवत्गीता, ब्रह्मोत्तर खंड, राधाकाण्ड, लक्ष्मीकाण्ड (गद्य) सावित्री-सत्यवान (नाटक) तथा स्त्रीधर्म शिक्षा। हिन्दीमे मिथिला-महात्म्य अछि। 'रमेश्चरित मिथिला रामायण' 1944मे प्रकाशित भेल। एम्हर मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1971मे 'सावित्री-सत्यवान' नाटक आ 1980मे 'जानकी रामायण' प्रकाशित कएल गेल अछि। आन कृति सभ बहुत पूर्व प्रकाशित भेल जे आब दुर्लभ भऽ गेल अछि।

महाराज रमेश्वर सिंहक कालमे आश्रयदातामे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक ओ धार्मिक कृतिक रूपमे विभिन्न ग्रंथक निर्माण कएलैन्ह। महाराज रमेश्वर सिंहक बाद प्राच्यशिक्षासँ समन्वित दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, विद्वान, दार्शनिक ओ तंत्र-मार्गक साधक छलाह। शक्तिक महान उपासक छलाह।

भारतीय संस्कृति ओ जीवन पद्धतिक महान सम्पोषक छलाह। सेवा भावसँ सेवक रहितों महाराजक आ कविवरक मनोवृत्तिक रूचि-विचारमे समानता छल। तंत्र, पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड आदिक ज्ञाता होएबाक संगहि श्रेष्ठ कवि छलाह। हिनका 'धौत सम्मान' तथा 'पंडित'क उपाधि भेटल छलैन्ह। हिनक देहावसान 1930मे भेलैन्ह।

कविवरक जीवनमे अद्भुत संयोग देखल गेल अछि। हुनक जन्म-विवाह अओर मृत्यु तीनू एक्के दिन, एक्के पक्षमे भेल छलैन्ह, कृष्ण पक्षक तृतीया रवि दिन। बाल्यावस्थाक बहुभाषी शिक्षा-दीक्षाक कारणेँ संस्कृत, अरबी, फारसी आदि ज्ञान छलैन्ह, जाहिसँ बहुभाषाविज्ञक रूपमे ख्याति प्राप्त भेलैन्ह। अनेक भाषाक ज्ञान रहितो अपन भाषामे रामायणक रचना कऽ मातृभाषाक प्रति असमी अनुराग, श्रद्धा ओ भक्ति, अजस्त्र भक्ति भावनाक, लौकिक-अलौकिक भावनात्मक सृजन क्षमता कुटि-कुटिकेँ भरल छलैन्ह। भाषाक प्रति अपन श्रद्धा देखबैत रामायणमे कहने छथि—

निज भाषा जननी निज देश।
स्वर्गोसँ जानथि जन वेश।।
तैँ हम कथा कहब तेहि रीति।
नहि विधा कविता-गुण-गीति।।
मिथिला भाषा मधु-माधुर्ज्य।
शेष शारदा कह प्राचुर्य।।

रामायणक विशेषता रोचक आ मोहक संसारसँ संबंध राखयवला व्यावहारिक लौकिक परिवेशमे लालदासक रामायणक आधार बाल्मिकीय रामायण अछि। मुदा हिनक रामायणमे सीताक चरित्रक प्रधानता अछि। एहिमे सीताक अलौकिक शक्ति-स्वरूपक वर्णन कएल गेल अछि। सीताकेँ अद्भुत लोकोत्तर असाधारण नारी शक्तिक रूपमे देखओल गेल अछि। एहिमे सहस्त्रमुख रावणक

वर्णन आ रावण वध, सीता द्वारा कहल गेल अछि। हिनक रामायण मे 'पुष्कर काण्ड' एकटा अतिरिक्त वर्णित अछि। एहि रामायण मे तंत्र साधनाक बेसि प्रभाव आ अराध्य शक्तिक अलौकिक वर्णन भेल अछि। पुष्कर काण्डमे अतिसाधारण वर्णन चमत्कार देखबामे अबैत अछि। राम रावणक वध लेल उत्पन्न भेल छलाह। एहि प्रमुख कार्यकेँ एहि रामायण मे लुप्त कऽ देल गेल अछि। पुष्कर काण्ड रामायण आकर्षणकेँ समाप्त कऽ देने अछि। एहिमे कोनो घटनाक स्पष्ट संकेत नञि भेटैत अछि। लव-कुशक जन्म, सीताक वनवास, सीता द्वारा धरतीमे प्रवेशक उल्लेख हिनक रामायणमे कएल गेल अछि। सीताक विशेषता देखाबैत कविवर सीता द्वारा सहस्त्रमुख रावण क संहारक वर्णन अछि। एहि रामायणमे राम द्वारा काली-सीताक स्तुति आ देवता लोकनि द्वारा सीतासँ वर प्राप्तिक संग रामायणक कथा समाप्त होइत अछि।

कविवरक रामायण, बाल्मिकीय रामायणसँ प्रभावित रहलाक कारणेँ रमणीय स्थल सभहक चित्रणमे अधिक श्रम बुझि पड़ैत अछि। लौकिक वर्णनमे बालकाण्डमे रामक कोबर घरक हास-परिहास अओर विविध कौतुकक विस्तृत वर्णन अछि। एहि प्रकारेँ सुर्पनखाक चित्रण, सिताहरणक बाद वसंतक वर्णन, रामक विलाप, सुन्दरकाण्डमे हनुमानक सुक्ष्मरूप धारण करब आदि-आदि एहि रामायणमे वर्णन कऽ कवि श्रृंगार रसक पराकाष्ठा पर पहुँज जाइत छथि।

भाषाक प्रसंगमे रमानाथ झाक मन्तव्य छैन्ह जे, "कविवरक रामायणमे ओहन भाषाक प्रयोग भेल अछि जेहन साधारण लोक भाषा बजैत अछि। संस्कृत शब्दसँ अवंच नहियो रहैत तत्सम शब्दक स्थानमे तद्भवक प्रयोग करैत छथि, से ठाम-ठाम शब्द प्रयोग भेल अछि जे खूब प्रचलित नञि अछि। निष्कर्षतः कहल गेल अछि जे—वाक्य विन्यासमे ठाम-ठाम प्रसाद गुण ओझराए गेल अछि आ तैँ एहि सब दृष्टिसँ भाषामे ओ प्रवाह नञि देखैत छी जे कवीश्वर चन्दाझाक रामायणमे अछि। वर्णनमे चमत्कार अवश्य अछि मुदा कथोपकथनमे ओ स्वाभाविकता नञि अछि, ओ सजीवता नञि अछि जे वस्तुकेँ रोचक बनाए देत।"

कविवरक रामायणमे वैदिक मान्यताक संग समन्वय स्थापित करबाक सफल प्रयस भेल अछि। ई शाक्त भावनाक सूत्रपात कऽ एकटा नवीन परम्पराक सूत्रपात मिथिलामे कएलैन्ह। एकर प्रभाव मिथिलामे अन्यान्य रामायणमे कऽ ओ मैथिली साहित्यकेँ एहन वस्तु देल जे मैथिली साहित्यक उत्कर्षकेँ बढ़ौलक। संगहि महाकवि अपन एहन छाप छोड़ि गेलाह जे जाबति सूर्य-चन्द्रमा रहत ताबत हुनकर नामकेँ आलोकित करैत रहत। ओ अपन मातृभूमि पर प्रेम अभिव्यक्त करैत कहैत छथि—

नैहर हमर सुमिथिला देश।
अतिप्रियकर की कहब विशेष।।



कवि, विद्वान पर देखल गेल। कविशेखर बदरीनाथ झा अपन 'एकावली परिणय'मे शक्ति महिमाक प्रतिपादन कएलैन्ह। सीताराम झा 'अम्बचरित'मे सेहो शाक्त भावनासँ प्रेरित भेलाह। वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' अपन 'सीतायन'मे सीता चरित्रक प्रधानता देलैन्ह।

कपिलेश्वर झाक 'सीतादाई, आनन्द झाक 'सीतास्वयंवर'मे मिथिलाक शाक्त भावना उद्भाषित भेल अछि। वाल्मीकि अपन रामायणमे नवीन दृष्टि अपनौने छथि से दृष्टि एहिमे नञि प्राप्त भेल अछि। लालदास युग-युगक सामाजिक आदर्शक आकलन अपन रामायणमे केलैन्ह अछि। कारण हुनक दृष्टि मानवतावादी छल। लौकिक-अलौकिक व्यवहारक परम्परागत भावक उपयोग अपन रामायणक अद्भुत, असाधारण व्यवहारिक पक्षमे विचारधारक दृष्टिऐं हम पबैत छी जे हिनक रामायणमे लौकिक-अलौकिक जे वर्णन भेल अछि, ताहिमे देशक मर्यादाक स्थापना, दुराचारक निवारण, मातृभाषाक ओ मातृभूमिक प्रेमक उद्गार सामाजिक समास्यक वातावरण क निर्माण, भ्रष्टाचार ओ दुराचारक सम्मान आदिक प्राप्ति देखबामे अबैत अछि। संगहिं भारतीय संस्कृतिक प्रसारकेँ नकारल नञि जा सकैत अछि। एहिमे ईश्वर लीलासँ बेसी सीताचरितामृत बेसी भेल अछि जे नारीकेँ शिखर पर चढ़ा देलक अछि।

लेखिका अध्यक्ष, विश्वविद्यालय मैथिली, विभाग, पटना विश्वविद्यालय छथि।

सीताक चित्रणमे महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य



❑ डॉ. रंगनाथ दिवाकर

राम काव्य परम्परामे प्रायः रामक शील - शक्ति - सौन्दर्य समन्वित हिमाद्रि - तुंग - शृंग विराट व्यक्तित्वेक प्रधानता अछि। सीता मात्र हुनक सहचरी रूपमे चित्रित छथि। सर्वत्र 'रामक सीता' वला भाव उत्कीर्ण भेल अछि। सर्वप्रथम रामक विराट व्यक्तित्व आ उच्च कुलपर रघुवंशम् केर सीता निर्वासन प्रसंगमे महाकवि कालिदास प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। लक्ष्मण जखन राम द्वारा सीताक परित्याग आ निर्वासन केर कथा सीताकेँ सुनबैत निर्जन वनमे असगर छोड़ि प्रस्थान करैत छथि तखन सीता प्रश्न करैत छथि -

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ
विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवाद् श्रवणाद्हासीः
श्रुतस्य किं तत्सदृशंकुलस्य।(रघुवंशम्, 14/61)

भाव जे अहाँ राजा (राम)सँ हमर वाणीमे पूछब जे जखन ओ अपना समक्ष अग्निपरीक्षामे हमरा विशुद्ध पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि हमर त्याग कएलन्हि। ई कृत्य की हुनक उच्च कुलक अनुरूप आचरण भेल?

रामक विराट व्यक्तित्व आ उच्च रघुकुलपर उठल ई प्रश्न यथार्थमे रामकथामे अत्यन्त विरल अछि। 14म शताब्दीमे असम-त्रिपुराक महाराज महामाणिक्यक अनुरोधपर माधव कन्दली द्वारा रचित रामायणमे रावण वधक बाद राम सीताक पवित्रतापर सन्देह करैत हुनक परित्यागक विचार करैत छथि आ सीतासँ लक्ष्मण-भरत वा विभीषण-सुग्रीवमे कोनो एककेँ वरण करबाक लेल कहैत छथि। एहिपर सीता कुपित होइत रामक खिधाँस करैत छथि -

दुबरि वचन शाले शालिलेक हिये।
धीरे धीरे बुलि लन्त जनकर जीये।
उत्तम कुलत मोक बापे बिया दिल।
आमाक इतर नारी सम देयिलाहा।
न सुमरा मोर एक दिबसर गुण।
निर्दय पुरुष जाति किनो निदारुण।

(माधव कन्दली रामायण, गुवाहाटी, 1972, पृष्ठ 449-50)

15म शताब्दीक कृत्तिवासक बंगला रामायणमे सीता अपन अपमानपर रामकेँ बड्ड बात-कथा कहैत छथि। आश्चर्यजनक अछि जे सीताक नैहर नेपालमे लोक नृत्य नाटिकामे रावणक चित्र बनबैत देखि राम लक्ष्मणसँ सीताक वनमे लऽ जा हुनक हत्या करैत हुनक माउस आनबाक आदेश दैत छथि। लक्ष्मण हरिण मारि ओकर माउस आनि दैत छथि। लक्ष्मण रान्हल माउस भक्षण अस्वीकार करैत छथि (**श्री आर पी लामाक आलेख, उद्धृत सीता चरित- उमाकान्त झा, मैथिली अकादमी, पटना, 2021, पृष्ठ 9**)। ई रामक प्रति आक्रोशक स्तर अछि। सीताक अग्निपरीक्षा आ परित्यागसँ रामक उज्ज्वल चरित्रपर करिखाक रेख अवश्य लगैत अछि भले रामकाव्य परम्पराक विद्वान् एकरा सीताहरणसँ पूर्व अग्निदेवक संरक्षणमे राखल सीताक आपस लेबाक योजना, जन भावनाक सम्मान आ राजधर्मक बाध्यता आदि केर जे शब्दजाल बुनथि। सीता निर्वासनकेँ डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' 'पराशर'मे अभिनव रूप देबाक प्रयास कयलन्हि। राम अश्वमेध यज्ञ करबाक नेयार करैत छथि। सीता एकरा अहंकारक प्रकटन कहैत छथि -

जन-धन-बल सामर्थ्यक अहंकारे ने रहैछ
अश्वमेध सन यज्ञक जड़िमे।
अहंकार स्वयं थिक महापाप
पापसँ पुण्यक जन्म तर्कहीन असंगत।

(डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' : पराशर, ऋचापाठ, पृष्ठ 11)

सीता मिथिलाक चिन्ता करैत छथि जे मैथिल अश्वमेधक अश्व पकड़ि लेत आ भारी विनाश होयत। एहिसँ पूर्व हमरे मारि देल जाए। क्रुद्ध राम एकरा राजद्रोह मानि हुनका निर्वासित करैत छथि। कोनो आवरण देल जाए, कोनो शब्दाडंबर वा तर्क देल जाए, रामक ई कृत्य अनुचित छल। बिनु कोनो कारण पृच्छाकेँ सीधा निर्वासन! नञि ई कृत्य ओहि कालमे उचित छल आ नञि अखन भऽ सकैछ। विद्वान् सभहक जे आडम्बर होइत रहय।

एहि कृत्यसँ रामक चरित्र स्खलित भेल अछि। ई सत्य जे रामकाव्यमे सीता चरित्रक उन्नयन केर बिम्ब अत्यन्त विरल अछि आ सर्वत्र 'रामक सीता' वला भाव अछि। महाकवि लालदास एहि भावसँ इतर 'सीताक राम' आ 'जैं सीता तैं राम' वला भावकेँ स्थिर कएलन्हि। बिनु कोनो प्रतिकार कएने, बिनु रामकेँ कोनो अपशब्द कहने, बिनु कोनो तरहक अप्रीतिकर प्रसंगक उद्‌भावना कएने ओ अत्यन्त सरलता आ सहजतासँ सीताक श्रेष्ठता साबित कएलन्हि। ई महाकवि लालदासक अनुपम वैशिष्ट्य अछि। आगाँ ई स्थापना आर फरीछ होएत।

लालदासक सीता लक्ष्मीक अवतार छथि -

लक्ष्मी जखन लेल अवतार।
मिथिला देश भेल उजियार।।
वैकुण्ठक जे विभव विलास।
आबि कयल मिथिलापुर वास।।
सुरतरु सुर वैकुण्ठक अंग।
सभ मिथिला अयला श्री संग।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 49)

सीताक रहस्य अनावृत करैत नारद कहैत छथि -

सुनु सुनु हे मिथिला महराज।
गोपनीय कहयित छी आज।।
ई नहि प्राकृति कन्या भूप।
थिकथि स्वयं लक्ष्मी अनुरूप।।
हरिक योगमाया दृढ़ जानु।
जगत् स्वरूपा हिनकहि मानु।।
जगमे जे भासित अछि रूप।
सभमे हिनके तेज अनूप।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 52)

सीताकेँ वाम हस्तसँ पिनाक धनुष उठा दहिना हाथसँ भूमि साफ करैत देखि जनकजीकेँ सीताक योगमाया स्वरूपक भान होइत अछि -

अनायास निपितहि धनु धाय।
बामहि करसौँ लेल उठाय।।
बाम हाथ धनु अवनत माथ।
नोचथि तृण कुश दहिना हाथ।।
अयला नृप कयनहि अस्नान।
देखि चकित कृत मन अनुमान।।
शिवधनु उठि नहि ककरो बूत।

से सीता धयलनि अजगूत।।
बुझलहुँ निश्चय दृढ़ अनुमान।
थिकथि योगमाया नहि आन।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 55)

लालदास एहि रहस्यकेँ जनितो सीताकेँ सहज मानवीय गुणसँ ओतप्रोत रखने छथि। वनगमन काल ओ स्पष्ट कहैत छथि जे जौँ हमरा संग नञि लेब तऽ हम प्राण त्यागि देब -

हम जानल पतिसेवा सार।
तेहि बिनु थिक असार संसार।।
अहँ बिनु हमर रहत नहि प्राण।
अहीं करब विपिनहुँमे त्राण।।
जौँ प्राणेश संग नहि लेब।
एहि खन प्राण त्यागि हम देब।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 116)

सीताक चरित्र चित्रणमे रामकाव्य परम्पराक स्वर प्रायः समाने अछि। सीताक परित्यागपर कतहु-कतहु किछु आक्रोश अभरल भेटैछ। कवीश्वर चन्दा झा एकरा अनीति कहैत छथि -

कहलनि मुनि वाल्मीकि विचारि।
सती शिरोमणि सीता नारि।
त्यागल पर-अपवादक रीति।
अहह रघूत्तम कयल अनीति।।

(चन्दा झाक रामायण, उत्तर काण्ड, पृष्ठ 406)

मुंशी रघुनन्दन दास सेहो सीताक निर्वासनपर आक्रोश प्रकट करैत छथि-

भू-सुता राजर्षि जनकक ललिता सुकुमारि।
जे अजन्मा पतिव्रता छथि अति प्रशंसित नारि।।
दिव्यमे कुलपति समक्षहिँ अग्नि शोधल जाहि।
भ्रष्ट ज्ञानक भावनासँ की तेजब थिक ताहि।।

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, वीर बालक, पृष्ठ 250)

जनक कहु सीता पवित्र अग्नि शोधित भेलि।
इतर जनक क्रोधित कथनपर वास वन की देल।।
नीति रघुवंशक प्रशंसित अहँक सन गुरु पाय।
तदपि मम दुहिताक दुर्गति कएल की बुझि न्याय।।

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, पृष्ठ 273)

सीतायनमे ई आक्रोश वाल्मीकि केर कामना रूपमे अछि जे बादमे सिद्ध भेल आ रामदलकेँ सीता परित्यागक मोल अपन पराजयसँ चुकबय पड़ल -

वाल्मीकिक मनमे छल कुश लव
हय पकड़ि घोरतर युद्ध करथि।
रिपुसूदन भरत लखन राघव तनकेँ
शरसँ से विद्ध करथि।

(वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' : सीतायन, तेसर सर्ग, पृष्ठ 604)

कुश रामसँ कहैत छथि, "पौरुषहीन पुरुषकेँ जगमे प्रशंसा नञि भेटैछ, जे पवित्र गर्भिणी सतीकेँ भयंकर वनमे बाघ-सिंहक भोज्य बना पठा देलक जौँ अहाँ वएह राम छी तखन सीता परित्यागक पापसँ पराजित अहाँ अवश्य होयब।" ओ म्रियमाण राम सहित चारू भाएक वस्त्र उतारि लैत छथि। सीता वस्त्र चीन्ह दूनू पुत्रकेँ गंजन करैत छथि फेर युद्ध क्षेत्र आबि कहैत छथि -

जँ हो निश्छल प्रेम हमर, सीता सतीत्व जँ साँच।
जागी एहि द्रुत निद्रासँ, भऽ जाय पुनः ई जाँच।।

(वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' : सीतायन, पृष्ठ 616)

माएक अपमान केर प्रतिशोध लैत ई चित्र मैथिली साहित्यमे विरल अछि। कालीकान्त झाक हनुमान चरित् सेहो मैथिलीक दुग्ध-शक्तिक परिचय दैत अछि जखन हनुमान कहैत छथि -

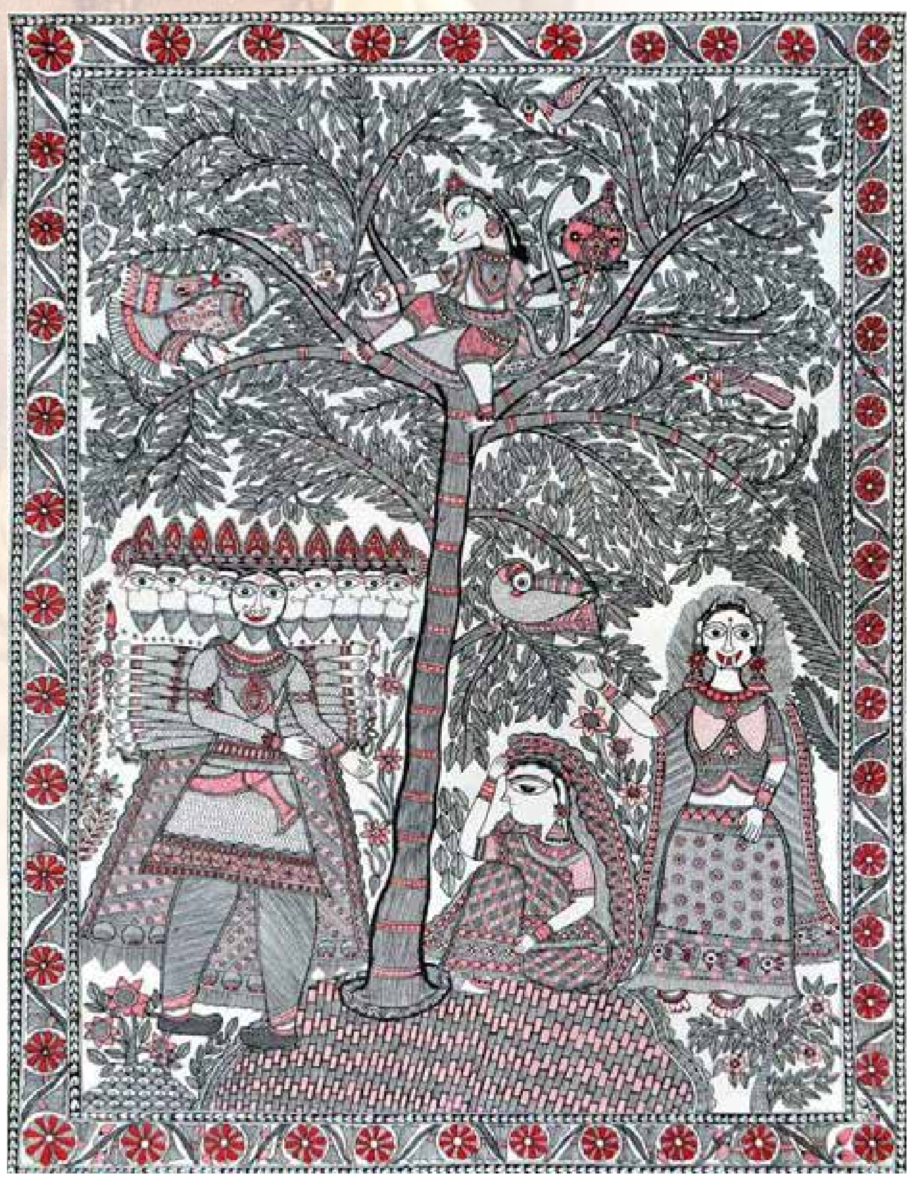
अंजलिबद्ध मुदित मारुति कह 'अम्ब न हमर पराभव।
कोटि विजयसँ अधिक नीक दुइ अनुजक हाथहि हारब'।।

(कालीकान्त झा : हनुमान चरित्, पद 39)

रघुवंशम् केर अच्युतानन्द दत्त द्वारा भेल मैथिली अनुवाद **सीतादाई**मे सीता अपन परित्यागक दोष स्वामीकेँ नञि दऽ निज भाग्यकेँ दैत छथि -

हमर त्याग अपना इच्छासौँ कयल न ओ मतिमान।
हमरे जन्म-जन्ममे सम्पादित अछि जे बड़ पाप
तकरे फलसौँ ई हमरा भेटल अछि दुस्तर ताप।।

(सीतादाई : पृष्ठ 119)



खड्गवल्लभ दास 'स्वजन' केर सीता एहि भाव केर प्रतिबिम्ब छथि। रामक अश्वमेध यज्ञमे वाल्मीकिकेँ शिष्य सहित आमंत्रण भेटल अछि। ओ सीतासँ कहैत छथि -

हमहुँ निमंत्रित भेल छी संग सकल शिष्य कुमारकेँ।
जैबाक चाही संग कऽ लव-कुश दूनू सुकुमारकेँ।।

(खड्गवल्लभ दास 'स्वजन' : सीताशील, पृष्ठ 208)

सिया सुकुमारी ई सुनि मुदित छथि जे कुश-लव सेहो जएताह। ओ वाल्मीकिसँ कहैत छथि -

जौँ पूछि बैसथि नाथ अपना नारिकेँ सम्बन्धमे।
कहि सुनेबनि सिय तपस्विनी संग छथि आनन्दमे।।

मिथिलाक राजकुमारी आ अयोध्याक महारानी सीता पति राजा रामचन्द्र आ समस्त राजवैभवसँ हीन दूर वनमे अभावमे रहैत कहुना जीवन व्यतीत करैत छथि मुदा अपन पतिसँ अपन आनन्दक समाचार कहबाक लेल कहैत छथि। 'चाहैत छी हमहूँ खिधाँस नै होनि प्रिय प्राणेशकेँ' भाव रखैत छथि। एहन मर्मन्तुद दृश्य देखि-सुनि ककर कोँढ़ नञि फाटत!

सीता चरित्र चित्रणमे मैथिलीक रचनाकार सभहक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवदान अछि। ई सत्य अछि जे सबकेँ अपन-अपन क्षेत्रमे अलग-अलग विशिष्टता प्राप्त भेल मुदा ई कहबामे कोनो द्वैत नहि अछि जे सीताक चरित्र चित्रणमे सबसँ पैघ सफलता लालदासेकेँ भेटल। पुष्कर काण्ड केर परिकल्पना एहि अभिनव विशिष्टताक आधार अछि।

दशानन विजयक बाद अयोध्यामे पैघ बैसार भेल आ ओहिमे रामक जय-जयकार भेल। मुनिगण केर अतिशयोक्तिपूर्ण स्तुतिगान सुनि सीता हँसय लगलीह। सभहक आग्रहपर कहलैन्ह जे ओहि दशाननकेँ तऽ हम पहिने मारि देने छलहुँ।

ई रावण छल मृतक शरीर।
मृतक मारि क्यौ हो नहि वीर।।
बुझि पड़ल परिहास समान।
तैँ हँसलहुँ नहि कारण आन।।
पूर्व रहय रावण बलवान।
त्रिभुवन जीति बढ़ाओल मान।।
जखन हमर दृगगोचर पड़ल।
तकर शक्ति सभटा हम हरल।।
तखनहिसौँ भेल मृतक समान।
रहल न तकरा बलक विधान।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 408)

सीता अपन पूर्व जन्मक इतिवृत्त, वेदवती कथा, पुष्कर आ श्वेतद्वीप केर कथा, दशानन आ सहस्रानन केर कथा आदि कहैत अपन परिचय दैत छथि -

हमरा नहि हरलक लंकेश।
हमही हरल प्राण धन वेश।।
हमहि अग्निकाँ शक्ति बढ़ाय।
लंका नगर देल जरबाय।।
सेतुबान्धमे हमरे युक्ति।
देल जलधिकाँ हमही शक्ति।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 413)

जौँ सहस्रानकेँ मारि सकी तऽ ई शौर्यक कथा अवश्य भऽ सकैछ। राम सदल बल श्वेतद्वीप लेल प्रस्थान कएलन्हि। आधा समुद्रमे अशोथकित भेलाह। रथ उबडुब करय लागल। लक्ष्मण सीताक स्तुति करैत सुमिरय लगलाह -

त्राण करू हे प्रकृति प्रधान।
अहँक कृपा बिनु नहि कल्याण।।
अहिँ सभक छी प्राणाधार।
सदा अहिँक सभमे व्यापार।
सकल सृष्टि अछि अहिँक अधीन।
अहिँक दया बिनु सभ छी दीन।।
महालक्ष्मि अहिँ वैष्णव शक्ति।
सकल सृष्टिमे अहिँक विभक्ति।।
अहिँ आधार शक्ति जगदम्ब।
अहिँ छी सभक प्राण अवलम्ब।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 415)

सीता बजरंग बलीकेँ बजाए सबकेँ अयोध्या आनल। फेर सभ श्वेतद्वीप लेल चलल। ओतऽ पहुँचि सहस्रमुख केर विशाल घंटाकेँ रामदल कहुना बजा सकल। सहस्रमुख एकहि प्रहारमे सबकेँ अयोध्या पहुँचा देलक। राम लाजे कठौत भेल छलाह। बादमे पुष्पक विमानसँ सभहक संग सीता सेहो श्वेतद्वीप चललीह। जाहि घंटाकेँ बजेबामे सभहक घाम चुअल छल ओकरा सीता अपन लीलासँ सहजतासँ बजा देलैन्ह। भयंकर शब्द भेल। सहस्रमुख रावण घंटाक ध्वनि सुनि बाहर आबि भयंकर युद्ध कएलन्हि आ अन्तमे रामक वक्ष विदीर्ण करैत ओकर वाण पाताल चलि गेल। राम संज्ञाहीन भऽ पुष्पक विमानपर अचेत खसि पड़लाह। सीता सभटा देखि रहल छलीह। रामक दुर्दशा देखि वैदेही विकराल शरीर धारण कएलन्हि। अपन रोमकूपसँ अनन्त मातृका सभहक सृजन कएलन्हि आ सहस्रमुख रावण केर संहार कएलन्हि। राम होशमे आबि देखैत छथि -

तखन देखल राम रणमे कालिकाक स्वरूप।
खड्ग खप्पर वर अभय कर जीभ दन्त अनूप।।
शव स्वरूपी शिव हृदिस्थिति मुक्त कबरी भार।
मुण्डमाल विशाल उर कटि किंकिणी कर हार।।
चलित रसना भीम दशना उदर अति गम्भीर।
नयन कदली कोश सम दुहु भीम रूप शरीर।।
जगत् ग्रासक आस कयने कतहु चयन न अङ्ग।
कोटि-कोटि विचित्र रूपिणि मातृकागण सङ्ग।।
नृत्य करयित सबहि खेलथि गेन रावण मुण्ड।
पद प्रहारेँ जाय जहँ शिर धाब योगिनि झुण्ड।
लोक क्षोभित सतत सुनि सुनि अट्टहास कराल।
कयल काली समर कौतुक कहय कहँ धरि लाल।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 436-37)

सीताकेँ एहि महाकाली रूपमे देखि विस्मित राम हुनकासँ परिचय पूछैत छथि। एहिपर सीता कहैत छथि -

हमरा जानब परमा शक्ति।
हमहि करै छी सृष्टि विभक्ति।।
नाशरहित नित्या हम एक।
हमरहिसौँ ई जगत् अनेक।।
हमही छी परमात्मा रूप।
विद्याऽविद्या हमर स्वरूप।।
महिमा हमर परम विस्तार।
बन्धन मुक्त करी संसार ।।
विधि शंकर भगवान अनन्त।
पाबथि हमर केऔ नहि अन्त।।

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 438)

फेर राम सीता सहस्रनामसँ सीताक स्तुति करैत सामान्य स्वरूपमे अयबाक अनुरोध करैत छथि। रामक करबद्ध अनुनय-विनय मानि सीता अपन सामान्य रूपमे अबैत छथि। सीता द्वारा रामक प्राण रक्षा आ राम द्वारा सीताक स्तुतिगानसँ महाकवि लालदास 'जेँ सीता तेँ राम' केर अभिनव जयघोष करैत छथि। ई प्रसंग मैथिली रामकाव्य परम्परामे प्रथम बेर आयल अछि। सीता चरित्र चित्रण दृष्टिएँ महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य अनुपम अछि! विलक्षण अछि!! एकर कोनो परतर नहि अछि!!!

लेखक प्रख्यात स्तम्भकार, अओर मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार छथि।

लालदासक देवी भावना



❑ *डॉ. परमानन्द लाभ*

समस्त भारत, विशेषकर मिथिलाक सम्पूर्ण वाङ्.मय जगजननी माए जानकीक आदर्शसँ अपनाकेँ धन्य मानलक आ पवित्र भेल अछि। जानकीकेँ भूमिजा, आयोनिजा आ सीता सेहो कहल गलैन्ह अछि। मिथिलाक कोनो घर एहन नञि हैत जाहिठाम देवी रूपमे हिनक पूजा नञि होइत हेतैन्ह। एहि माटिमे जन्म नेनिहार प्रत्येक ललना सीता वा सीताक प्रतीक मानल जाइत छथि। धरतीसँ उत्पन्न, धरतीमे समयनिहारि सीता मिथिलाक राजा जनकक तनुजा छलीह, बेटी छलीह।

महाकवि अपन रामायणमे सीताक महिमाक वर्णन कएन छथि। संसार जनैत अछि जे भगवान श्रीराम सर्वव्यापी आ सर्वशक्तिमान छथि, सेहो सीताक गुणगान एहि शब्दमे कएने छथि—

सीता-ध्यान निरत एहि भाँति।
जगले विभु रहला भरि राति।।
मनबथि कखन होयत विधि प्रात।
देखब सीता मुख अवदात।।
हाय हमर मन गेल हेराय।
सीता लय गेलीह चोराय।।
होइत प्रात जायब तेहिठाम।
गिरिजा मठ लग फुलहर गाम।।
ध्रुव सीता अउतीह तेहिठाम।
नयन सफल होयत अभिराम।।

सीताकेँ एक दृष्टि देखबा लेल रामो आतुर छथि। कविक दृष्टिमे सीता नञि केवल मानवीय गुणक आकर थिकीह अपितु देवी रूपमे सेहो प्रतिष्ठित थिकीह—

रत्ने रत्नप्रिये रत्नेश्वरी रत्नवति रतिरेखे।
रामबल्लभे रघुपति पूज्ये रसमयि लेखे।।
रिपुमर्दिनी राजेश्वरि रोहिणी रामप्रिये रमणीये।
रुचि रूपिणी रुद्राणि रतिप्रिये रूपेश्वरी रति श्रीये।।

एहिप्रकारेँ देखल जाइछ जे कविवर लालदासक सीता अलौकिक गुणसम्पन्ना थिकीह। जानकी रामायणक प्रारंभहिंमे महाकवि सीताक प्रति अपन भाव एहि शब्दमे व्यक्त करैत छथि—

मूल प्रकृति सीता चरित, अद्भुत रतनक खानि।
अछि शोभित विधि भवनमे, कहयित छी हित जानि।।

आगाँ कहैत छथि—

सीता त्रिगुण प्रकृति प्रधान।
कारण सृष्टिक सएह निदान।
स्वर्ग-तपक से सिद्धिस्थान।
महती विद्या विद्याज्ञान।
ऋद्धि सिद्धि सम गुणमयि वेश।
निराकार पुनि गुणक न लेश।
सकल सृष्टिमे व्याप्ति रहथि।
ज्ञानी तनिकहि चिन्मयि कहथि।
कुण्डलिनी सृष्टिक आधार।
जगत चराचर तनिक विहार।
योगीजन तनिकहि धय ध्यान।
होथि सुखी लहि तत्वक ज्ञान।।

सीता अओर केयो नहि, शक्ति थिकीह, देवी थिकीह, सृष्टिक कारण थिकीह। इएह सीता त्रिपुर सुन्दरी, गौरी, काली छथि। हिनका तत्वज्ञ सएह जनैत छथि। राधारूप हिनके छैन्ह जनिक पूजामे लालदास, जे शाक्तक संग राधाभक्त ओ तांत्रिक सेहो छथि, सुमनार्पण एहि शब्दमे कएलैन्ह—

पूर्ण अंस लक्ष्मी अहाँ राधा नाम प्रसिद्ध।
ऋद्धि सिद्धि संग लय रहब ब्रजमे सहित समृद्धि।।

ई शक्तिस्वरूपा, प्राणधार छथि जनिका अधीन अपनाकेँ करैत कविवर कहने छथि—

प्राण प्रिये किय छी अहँ दीन।
जीवन हमर अहँक अधीन।
अहँ छी विश्वक प्राणाधर।
शक्ति स्वरूपा त्रिगुणाकार।।

अओर एहियोसँ बढ़िकऽ कवि कहैत छथि—

सभक देहमे अहँक निवास।
केयो नहि अहँसँ पृथक प्रकाश।।

कवि हिनक पूजा जगदम्बा रूपमे सेहो कएने छथि—

कंसक पहरा प्रबल छल सभ सुतलाह अचेत।
जगदम्बा मोहित कएल ककरहु रहल न चेत।।

अओरो शक्तिक रूपमे हिनक महिमाक बखान करैत महाकवि अपन जानकी रामायणमे लिखैत छथि—

हम अज्ञान सुनाओल ज्ञान।
क्षमा करब ई चूक अमान।।
सीता-रूपक दर्शन देल।
ब्रह्मानन्दक फल भल भेल।।

एतावता लालदासक रचनामे सीताक चित्रण सूक्ष्म भक्तिभावनाकेँ द्योतित करैत अछि। ओ सतत् हिनक अर्चनमे तल्लीन रहैत छथि।

भक्ति साहित्यक परम्परामे रचित महत्त्वपूर्ण अंग स्तुति काव्य थिक। प्रत्येक स्तुति भिन्न-भिन्न देवीक नामे अभिहित अछि। लालदास सेहो भिन्न-भिन्न रूपक स्तुति कएने छथि। एहि अर्थमे ओ शक्तिमय भऽ गेल छथि। रामायण लिखलैन्ह तऽ **रमेश्वरचरित**। सीता-लक्ष्मी-राधाक चरित्र **जानकी रामायण**मे जेना व्यक्त कएने छथि ओकरा एकटा तात्विक संचय कहल जा सकैत अछि। **श्रीमहालक्ष्मी सहस्त्र नामावली**मे ओ लिखैत छथि—

उर्ध्वगतिस्थिति ऋीश्वरि ऋषिपूज्ये ऋग्वर्णे।
ऋषि कन्ये ऋजु ऋद्धि प्रदे ऋतु ॠऌलृवर्णे।।
एके एक जननि एकादिश एकान्ते एकवीरे।
एकेश्वरी एकान्त निवासिनि एके एकशरीरे।।

रामकेर प्रार्थनापर काली अपन प्रचंडरूप त्यागि सौभाग्यरूपमे सीताक रूप धारण कएलन्हि, कविक उक्ति छैन्ह—

लीला हेतु धयल दुई देह।
ब्रह्म अंश दुहू निस्सन्देह।।

एहिप्रकारेँ कविवर लालदास ई बात प्रमाणित कएने छथि जे वैष्णव मत होइक वा शैवमत, शाक्तमतक संग कोनो विरोध नञि अछि। ई हिनक मौलिक चिन्तन छैन्ह। निष्कर्ष रूपमे कहल जा सकैछ जे मिथिलाक शाक्त भावना, जे अनन्तकालसँ मैथिलक बीच अबाधरूपसँ चलि आबि रहल अछि, ओहि परम्पराकेँ रामकाव्यमे उद्भाषित करबाक श्रेय महाकवि लालदासेकेँ छैन्ह।

लेखक अवकाशप्राप्त मैथिली विभागाध्यक्ष, डॉ. एस. एम. कॉलेज, समस्तीपुर, अओर मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार छथि।

कायस्थर्षि पंडित लालदासक 'महेश्वर विनोद' पर एकटा विहंगम दृष्टि



❑ विजय शंकर मल्लिक 'सुधापति'

लादासक एक नाम, जनमि खड़ौआ गाम मे।
कएल काज अभिराम, मातृ जानकी राखि हृदय।।
पोथी बीसो पचीस, लिखल 'रमेश्वर' राज मे।
अमर कएल निज नाम, रचि 'पुष्कर' रामायणे।।
त्रिदेव-देवीक संयोजिका, आधाक जतबा खेल।
से दोहा चौपाइ संग, सोरठा, गीतियें देल।।
महेश्वर विनोद संज्ञक सुधि, लालक छैन्ह महान।
पढ़िगुनि भेटल निचोड़ जे, 'सुधापति' बड़ दीयमान।।

उन्नीसम सदिमे मनबोध, कविवर चंदा झा, महाकवि लालदास, म.म. मुरलीधर झा, मुंशी रघुनन्दन दास ओ जीवछ मिश्र सन महामनीषी सभ एहि पृथ्वी पर मिथिला भूमिज भऽ मिथिला, मैथिलकेँ धनधन कऽ देल। हिनका सभहक अमूल्य योगदानक विवेचन हमरा सन लोक की करत? जौं तुलना करबेक प्रयास करी तऽ तुलसीदासक कहब याद परि जाइत अछि जे 'को बर छोट कहबा अपराधू'। एहि सभ सोच सँ अलहदा भऽ हम लालदासक **महेश्वर विनोद** पर आबैत छी।

कर्ण कुलोद्भव बचकन दासक सुपुत्र चूड़ामणि (राशिक नाम) जे बाद मे लालदास नामे प्रभासित भेलाह से धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ, शास्त्रानुरागी, अनुशासन प्रिय, नियम निष्टिक संग शाक्त आ भगवतीक अनन्य भक्त छलाह। ओ अपन अध्ययसाय, पूजा-अर्चना ओ भक्ति ताजीवन सभहक प्रिय छलाह। साहित्यिक रूचि शुरूए सँ छलैन्ह। भले पहिने छोट छीन जमिन्दारी कुलमे जन्मल होथु मुदा तकर निलामीक बाद आकि पूर्वो हुनक परिवारक लोक मिथिला राजक दरबारमे चाकरी करैत छलाह। हिनक पिता बचकन दास लक्ष्मेश्वर सिंहक राजमे नियुक्त छलाह। बचकन दासक विद्वता आ काजनिपुणता सँ मोहिता भऽ रमेश्र सिंह (लक्ष्मेश्वर सिंहक अनुज) अपना संग रखबाक जखन चेष्टा कहल तेहखन बचकन दास कहने रहथिन्ह, "अपन इमानदारीमे बट्टा लगायब नै राज्योचित, नै धर्मोचित आ नै कर्त्तव्यपरायणता हेतु उपयुक्त होएत। दोसर सहोदरमे दरारि उत्पन्न करब एक स्वामिभक्त लेल पाप थिक, अस्तु ई सम्भव नञि।" मिथिलेश रमेश्वर सिंहकेँ से नीक लगलैन्ह। तैँ हुनक पुत्र लालदासकेँ अपना संग रखबाक निर्णय लेल। 'उत्तम गाछक, उत्तम फूल' से लालदास अपना जीवनमे नीक जकाँ उतारल।

लालदास, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, फारसी भाषाक मर्मज्ञ छलाह। ओना दू गुरुजीसँ ओ संस्कृत आ फारसीक शिक्षा लेल, मुदा हुनक स्वाध्याय, लगन आ भक्तिभाव संग मानसिक परिपक्वता द्रुत गतियें शिखर धरि पहुँचबामे मददगार रहल। हिनक हस्तलेख स्वर्णिम ओ चित्रकला सेहो सतत् प्रशंसनीय रहल। शाक्त होइतो ओ वेद-वेदांग, शस्त्र-पुराण, कर्मकाण्ड सभहक मर्धून्य ज्ञाता छलाह। हुनक कार्यकलापसँ मुग्ध भऽ मिथिलेश्वर हुनका धोती-पाग-डोपटाक अलंकरणसँ विभूषित कऽ पंडित ओ कार्यस्थलिक उपाधि देलखिन्ह। हुनकामे कर्त्तव्यबोध, आज्ञाकारिता आ स्पष्टवादिता ओ हाजिरजबाबी कूटि-कूटि कऽ भरल छलैन्ह। ओ राजआज्ञाक पालन संग उचित-अनुचित ओ मर्यादाक निर्वाहक प्रति सहिखन सचेष्ट रहैत छलाह। हिनक पांडित्य, धर्मज्ञानसँ रमेश्वर सिंह ततेक अभिभूत रहलाह जे सदिखन अपना संगहि राखल। तीर्थ-वर्त संग नदी-नाला, पर्वत विहारमे राजा-रानीक संग सभतरि रहलाह लाल दास। द्वादश ज्योतिलिंग शक्तिपीठादि आ नद्यादिक भ्रमणक लाभ हुनक साहित्य साधनामे सभठां आ सद्यह दर्शनीय अछि। चतुर्दिक भ्रमणक प्रतिफले ज्ञान अनुभव, प्रामाणिकता ओ विशिष्टताक उपयोग हुनक लेखिनी आ रचनामे मिलैत अछि। राजदरबारसँ लऽ कऽ हवेली धरि अपन विद्वते सदिखन सम्मानित होइत रहलाह।

एहि आलेखक शुरूआतमे वर्णित हम अपन 'सोरठा'सँ लाल दासक अति संक्षिप्त परिचय आ पदमे **'महेश्वर विनोद'**क किछु झलक देल। ओना तऽ लालदासक रचनाक एक-एक पाँति किंवा चर्चित अठारहो पोथी हिनक सरलतम भाषा (देशज) आ किछु तत्सम ओ तद्भव केर भटफेर अछि। भाषाक सहजता, परिदृश्यक प्रमाणिकता ओ भगवतीक सहभागिता समग्रशीतलता प्रदान करैत अछि। **महेश्वर विनोद** गागर मे सागर अछि। रामेश्वर चरित्र मिथिला रामायण, स्त्री धर्म शिक्षा सँ लऽ कऽ सावित्री-सत्यवान नाटक किंवा ब्रह्मोत्तर खण्ड जे कुनु अठारहो-बीसों पोथी, सब एक पर एक अछि। विशेषता ई जे, जे पढ़व शुरू करब से अंत कऽ कें छोड़ब आ सभ किछु बिनु प्रयासे मानसमे घुसैत, जाएत, समझमे आबैत जाएत।

एहि पोथीकेँ कथानकक मादे लेखक द्वारा दू भागमे विभक्त कएल गेल अछि। पूर्वार्द्ध आ उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्धक कथानक एहि सोरठा पदसँ आँकल जा सकैत अछि -

निराकार संसार, अन्धकार शुन्य छल।
लेल शक्ति अवतार, भेल प्रकाश साकार जग।।

आगाँ लिखैत छथि—

चौपाई

आदिपुरुष अतिशय अभिराम।
महादेव भेल तिनके नाम।।
गौरवर्ण अति सुन्दर काय।
प्रभुता विभव कहलन्हि जाय।।
भेला तखन शंकर साकारा।
तमो गुणी ज्ञानक आगार।।

चौपाई

निर्गुण ब्रह्म दुई-देह।
प्रकृति-पुरुष आनन्दक गेह।।
दुहु मिलि सृष्टि कएल विस्तार।
कतविधि लोक बनल संसार।।
ई सभ भेद कियो नहि बूझल।
केवल शिवज्ञानी काँ सूझल।।

दोहा

जगदम्बा जगतारिणी, जगतपिता ईशान।
कयल विलक्षण युगल मिलि, विश्वक सृष्टि विधान।।

धयल देह पुनि तीन,
मूल प्रकृति त्रिगुणात्मिका।
देल शक्ति स्वाधीन,
तीनू देव प्रधान काँ।।

अर्थात्, सृष्टिक उत्पत्तिकर्त्ता ब्रह्मा, पालनकर्त्ता विष्णु आ संहारक महेश अपन-अपन कार्यभार संभारल। हुनका संगे सरस्वती, लक्ष्मी ओ गौरी स्वरूपे स्वयं जगदम्बा शक्ति प्रदान करैत रहलीह।

किछु समय पश्चात् हालाहल नामक दैत्यक अभ्यूदय भेल जे देव समाजक संग त्रिदेवकेँ प्रताड़ित करय लागला। ई लोकनि ओकरासँ भिरि गेलाह मुदा कामयाब नञि भेलाह। तखन गुप्त रूपेँ जगदम्बा ओहि दैत्यक शक्तिकेँ क्षीण कऽ देल आ ई लोकनि विजयी भऽ गेलरह। वास्तविकताकेँ नहि बुझि त्रिदेव युद्ध विजयक श्रेय अपन-अपन बूझि अपन-अपन पीठ अपने ठोकय लगलाह। एहिसँ जगदम्बाकेँ अपमानक अनुभव भेल आ ओ सभहक शक्ति घिंचि लेलीह। शक्तिहीन भेने तीनू देवक फुरफुरी बिला गेल। ई बात सांसारिक अछि जे 'ज्ञान आ सोचे दुःख आकि सुख'। विष्णु असोचे अनमना बनि क्षीर समुद्रमे निश्चिंत निफिकिर बनि शेषनाग पर शयन करय लगलाह। ब्रह्मा अपन कमलासन पर विराजि जप करय लगलाह, परञ्च अविनाशी शिवक ज्ञान तऽ विशेष रहैन्ह तैं ओ वेशी दुःखी भऽ गेलाह। दुर्गाक अन्तर्धान भेने ओ एकाकी बनि भुतिया गेलाह। स्थितिसँ छुटकारा पएबाक लेल कोन उपाय करी? तऽ सभगोटे अम्बिकाक आराधना केलैन्ह, अम्बिका खुश भऽ प्रगट भेलखिन्ह आ एहि विपतिसँ उबरबा हेतु स्वयं दक्षक घर पुत्रीरूपेँ जन्म लऽ शिवक अर्द्धांगिनी बनि एबाक वचन देलखिन्ह। कालान्तरमे स्वायंभू मनु अपन कान्या संग दक्षके बियाहल। जनिक नाम प्रसूति छल। दक्ष प्रसूतिसँ साठि कान्या आ पुत्रो भेल। सबसँ सुन्नरि गुणमती सती जे स्वयं जगदम्बाक रूप छलीह, येन केन प्रकारेण बहुत धमर्थनक पश्चात् दक्ष प्रजापति शिवकेँ दान कएल। जे होए शिव सतीकेँ लऽ कैलाश चलि गेलाह आ परम प्रेममे लीन भऽ गेलाह। लालदास कहैत छथि—

विश्वनाथ शिव जहँ वसथि,
केकर महिम बखान।
देखल विलक्षण गिरि सती,
सृष्टि आन सँ आन।।
कनक भवन मे आविके,
देखल अद्‌भुत चित्र।
विश्वबीज सृष्टिक निमित्त,
ईश्वर लिखल पवित्र।।

दोहा

चित्र विचित्र धराचरक, विद्यमान विस्तार।
सैह देखि ब्रह्मा करथि, सदा सृष्टि व्यापार।।

कैलाशमे दुहु प्राणी बैसि अतिथ्य आनन्दक अनुभव कऽ रहल छलाह, तऽ सती शिवसँ अमरकथा कहबाक जिद्द कऽ देलखिन्ह। शिव प्रसन्न भऽ अमरकथा कहय लगलाह। सती सुनय लगलीह। ओ अमरकथा आर किछु नहि वल्कि सम्पूर्ण रामायण छल। राम-सीताक कथा संगे सूर्यकुल आ मिथिकुलक वर्णन छल। रामभक्त शिव रामक सम्पूर्ण लीलाक वर्णन दृश्यानुभूति संग सतीक आगाँ प्रस्तुत कऽ देल। एतय लालदास संक्षिप्त मुदा पूर्ण रामायणक वर्णन सुन्दर भाषामे कएने छथि।

एकर बाद दक्ष द्वारा शिवकेँ अपमानित करनाय, नारदक कुटि चालि, सतीक नैहर जएबा लेल जिद्द, पतिक अपमाने असह्य भऽ शरीरक त्याग, शिवक दुःख, क्रोध, विरह आ विधुरतासँ उद्वेलित भऽ अपन जटा खेलि भूमि पर पटकब, वीरभद्रक प्रगट, वीरभद्र द्वारा दक्षक मूरी काटल, प्रसूतिक अनुनय-विनय सुनि दयानाथ शिव द्वारा छागरक मूरी जोड़ब, सतीक विरह वेबर्दाशत भेने सतीक शवकेँ कान्ह पर लऽ भरि संसार बौआयब, श्रीविष्णु द्वारा सुदर्शन चक्रसँ सतीक शवक अंग-प्रत्यंग काटब। सतीक शवमय शरीरक जे जे भाग पृथ्वी पर जतय खसल श्रीविष्णु द्वारा ओ स्थल शक्तिपीठ स्थापित भेल। महाकवि लालदास एकावन (51) शक्तिपीठक वर्णन अपन छन्द ओ सोरठाक स्वरूपेँ वर्णित कएने छथि। महेश्वर विनोदक पूर्वाद्ध एतिहये समाप्त भेल आब उतरार्द्ध। एहि खण्डक किछ प्रस्तुति देखल जाऊ-

द्वैर्थ कथा नारद कहल,
लौकिक ब्रह्मक पक्ष।
निन्दहि पश्चक अर्थ लघु,
बुझलनि दक्ष अलक्ष।।

दक्षक दुर्नय क्रिया अनर्गल,
सुनल शम्भु शान्तात्मा।
स्मित मुख नयनहि वेश कहल,
पुन क्रोध ने कयल परमात्मा।।

भावी कि भवितव्य, शक ककरा जे रोकि सकय।
हरि शम्भु चतुरानन, हाथ दुनु निज ठाढ़ करथि।।

उत्तरार्द्धक विषयवस्तु तीन भागमे बूझि सकैत छी। **पहिल,** शिव-पार्वतीक परिणय; **दोसर,** कार्त्तिकक जन्म अओर **तेसर,** तारकासुरक वध। जाहिमे मुख्य रूपेण शिव-गौरीक विवाह थिक, एकरहुँ लेल बड़ तिकड़म भेल।

दोहा

पूर्व दक्ष कन्या सती, शिवक प्रति व्रत बाम।
पितु अपमाने त्यागि तन अयलीह हिमगिरि धाम।।

चौपाई

पितृक कन्या मेना नाम।
अति सुन्दर गिरिराजक बाम।।
तनिक गर्भ पावन भल पावि।
बास कएल जगदम्बा आवि।।

पार्वती आनि गौरी महासुन्दरी, चंचला, तेजस्वनी छलीह। सखी-सहेली संग खेल-खेलैक लालदासक वर्णन—

चौपाई

खेलथि हँसथि सखीगण संग।
करथि वाल लीला कति रंग।।
मन्दाकिनिक बालुका आनि।

बनवथि वेदी से निज पाणि।।
कन्या बालक से कय गोट।
मृतिकामय बनवथि छोट छोट।।
सखि सभ खेलथि गावथि गीत।
कहल न हो हो बाला सुखप्रीत।।
मृतिका मय हर गौड्रिक मूर्ति।
बनबथि करथि रंग दय पूर्ति।।
अपनहि करबथि शिवक विवाह।
गौरकि संग सहित उत्साह।।

गौरी जुआन भऽ रहल आ शिवजी समाधिस्था बिनु ध्यान भंग भेने, बिनु रसावृत्त भेने विवाह तऽ सम्भवे नहि छल, आ नै विवाह बिनु पुत्रक जन्म (कुमार कार्त्तिकेयक) आ बिनु कुमारक तारकाक बध सेहो असम्भव छल।

कामदेव संसारक आ देवलोकक सुख शांति निमित्त रति संग नृत्य करैत समय पाबि पुष्पवाणसँ शिवक ललाट पर आघात कऽ देल, शिवजीक नेत्र खुजि गेल। आगाँ कामदेव परि गेलाह, ओ जड़िकऽ भष्म भऽ गेलाह। ओतहि गौरी फूलक माला आ पूजाक थारी लऽ ठाढ़ छलीह, शिवजी हुनका देखि मोहित भेलाह आ गौरीक वरण कऽ लेल। एम्हर रति वेसुध भऽ रूदन पसारि देल, शिवजीसँ पतिकेँ जियेवाक लेल गोहारि करय लगलीह। शिवजी ओकर काट बताओल आ कहल, "कामदेव चूंकि सुरगणक हितार्थ ई जघन्य अपराध कएल अछि, अस्तु ई बिनु शरीरकेँ तीनू भुवनमे रमैत रहताह, अहाँक संग सदिखन रहतताह।" आकाशवाणी होइत अछि जे शिव विवाह पश्चात् कोबर घरमे कादेवक शवक भष्म जौं शिवक शरीर पर लगा स्मरण करबा देल जेतैन्ह तऽ कामदेव जीवित भऽ जयताह। मुदा अपन पुनर्जन्म सशरीर द्वारपरक अन्तमे कृष्णक वंशमे प्रद्युम्नक रूपमे जन्म हेतैन्ह।

वसन्तु ऋतुक आगमन, कामक सम्मोहिन्नी बाणक असरसँ शिवक तंद्रा टूटल। तााहिकाल पार्वतीसँ भेटक अनुपम संयोग छल। वैदिक विवाहक हेतु शिव प्रेरित होइत छथि।

दोहा

शिव - *हमर धर्म संचित जतेक,*
आधा अहँ केँ देल।
अब जनु श्रम गिरिजा करीय,
कहु शुद्ध की भेल।।

चौपाई

गौरी - *वेद विदित कए ली अऽ विवाह।*
तेहि सँ कियो ने कह अधलाह।।
एखन जाय दीअ बापक धाम।
अपनहुँ आउ झटित ओहिठाम।।

ई सभ गप्प भेलाक आद शिव कैलाश आ पार्वती हिम गेह आबि जाइत छथि।

शिव कैलास आबि सप्तीर्षकेँ बजाबैत छथि आ विवाहक लौकिक विधि निर्वाहक भरि दैत छथि। तत्पश्चात् ऋषिगण हिमगिरी समक्ष आबि ववैवाहिक गतिविधि प्रारम्भ करबाक आग्रह करैत कथा मंजूरी लैत छथि। विवाहक दिन तय होइत अछि आ शिव-गौरीक विवाह मिथिलाक लौकिक व्यवहारे सम्पन्न तऽ अवश्य होइत अछि। मुदा शिव-गौरी विवाहक प्रसंगमे शिवक बरियाती आ शिवक रूपक लीला जगत प्रसिद्ध अछि। आनन्दमय विवाहक दृश्य उपस्थित होइत अछि। कवि लालदास एकर विस्तृत वर्णन कएल अछि। विवाह सम्पन्न भेला उत्तर चतुर्थी आदि सम्पन्न भेल। एहि बीच कोहबर घरमे विवाहक राति जखन शिव-पार्वती दुहु मौजूद रहथि, रति कोनो भेष धरि कोहवरमे पहुँचि, शिवकेँ गोहरा, यदि पारि देल आ कामदेवक शरीरक भष्म शिव अपना शरीरमे लगाओल। कामदेव पुनर्जिवित भऽ गेलाह।

चौपाई

एक दिन प्रेमे शिव भवगान।
गिरिजा के कहलनि लगि कान।।
मूल प्रकृति अहाँ विश्वधार।
हमरा कयल दमें स्वीकार।।
दक्षक घर मोर निन्दा सूनि।
त्यागल प्राण कन दुनू मूनि।।
कहू करव सपथ सहित अनुराग।
अब नहि हमर करी पुनि त्याग।।
अहँक बिना हमरा नहि चयन।
शोके सतत ब्रहत जल नयन।।

एहि प्रकारे प्रेमालाप आ राग-रागिनीक अनुपम संगम चलि रहल छल कि एकाएक शिवक मोनमे अर्द्धनारीश्वर बनवाक कुराफात जागि गेलैन्ह। तुरत ओ गौरीसँ कहल जे



अर्द्धनारीश्वर बनने हमरा अहाँसँ कहियो दुर नञि होयब अस्तु—

हम आधा अपने अर्द्धांग।
दुहु मिलि संग रहब एक संग।।
एहिसँ अधिक हयत की प्रीति।
तुच्छ परम आनन्दक रीति॥

दोहा

तखन अग्नि काँ विनययुत, कहलनि कतेक सुरेश।
देव काज साधक निमित्त, गेला अनल कहि वेश।।

अग्निदेव परबाक रूप धय ओहि एकान्त महाविलास विहारमे कोहुना प्रवेश कऽ अर्द्धनारीश्वरक समक्ष जा घूमि-घूमि घुटकय आ नाचय लगलाह। से देखि पार्वतीकेँ शंका, आश्चर्य आ अंसोकर्य भेलैन्ह। दुहु एकदोसरक शरीरसँ पृथक भऽ गेलाह। गौरीकेँ पुछला पर शिव परखि कहलैन्ह जे ई अग्नि थिकाह, ई अनाधिकार एकान्तमे घुसपैठ केलैन्ह। दंड स्वरूप गौरी अग्निदेवकेँ श्राप देल, "सभ पक्षी कुष्टी भऽ जाए।" शिवजी क्रोधित भऽ गेलाह, आंखि तरेरय लगलाह, क्रोधाग्नि भरकि गेल। ओह तेजाग्निसँ शिवक वीर्यक स्खलन भेल जे कपोतक शरीर पर परल आ वीर्याग्निक तेजसँ कपोतक शरीर दहकऽ लागल। ओ शिव-पार्वतीसँ प्रार्थना करय लागल, "विश्वक कल्याण हेतु आ देव सहाय स्वरूप हम ई कएल अछि। ई नहि केने अपने लोकनि सन्तानसँ वंचित रहब आ संतान नहि भेने तारकासुरक वध नहि होयत। अस्तु ई हमर दृष्टता नहि वरण् अजेय साहसक परिचयाक अछि। त्राहिमाम्, त्राहिमाम पाय शरणागताम।" परंच शिव-गौरी एहि पर कोनो प्रतिक्रिया नहि देल। मुदा ओहि समय-

शिवक देह सँ अनल समान।
वीर्य अमोध खसल भेल भान।।
अग्निक उपर परल जे तेज।
शिथिल भेला अनल निश्तेज।।
छटपट करबि सहल नहि जाय।
चलि नहि सकथि पराभव पाय।।
छुटि गेलि गौड़ी शिवक विहार।
परल अनल सिर शोकक भार।।

शिशु जनम पर-

दोहा

एकनाल मे षट कमल, शोभ यथा अधिकाय।
षटमुख शिव सुत सुभग अति, शोभा कहल ने जाय।।

चौपाई

सुनु सुनु प्राण प्रिया सुख सार।
सुखदायक ई अहींक कुमार।।
अहँ बिनु एहेन सुभग सुकुमार।
सुत उत्पत्ति कर के संसार।।
पुत्रवती अहाँ भेलहुँ यथार्थ।
सफल करन निज कोर कृतार्थ॥

दोहा

तीनू लोकक लोक काँ भेल आनन्द अपार।
केवल तारक असुर काँ, सुनितहिं भेल दुख भार।।

दोहा

शिव सुत कनुमति सँ विवुध, अयला स्वर्ग स्थान।
राज्य लाभ सुख मानि पुनि, सुखीत भेलाह निदान।।

एतय उत्तरार्द्धक अन्त करैत सोरठा पदमे लाल दास लिखैत छथि—

भुज ले रे मन 'लाल' चरण कमल, दुर्गा,शिवक।
घुटत कठिन भवजाक, मुक्ति मुक्ति सम सुख सुलभ।।

उपसंहार :— महेश्वर विनोदक अध्ययनोपरान्त किनको ई लागि संकेत अधिजे एकर रचना मे विविध पुराण, तंत्र, निगम आदिक मदति लेल गेल अछि। एहि मे महादेवक उत्पत्ति, शक्ति द्वारा महादेव, हरि चतुराननक परीक्षा हरिहर द्वारा शक्ति अपमान, लक्ष्मी-दुर्गा द्वारा हर विष्णुक त्याग, हालाहल वध सती सँ महादेवक विवाद, दक्ष द्वारा जमाय (महादेवक) अपमान, सतीक देह त्याग, दक्ष यज्ञक विध्वंस, महादेवक विराग, इकावन शक्ति पीठक वर्णन आदि पूर्वामे अओर उत्तरार्द्धमे शिवक समाधि भग्न, पार्वतीक जन्म, नारद हिमवान संवाद, नारदक घटकैती, कामदेवकेँ दहन, शिव गौरी प्रेमविवाह, विवाह समयक नोंकझोंक, कार्तिकेय जन्म, देवासुर संग्राम, तारकासुरक वध भेला, सन्तां कार्तिकेयक आज्ञानुसार सुरलोकमे देवताक पुनः आधिपत्य ओ राज्य सुखक प्राप्तिक पश्चात् कथानककेँ समाप्ति होइत अछि।

महाकवि पंडित लालदासक जे कोनो रचना छैन्ह सबमे सहजता, काव्य लालित्य, छन्द, अलंकार, काव्य विविधता ओ मिथिलाक गरिमाामय संस्कृतिक झलकसँ ओत-प्रोत रहैते अछि। शास्य-पुराणक गरिमाक व्याघात कतहुँ नञि देखाय पड़त। विलक्षण काव्य शिल्पक शिल्पकार, लालदासक भक्तिभाव एक-एक पदमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

एहि महाकाव्य (अथवा प्रबंध काव्य जे कही) महेश्वर विनोद नामक पोथीमे जेहने भव्य रामक लीला पूर्णमर्यादित रूपेँ व्यक्त कएल गेल अछि तेहने कामदेव द्वारा वसंत ऋतुक सर्वांग उपाख्यान वर्णित अछि। नारदक घटकैती, शिव-गौरीक वैवाहिक परिपेक्ष्यमे सप्तर्षिक सहयोग एवं शिवक खेलाबेलाक वर्णन परम रमणीय ढंगसँ भेल अछि। भाषाक मर्यादा सभतरि राखल गेल अछि। गत्यात्मक जीवनी शक्ति पोथीक प्राण थिक। प्रारम्भसँ अन्त धरि पढ़ितहि जायब अविराम रूपेँ से विशेषता थिक लालदासक काव्यकुशलताक। शक्तिक प्रधानता देब लालदासक आत्मिक ओ वैयाक्ति विशेषता अछि।

एतय एकटा प्रश्न सभक मोनमे उठैत होयत पोथीक नामक मादे। कथा तऽ प्रलयसँ लयकेर बादसँ सृष्टिक उत्पत्ति आ लगातार बढ़ैत संसार किंवा देव लोकक समस्याक चर्चा बीच महेश्वर विनोद की? तारकासुरक वध हेतु जतेक बान्ह-छान्ह कएल गेल अछि ताहिमे विनोद शब्दक गुंजाइश तऽ कतहु देखना नहि जाइछ? तखन ई नाम कि थिक? हमरा जन्तवे एहि लौकिक जीवात्मा बीच आमोद-प्रमोदक जे सरंजाम से हम आहाँ सदिखन देखैत छी मुदा सुरलोक मे घटैत घटना बीच शिव जाहि स्थिति प्रज्ञताक आभा कायम रखने रहैत छथि अथवा छगुन्ता मे पड़ल जीवात्मा वा सुरगण ाकेँ देखि जे आनंद शिव शम्भू पाबैत छथि से हमरा अहाँ सनक-लोकक वास्ते शम्भू द्वारा प्रायोजित विनोद नहि तऽ आर की? लस्सा लगा टेल बेंग टिटिआइये, 'सैएह ने' सभ कनैये, बम भोला हँ सैया?, अहो! दिगम्बर बाघम्बरी धारी अहाँक लीला अपरम्परा। महाकविक शब्दे :— "कलियुगमे नहि आनगति, बिनु हर गौरी सहाय!" सैएह अराधने महाकवि पंडित लालदास एहन मनोरम काव्यक पोथि लिखि सकलाह।

लेखक वरिष्ठ स्तम्भकार छथि।

मातृभाषा मैथिलीक सजग प्रहरी महाकवि पण्डित लालदास



❑ डा. संजीव शमा

महाकवि लालदासक जन्म मधुबनी जिलाक खड़ौआ गाममे फाल्गुन कृष्ण तृतीया रवि दिन सन 1263 साल तदनुसार 9 फरवरी 1856 ईसवीमे भेल छलैन्ह। हिनक पिता बचकन दास बीअर वंशीय कायस्थ छलाह संस्कृत अध्ययनमे विशेष रूचि रखनिहार महाकविक प्रिय ग्रंथ वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, मनुस्मृति, श्रीमद्भागवत गीता आदि छलैन्ह। संगहि महाकवि तंत्र आ दर्शन विषयक अध्ययन सेहो खूब रूचिपूर्वक केलैन्ह। खड़ौआ गाममे हिनक पितामह मायादत्तेश्वर नामक शिवलिंगक स्थापना कएने छलाह। जतय महाकवि पूजा करबाक निमित्त नित दिन जाइत छलाह। धार्मिक भावनाक प्रगाढ़ता हिनक जीवनक अंग बनि गेल छल। जे हिनक रचनाक अध्ययनसँ स्पष्ट भऽ जाइछ। परिवारक विषम परिस्थितिकेँ देखैत पिताक इच्छानुसार दरभंगा राजमे महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे नौकरी करय लगलाह। एहि क्रममे महाकविकेँ मिथिलेश रमेश्वर सिंहक कृपासँ कतेको धामक यात्र करबाक सुअवसर भेटलैन्ह। महाराज महाकविकेँ अपने संगे राखैत छलाह। भागलपुरमे जखन महाराज ज्वाइंट मजिस्ट्रेट छलाह तऽ महाकविकेँ भागलपुरमे सेहो रहबाक अवसर भेटलैन्ह। बादमे महाराजक राजनगरमे जखन विशाल राजप्रसादक निर्माण भऽ गेल तखन ओ अपन राजनगरेकेँ अपन स्थायी निवास बनौलैन्ह। जतय महाकवि हुनकेँ सङ्गे राजनगरमे रहय लगलाह। महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक (1898 - 1929) राजत्व कालमे मैथिलीकेँ अत्यधिक प्रोत्साहन भेटल। महाराजाधिराज लक्ष्मेश्वर सिंहक सुयोग्य उत्तराधिकारी महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक राज दरबारमे संस्कृत, हिंदी, फारसी आ अंग्रेजीक सङ्ग मैथिलीकेँ समान रूपेँ प्रोत्साहन देल गेल छल। डॉ. राधाकृष्ण चौधरी अपन पोथीमे लिखय छथि जे बंगालक विभाजन भेला पश्चात एक गोट कानून पास भेल जकर फलस्वरूप भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर अनेक नेताक प्रादुर्भाव भेल। बंगालक क्रांतिकारी लेखक लोकनिक सङ्ग मिथिलाक लेखक पर सेहो एहि घटनाक प्रभाव पड़ल। कारण ओहि समय धरि बिहार समेत मिथिला प्रशासनिक दृष्टिसँ बंगालक एकटा अंश मानल जाइत छल। बंगालक क्रांतिकारी कालीक उपासक छलाह। मिथिलाक वातावरण पर आदिशक्ति कालीक प्रभाव पर्याप्त रूपेँ छल। एहि आदिशक्ति कालीक प्रभाव महाकवि पंडित लालदासक साहित्य पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि।

मैथिली साहित्यकेँ नव-नव रूप देबाक चेष्टा कएनिहार साहित्य मनीषीमे साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनंदन दास, कवीश्वर चंदा झा, हर्षनाथ, महाकवि लालदासक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। मैथिली साहित्यमे एक नवजागरण उन्मेष कएनिहार रचनाकारक सूचीमे महाकवि लालदासक मैथिली ताहि कोटिक उन्नायक भेल जे स्वतः सकल मैथिली भाषिक माथ हुनक कृतित्व पर झुकि जाइत अछि। हिनक रचनाक मूल उद्देश्य मिथिलाक वैशिष्ट्यकेँ प्रदर्शित करब रहल अछि। मातृभाषा अनुरागी महाकवि मातृभाषाक सजग प्रहरीक रूपमे जीवित रहलाह। महाकविक सौम्य मूर्ति, दिव्य संस्कार, विलक्षण प्रतिभा आ गंभीर विचारपूर्ण मुद्रासँ मिथिलेश अभिभूत छलाह। महाराजक दृष्टिमे महाकवि प्रतिष्ठिते होइत गेलाह। मिथिलेश हिनक विलक्षण काव्य प्रतिभा आ पांडित्यसँ विमुग्ध भऽ महाकविकेँ 'पण्डितक' उपाधिसँ विभूषित केलैन्ह। मिथिलेश स्वयं महाकविकेँ 'कायस्थर्षि' सँ अलंकृत केने छलाह।

महेश्वर विनोदमे महाकवि लिखय छथि -

विदित रमेश्वर सिंह महराज।
हम बसयत छी तनिकहि राज।।
गाम खड़ौआ आलापुर,
दरभंगाक पूव किछु दूर।।
लालदास जन कह मोर नाम,
इष्ट प्रसाद पूरल मन काम।।'

एकठाम महाकवि महेश्वर विनोदमे मिथिलेशक कृपाक चर्चा करैत लिखय छथि -

मिथिलेशक सेवाक फल, फिरलहुँ तीर्थ अनेक।
तेहि प्रभाव निष्कलुष मन, पाओल सुदृढ़ विवेक।
सुधा सिंधु शंकर चरित, तृषित लाल मन आज।
एक बूंद लय पिउल भल, निज उद्धारक काज।

महाकवि लालदास मिथिलेशक सभापतित्वमे कतेको महत्वपूर्ण व्याख्यान देने छलाह। श्रोता मातृभाषा मैथिलीमे हिनक बाजब कलाक विलक्षण चमत्कारसँ मुग्ध भऽ जाइत छल। महाकवि अपन पहिल रचना हिंदीमे आ अंतिम रचना श्रीमद्भागवत गीता मैथिली पद्यमे लिखने छलाह। हिनक लिखल अठारह गोट रचनाक विषयमे जानकारी उपलब्ध अछि। जाहिमे मिथिला महात्म्य हिंदी गद्यमे, साङ्ग सप्तशती दुर्गा टीका, चंडी चरित, स्त्री धर्म शिक्षा, श्री सत्यनारायण व्रत कथा टीका, गणेश खंड, महेश्वर विनोद (गौरी शंभू विनोद), रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, हरिताली व्रत कथा, वैधव्य भंजनी (सोमवारी व्रत कथा), मिथिलेशक विरुदावली, गंगा महात्म्य, जानकी रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता मैथीली पद्यानुवाद, सावित्री सत्यवान नाटक, ब्रह्मोत्तर खंड, राधा काण्ड, लक्ष्मीकाण्डक नाम उल्लेखनीय अछि। महाकविक लिखल पाँच गोट अपूर्ण ग्रंथक जानकारी सेहो भेटैत अछि। जकरा ओ अपना जिवैत पूर्ण नञि कऽ सकलाह। जाहिमे चतुर्वर्णक कर्मकाण्ड - पद्धति, गीतगोविंद महाकाव्यक मैथिली टीका, सुदामाचरित चित्रण, तंत्र पद्धति आ आत्मकथा थिक।

महाकविक अनुपम रचना **रमेश्वर चरित मिथिला रामायण** अछि । जकर प्रकाशन मैथिली अकादमी पटना आ साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा कएल गेल। एहि विलक्षण महाकाव्यमे एक संग भाषा, भाव, अलंकार, चरित्र चित्रण, सामाजिक नियम, शिक्षा, आचार, सभ्यता सभहक दर्शन होइत अछि। एहि महत्वपूर्ण रचनामे मातृ प्रधानताक महत्व विशेष रूपसँ भेटैत अछि। महाकविक रामायण क महत्व पुष्कर काण्ड लकेँ आर बढ़ि जाइत अछि। आन रामायणमे फराकसँ पुष्कर काण्ड नञि लिखल गेल अछि। एहि काण्डक वर्णन अद्वितीय रूपमे कएल गेल अछि। महाकविक क्षमताक अद्वितीय प्रतीक थिक पुष्कर काण्ड ई कहबामे कोनो हर्ज नञि। डा राधाकृष्ण चौधरी 'मिथिलाक विभूति महाकवि लालदास' पोथीमे लिखय छथि जे 'महाकवि सीताकेँ अग्निमे प्रवेश नञि करौने छथि'। जे महाकाव्यकेँ सफल आ प्रौढ़ कल्पनाक चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाबैत अछि। महाकविक सीता उपेक्षिता नञि छथि। हिनक रामायणमे सबठाम सीताक मर्यादित रूपसँ प्रतिष्ठापित भेल छथि। ओ कहय छथि जे मर्यादाक स्रोत शक्ति थिक आ ओहि शक्तिक पुंज थिकीह सीता।

किष्किन्धाकाण्डक आरंभिक चौपाईमे कविवर लिखय छथि -

जे लक्ष्मी नित सुकृतिक धाम।
श्रीरूपेँ कर सुख विश्राम।।
पण्डित जनक हृदय पुनि जाय।
बुद्धि स्वरूपेँ बसथि सदाय।।
सज्जन जन मन श्रद्धा देह।
लज्जा रूप कुलीनक गेह।।

महाकवि पुष्कर काण्डक विस्तार दैत लिखय छथि जे मुनि लोकनिकेँ रावणक मृत्यु पर संशय होइत छैन्ह। एहि संशयसँ उबारक वास्ते सीतासँ अनुनय करैत छथि -

अहाँक कथें बड़ संशय बढ़ल,
अछि सबहिक मन भ्रममे पड़ल।

सीता संशय दूर करैत छथि -

पूर्व जखन हम छलहुँ कुमारि,
नैहरहि रही पिताक दुलारि।
मिथिला देश परम अभिराम,
सकल तीर्थमय धर्मक धाम।
आबथि ततय मुनीश अनेक,
मिथिला वास करथि सुविवेक।

महाकवि पुष्कर काण्डमे सीताक मुखसँ पुष्कर द्वीपक चर्चा जे रावण कोना उत्पन्न भेल तकर वर्णन करैत अपन विलक्षणताक परिचय दय छथि। सीता स्तुतिमे महाकवि लिखय छथि -

जे जगदीश ब्रह्म विरुणा
अभिलाषा सुख रूपा।
निष्कल तत्त्वक आश्रयकारिणी
सीता सैह अनूपा।।
दिनकर प्रभा रूप मलरहिता
स्वाभाविका अनन्या।
सैह वैष्णवी शक्ति जानकी
रणमहिमे छथि धन्या।।

पुष्कर काण्डमे दशमुख ओ सहस्रमुख रावण क वर्णन द्वारा ई प्रमाणित करबामे महाकवि सफल भेल छथि जे रामक अपेक्षा जानकी अधिक शक्तिशाली छलीह। महाकवि मैथिली साहित्यमे पहिले पहिल सीताकेँ गरिमा प्रदान कएलैन्ह आ मिथिलाक धियाकेँ सर्वोच्च स्थान देलैन्ह।

रूपमालाक एहि छंदमे महाकवि कहय छथि -

थिकहुँ जानकी अखिल
रूपिणी ब्रह्म निर्मल रूप,
आदि अंत न कतहु अपनेक
शुद्ध सत्त्व स्वरूप।।
करथि आनंदक महासुख
ध्याय ज्ञानी लोक,
तेजमय तेहि रूपमे रह
विनय नति निश्शोक।।

एहि तरहेँ ई देखल गेल जे रामायणक पद-पदमे महाकविक पाण्डित्य, भावुकता अओर रसज्ञता ज्योतिमणि जकाँ झलकि रहल अछि। हिनक रामायणमे प्रबंधात्मकता आ अभिव्यंजना प्रणालिक मणिकांचन संयोग देखबामे अबैत अछि। महाकविक महाकाव्य रमेश्वर चरित मिथिला रामायण बहुविध विशेषताक एकटा पुंज थिक। जकर परिचय संक्षेपमे नहि देल जा सकैत अछि।

महाकवि अपन संपूर्ण जीवन मैथिली साहित्यिक सेवामे लगौलैन्ह। अठारह गोट साहित्यिक ग्रंथ रत्नक दिव्य मालिका चढ़ा माए मैथिलीक पूजार्पणक सौभाग्य हिनका प्राप्त भऽ सकलैन्ह। हिनक अंतिम रचना श्रीमद्भागवत गीता छल। सन 1328 साल तदनुसार 1856 इसवीमे 65 बरखक अवस्थामे ओ चीरनिद्रामे विलीन भऽ गेलाह।

अस्तु ई कहबामे हर्ज नञि जे महाकवि पण्डित लालदास विनम्रताक चद्दरी ओढ़ि मातृभाषा मैथिलीकेँ अपन साहित्यिक यान बना सरल भाषा आ भावक पल्ला पकड़ि अपन बहुविध रचनाकेँ लोकप्रियताक परिधान पहिरोलैन्ह।

लेखक अध्यापक, संगीत विभाग, पी एल गर्ल्स इंटर स्कूल, झंझारपुर अओर हिंदी-मैथिलीक वरिष्ठ स्तम्भकार/पत्रकार छथि।

लाल दासक नजरि मे 'स्त्री-धर्म शिक्षा'

क्रमशः पृष्ठ संख्या 46 सँ

...एकर बाद पतिव्रत धर्मक महिमा आ किछु सती स्त्रीक इतिहास अछि। लक्ष्मी, सती, पार्वती, गायत्री, सीता, राधाक उल्लेख अछि। तदुपरांत उमाचरण-सुमति, सुकन्या-च्यवन, सावित्री-सत्यवान, शकुंतलोपाख्यान, वृंदा-जालंधर, दमयंती-राजा नलक कथा अछि। एहि कथा सभहक माध्यमसँ पतिव्रता स्त्रीमे कतेक शक्ति अछि से दर्शाओल गेल अछि। स्पष्टतः एहि पौराणिक कथा सबहक प्रस्तुतिक एक मात्र लक्ष्य, पति-पत्नीक बीच आजीवन मधुर संबंध आ सुख-शांति कोना स्थापित रहय से दर्शाओल गेल अछि।

'स्त्री-धर्म शिक्षा'मे शास्त्र पुराणक उद्धरण वचन वा स्तुतिक मैथिलीमे अनुवाद अछि। महाकविक एहि प्रयाससँ मैथिलीक गैर साहित्यिक अनुवाद साहित्यिक विकास भेल। ई कही जे एहि क्षेत्रमे काज कयनिहार महाकवि लालदास पहिल व्यक्ति छलाह।

त्रिकालजयी महाकवि पंडित लाल दास



❑ उमेश नारायण 'कल्प कवि'

महाकवि पंडित लालदास त्रिकालजयी छथि। रमेश्वर चरित मिथिला रामायण तकर प्रमाण थिक। ओ दू पांतिमे अपन भावनाक अभिव्यक्ति देलैन्ह अछि जे द्रष्टव्य अछि–

मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक,
सीता रूप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाब नर,
दुहु लोकक कल्याण।।

अस्तु, अदौसँ अंत धरि सीतातत्व विद्यमान अछि जाहिमे आठम काण्ड पुष्करकाण्ड चरमोत्कर्ष पर अछि।

भगवती सीताक वैदिक स्वरूपक वर्णन वेद सभहक सहितामे उपलब्ध अछि। आचार्य नीलकण्ठ वेद विहित सीता-रामपरक मंत्रक संकलन मंत्ररामायणमे कएलन्हि अछि। ओ अपन पाण्डित्यपूर्ण भाष्य द्वारा सीता-रामक स्वरूप केर दिग्दर्शन करौलैन्ह। एकर अतिरिक्त वेदक अंतिम भागरूप श्रीराम पूर्वतापन्युपनिषद, श्रीराममोत्तरतापिन्युपनिषद, रामरहस्योपनिषद, श्रीसीतोपनिषद लगाति औपनिषद ग्रंथ सभमे विस्तारसँ श्रीसीतारामक स्वरूप पर विचार भेल अछि।

एहि उपनिषदक अनुसारे 'सीता' नाममे तीन अक्षरक योग अछि–स् ई ता।

(1) **स** केर अर्थ होइछ - सत्य, अमृत आ प्राप्तयनि सर्वत्र गमन केर शक्तिसँ युक्त।

(2) ई केर अर्थ भेल - महाविष्णु रूप समस्त प्रपञ्च केर बीज आ एहि बीजक ईकार योगमायास्वरूपा होइत अछि।

(3) **ता** - ई अक्षर महालक्ष्मीक स्वरूप जे प्रकाशमय आ विस्तारवादी अछि।

एहिठाम सीताक तीन स्वरूप जनाओल गेल अछि। **पहिल** स्वरूपमे ओ ब्रह्ममयी छथि अओर बुद्धिरूपा होयबाक कारणेँ बाह्यगायत्रीक अर्थक द्योतक छथि। **दोसर** स्वरूपमे ओ पृथ्वी पर उत्पन्न भऽ सीरध्वज जनकराजक यज्ञभूमिमे हरक अग्रभागसँ समुत्पन्न सैरध्वजी, मैथिली आदि नामसँ अभिहित छथि। अओर अपन **तेसर** रूपमे ईकाररूपिणी अण्यकास्वरूपा यानि परमात्मा रामक अव्यक्त नाम वासी महामाया छथि।

श्रीसीता शक्त्पासना छथि। अर्थात् समस्त शक्तिक मूलरूपा भऽ ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति अओर क्रियाशक्ति रूप सबसँ विलासित होइत संसारक सभ व्यापारक प्रेरणा आ सम्पादित केनिहारि छथि। वास्तवमे ओ महाविष्णु रूप श्रीरामक साक्षात् शक्ति थिकीह। ओ लोकोपकारी अअन्त देवी स्वरूपमे विद्यमान छथि। सीतोपनिषद केर मंत्र अछि–

उद्भास्थिति संहारकारिणी सर्वदेहिनाम्।
सीता भगवती रोया मूल प्रकृति सेनिता।।

अर्थात् भगवती सीता ब्रह्मासँ लऽ कऽ कीटपर्यन्त सभ प्राणिकेँ जन्म, पालन आ संहारक परम कारण छथि। ओ मूल प्रकृतिस्वरूपमे रामाभिन्न साक्षात् स्वरूपा शक्ति छथि। वेदान्त, प्रस्थानक अनुसार हुनक सर्वकारणता, सर्वत्मता, सर्वव्यापकता, सर्वतीतता प्रमाणित अछि। सीतोपनिषदक अनुसार भूदेवी हुनक स्थल शरीर छथि। तहिना श्रीदेवी सूक्ष्मशरीर अओर नीका देवी कारणेँ शरीर छथि। स्वयं ओ एहि तीनू शरीरसँ अतीत सच्चिदानन्दरूपा छथि। ई श्रीरामक संन्धिनी, संबित्त आ अहलादिनी शक्तिरूपा छथि। श्रीरामकेँ सत्ता, ज्ञान आ आनंद प्रदान केनिहारि सर्वान्तिम तत्वरूपा रामबलभा, जानकी आ भूमिजा छथि। आदि शक्तिस्वरूपा भगवती विदेह तनया थिकीह।

आदिशक्तिः स्वयं सीता
रामाराम प्रदानयिनी।
विदेहस्य गृहेजाता
वैदेही नेन कीर्तिता।।

देवी भागवत महापुराणक अनुसारे,

निर्गुया सदा निसा
व्यापिकाऽविकृता शिवा।
योगभ्याऽखिलाधारा
तुरीया च संस्थिता।।

एतवे नञि ब्रह्माण्डपुराणोक्त सम्पूर्ण अध्यात्मरामायण श्रीसीतारामक महिमासँ परिपूर्ण अछि जे महाकवि पंडित लालदासकेँ सत्संग प्रवचनसँ प्राप्त भेलैन्ह हुनका पर अमिट छाप छोड़ि गेलैन्ह।

हिनक रचना संसार व्यापक अछि। कुलम अठारह पोथी गद्य-पद्यमे लिखलैन्ह से सभ ज्ञात अछि। हमरा हाथमे तीन पोथी अछि–रमेश्वर चरित्र मिथिला रामायण, जानकी रामायण आ महेश्वर विनोद। एकर अतिरिक्त मदभागवत गीता सेहो हमरा प्राप्त भेल अछि।

महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे चंदा झा सेहो मिथिला रामायण लिखलैन्ह आ पंडित लाल दास सेहो। काव्य कलाक दृष्टिएँ चंदा झासँ उत्कृष्ट लालदासक छंद रचना लागल। छंद, रस, अलंकार ओ भाषा-भाव संप्रेषण अपूर्व छैन्ह।

महेश्वर विनोदक पाँतिसँ हम अपन कथा वृतांतक अंत करै छी–

मिथिलेशक सेवाक फल,
घुमलहुँ तीर्थ अनेक।
जहि प्रसाद निष्कलुष मन,
पाओल सुदृढ़ विवेक।।

लेखक संयोजक मिथिलाक्षर प्रचारिणी सभा, इकाई अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद अओर *हिन्दी-मैथिलीक वरिष्ठ कवि-रचनाकार छथि।*

महाकवि पंडित लालदासक सीता



❑ *अजय कुमार दास 'पिन्टु'*

लोक जीवनमे साहित्यक स्थान सर्वोपरि रहल अछि आ जा धरि सृष्टि रहत ता धरि रहबे करत से निर्विवाद! साहित्य लोक संवाद आ अभिव्यक्तिक सुलभ-साधन मानल जाएत अछि। शिशु जन्म लैतहिं कानब आ वाणी फुटितहिं गायब जे स्वतः काव्य, राग, लय, भाष सहित अभिव्यक्तिक बीजांकुरण थिक से सत्य! मैथिली साहित्यक इतिहास अतिप्राचीन अछि आ सभ्यता संस्कृति संग साहित्य रूपी प्राणमय स्रोतसँ प्राणवन्त अछि। मिथिलामे वैदिक कालसँ संस्कृतक प्रभाव बेसी रहल मुदा मिथिलाक अपन परिपक्व संस्कृति अपनहिं माटि-पानि मे सानल रहल से निश्चिते। गद्य साहित्य ओ पद्य साहित्यक चलन आदि कालसँ चलि आबि रहल अछि पद्य साहित्यक जौँ बात करी तऽ तुकबन्दी, कविता, दोहा, बुझौअलि, वचन, लोक गाथा, गीत इत्यादि भेटैत अछि। पद्य साहित्यक एहि सब प्रचलित रूपकेँ सम्पूर्ण संग्रहित नहि भऽ सकल तथापि छिड़ियाल रहितो लोक उपयोगी साहित्य जन-जनकेँ कण्ठाहार आइ धरि बनल अछि। गद्य सहित्यक आधार सेहो पूर्वहिं सँ भेटैत अछि जाहिमे लोक कथा, चिट्ठी-पत्री, एकरारनामा, फकरा, बहिखत इत्यादिक चलन छल जकर शास्त्रीय मान्यता विद्वत वर्ग द्वारा नञि भेटल छल तथापि काम-काजी साहित्यमे महत्वपूर्ण स्थान भेटल छलैक। एवम् प्रकारे कहि सकैत छी जे गद्य शैलीकेँ विभिन्न विद्या जन उपयोगी छल आ पद्य साहित्य जे मिथलाक जन-कणक कण्ठ धरि आइ धरि पसरल अछि। एहिसँ अनुमान लगओल जा सकैत अछि जे कसौटी पर कसल साहित्य ओ साहित्यक परिपाटि मिथिलाक माटि-पानिमे अति प्राचीन कालहिं सँ फूलायल अछि।

1360-1448केँ काल अवधिमे विद्यापतिक प्रादुर्भाव भेल आ महाकवि विद्यापति भक्ति ओ श्रृंगार पदक माध्यमसँ जन साहित्यक निर्माण केलैन्ह आ मानव हृदयक मूलभूत भावनाकेँ नैसर्गिक भाव ओ भावावेशकेँ अत्यन्त सूक्ष्मतासँ यथावत चित्रण केलैन्ह। विद्यापतिक कालहिं सँ विद्वान लोकनि मैथिली साहित्यक शास्त्रीय विवेचना करय लगलाह संगहि तत्कालिन विद्वत समाज द्वारा विद्यापतिक रचनाकेँ मैथिली साहित्यक स्तम्भ ग्रन्थक श्रेणीमे स्थान देलैन्ह। तत्पश्चात विद्यापतिक बाद प्रतिभाशाली कविमे गेविन्द दासक नाम विद्वत जनक जिह्वा पर सदति अबैत रहल अछि, तत्पश्चात अनेकानेक कवि भेलाह उमापति, रामदास, रमापति लोचन संगहि दूटा संत कवि साहेब रामदास ओ लक्ष्मीनाथ गेसांई अपन भक्तिभावक संग कला पक्ष, गीत-कवितमे राग-रागनीकेँ आधार बनौलैन्ह आ उत्कृष्ट रचना लोकक कण्ठ धरि पहुँचल।

बितैत कालक 18वीं शताब्दी मे साहित्यक दूटा महाध्रुवक प्रकाश पुंज जकाँ अवतरण मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ खूब गैरवान्वित केलक हिनका लोकनिक सृजन मैथिली साहित्यक भंडार के खुब समृद्ध केलक आ नव पथ देलक अछि। एहि दूनू महापुरूषक तपस्या, अनुसंधान अओर कृतित्वक कारणेँ साहित्यक नवीन युगक प्रारंभ भेल। कविवर चन्दा झा सर्वप्रथम रामायण पोथी लिखलैन्ह मिथिला भाषा रामायण जे मैथिलीक महाकाव्य अछि, कविवर रामकेँ अराध्यदेव मनि, राम कथा आधारीत मर्यादापूर्ण, सहज प्रवाहक संग हृदयस्पर्शी महाकाव्यक रचना केलैन्ह जे साहित्यक आधार स्तम्भ ग्रन्थक रूपमे लोक मान्यता भेटल, इ कहबा मे कोनो संदेह नञि जे कविवर अपन चाँद सदृश चाँदनीसँ आधुनिक साहित्य जग्तकेँ जगजियार केलैन्ह संगहि साहित्यक बखारीकेँ प्रचुर भरलैन्ह।

1856मे महाकवि पंडित लालदासक अवतरण आ 1921मे महाकविक महाप्रयाण भेलनि एहि 65 वर्षक अवधिमे महाकवि कुल 22 गोट ग्रन्थक रचना केलैन्ह जाहिमे 18टा ग्रन्थ प्रकाशित भेल शेष 5टा अप्रकाशित रहि गेल, विद्वान लोकनिक मत छैन्ह जे हिनक किछु आर ग्रन्थ जे जन बीच प्रस्तुत नै भऽ सकल जेना फारसीमे लिखल सामग्री जकर किछु-किछु पाण्डुलिपि देखयमे अबैत अछि ताहिसँ अनुमान कएल जाएत अछि जे महाकविक फारसीमे मौलिक रचना रहल हेतैक, मुदा पुस्तककार नञि भऽ सकल। माने महाकवि विभिन्न भाषाक विज्ञ छलाह हिन्दी, संस्कृत, मैथिली सहित फारसीक ज्ञानी छलाह। विभिन्न विद्वतजनक मुखसँ हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर बृहत परिचिर्चा सुनवाक अवसर भेटल। महाकविक प्रमुख कृति **रमेश्वर चरित मिथिला रामायण**मे नारी शक्ति सीता ओ मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामक चरित्रक विशेषता पर विमर्श आवश्यक भऽ जाइत अछि।

महाकवि कृत रमेश्वर चरित मिथिला रामायण अनुदित आ मौलिक रचनामे सँ छैन्ह जे सर्वत्र अध्यात्म भावक अवलोकन संग शाक्त, धर्मसँ प्रभावित लक्ष्मी स्वरूपा सीताक अलौकिक चित्रण केने छथि। संगहि चतुरता पूर्वक रामक मर्यादकेँ स्थापित करैत, शक्तिकेँ प्रधानता दैत देशप्रेमक अनुराग स्पष्ट झलकैत छैन्ह।

चौपाई

मिथिला-मण्डल अनुपम देश।
रहथि जतय श्री रमा-नरेश।।

दोहा

भासमान मिथिलापुरी, रवि सन तेज प्रचण्ड।
बुझिपड़ अनुपम देशजनि, महिगत स्वर्गक खण्ड।।

एहि चौपाई आ दोहामे महाकवि मातृभूमिक प्रति अपन उद्गार व्यक्त केलैन्ह।

चौपाई

देश विदेशक कयल विचार।
लक्ष्मी जयत लेल अवतार।
नाम जानकी पड़ल जनीक।

बजली मिथिला भाषा नीक।।
पुण्य देश मे भाषानीक।
मिथिला सभक शिरोमणि थीक।
तेहि भाषा मे करब सुबन्ध।
सीतारामक चरित प्रबन्ध।।

एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे कविक एकटा आधार नञि वरन् विभिन्न स्रोत जेना वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, नानापुराण केर मंथनसँ रामायण सन महाकाव्यक रचना केलैन्ह।

आदि कवीन्द्र सुधा समुद्र।
कथा हमर कृत सरिता क्षुद्र।।
तेहि समुद्र सौं भरि भरि नीर।
पूरित करब सरित गम्भीर।।
जे नहि जा सकता तत दुर।
अओता एहि सरिता तट घूरि।।
सरिता भिन्न मधुर रस सैह।
मुनिकृत सुधा सिन्धुमे जैह।।

रामायण कथाकेँ महाकाव्यक रूपमे बड्ड रास संत शिरोमणि कवि लोकनि रचना केलैन्ह जाहिमे वाल्मीकि कृत रामायण, अध्यात्म रामायण, तुलसीकृत रामचरित मानस, भानुकृत भानुमत्त रामायण, दक्षिण भारतीय कवि कंबन कृत कंब रामायण, चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण इत्यादि अनेक विद्वान कवि लोकनि एकहि समुद्रमे सभ गोटे डुबकी लगैलैन्ह आ सब गोटे राम तत्वक दर्शन केलैन्ह आ रामरसक चासनीमे राममय रचना केलैन्ह।

सभहक रचनाक स्रोत भले एकहि समुद्रसँ किएक नञि होए मुदा अथाह सागरमे महाकवि अपन तप-कौशलक बलें सागर मथलैन्ह आ अपन काव्य संसारमे नारि शक्तिक तत्वकेँ जन मानससँ अवगत करौलैन्ह। महाकविक इएह सूक्ष्म दृष्टि सब कविसँ हुनका वेलग कऽ दैत अछि। महाकवि स्पष्ट करै छथि जे शक्ति तत्व महान थिक आ विश्व हुनक लिला मात्र अछि।

दोहा

शक्ति योग सँ सकल सजीव।
बिनु शक्तिक सभ जग निर्जीव।।

मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीताक रूप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाव नर, दुहूलोकक कल्याण।।

एहि सबसँ अनुमान लगओल जा सकैत अछि जे महाकविक सीता शक्ति रूपमे कतेक सम्पन्ना छलीह। महाकविक रचना क्रममे एकटा आर ग्रन्थ भेटैत अछि जानकी रामायण एहि ग्रन्थमे पौराणिक मान्यताक स्थापना महाकवि विस्तार पूर्वक केलैन्ह अछि। आदि शक्तिक तीनु रूप सीता, लक्ष्मी आ राधाक गाथा पुराणक शैलीमे, एक कथा दोसर कथासँ जोड़ल गेल अछि। जानकी रामायणक गुण आ वैशिष्ट्य उत्कर्ष पर ठाठ अछि।

दोहा

मूल प्रकृति सीता चरित, अद्भुत रतनक खानि।
अधि गेपित विधि भवनमे, कहयित छी हित जानि।।

जानकी रामायणसँ चौपाई

सीता त्रिगुण प्रकृति प्रधान।
कारण सृष्टिक सैह निदान।।
स्वर्ग-तपक से सिद्धि स्थान।
महति विधा विधा ज्ञान।।
ऋद्धि-सिद्धि सभ गुणमयिवेश।
निराकार पुनि गुणक न लेश।।
सकल सृष्टिमे व्यापित रहथि।
ज्ञानी तनिकहि चिन्मयि कहथि।।

महाकविक दृष्टि एकदम फरीछ छैन्ह जे शक्ति तत्वक दर्शन अपन शब्द शिल्पक माध्यमसँ निपुणतापूर्वक ओ स्पष्ट रूपेँ जनौलैन्ह अछि जे सीता राम अवतार थिक। महाकविक रमेश्वर चरित रामायणकेँ प्रथमहि मे दश महाविद्यरूप आ दशावतार वादक सिद्ध ान्तकेँ प्रतिपादित केने छथि। एक तरफ सँ दशावतारक रूप -

1. मीन रूप धय जाय पाताल।
वेदक रक्षा कयल सकाल।।
2. कच्छप राखल भूमि सयत्न।
मथि समुद्र अजाओल रत्न।।
3. हिरणयाक्ष हरि लयगेल भूमि।
रक्षा कयल कोल तम जूमि।।
4. हिरणकशिपु केर उदर विदारि।
प्रहलादक कयलनि रखवारि।।
5. सुर काजें वामन अवतार।
भिक्षा माँग्ल चलि बलि द्वार।।
6. रिपुरधिरे नहबय सकाम।
भूमिक ताप हरल भृगुराम।।
7. कयल राम सीता उद्धार।
करथु सदय हमरो विस्तार।।
8. तेसर राम कृष्ण बलराम।
सुरकाजे कयलनि बड़ नाम।।
9. वेदक निन्दा कयल अकाज।
बुद्ध भेला भेलनि बड़लाज।।
10. अपनहि हाथ धयल तरूआरि।
कल्की कयल यवनसौं मारि।।



महाकवि एक दिस दशवतारक विस्तृत रूपसँ अपन चौपाईमे धर्मक हानि ओ पाप वृद्धिक रोकथाम हेतु अपेक्षित खगता देखौलैन्ह जे जन कल्याणक हेतु आवश्यक छल मुदा ताहुसँ पूर्व लक्ष्मीक दशमहाविद्य रूपक वर्णन करबासँ महाकवि नहि चुकलाह अछि। रामायण ाक प्रारंभहि मे सुन्दर ढंगसँ बालकाण्डक शुरू करैत मंगलाचरणक बाद पहिल चौपाईसँ लक्ष्मीक दशो रूपकेँ स्थापित केलैन्ह, जे रामायणमे शक्ति तत्वक समावेशसँ गंभीरता, चमत्कार संग अत्यधिक प्रासांगिक अछि।

लक्ष्मीक दशमहाविद्य रूप -

चौपाई

प्रणमों लक्ष्मिक दश विधि रूप।
पुरथु मोर अभिलाष अनूप।।
सीता प्रथमा काली नाम।
कृत सहसानन-पुर संग्राम।।
शिव उर चरण फुजल शिर केश।
मुण्ड वराभय असिकर देश।।
चौँपल रसन दशनसौं वेश।

हरथु कृपा कय हमर कलेश।।
तारा तनिक अपर अवतार।
कर कर्त्री श्यामल आकार।।
मुण्ड वराभय शवउर-चरण।
करथु हमर तारिणि दुखहरण।।
त्रिपुर सुन्दरी अति अभिराम।
कृत शिव-नाभि कमल विश्राम।।
विधि हरि हर सुरवर घृत-ध्यान।
करथु हमर से नित कल्याण।।
भुवनेशी सुन्दर तन कयल।
अम्बुज आसन अंकुश धयल।।
पाश अभय वर सुन्दर हाथ।
कृपा सहित मोहि करथु सनाथ।।
भीमा भल भैरवि अवतार।
कर माला-पुस्तक आधार।।
कर वर अभय सदय शिर चन्द।
करथु अभय नित विहँसथि मन्द।।
दम्पति रति-पति पर आसीन।
खण्डित शिर शोणितसौं लीन।।
हाथ छिन्नशिर खड्ग विशाल।
छिन्ना भिन्न करथु दुखजाल।।
बड़ि बृद्धा धुमावति रूप।
काकध्वजा कर कर्त्री सूप।।
भक्तक करथि सदा कल्याण।
भवसौं हमर करथु से त्राण।।
पीत बसन परिधन तन पीत।
हरथि सदा अरिकृत भवभीत।।
कर मुद्गर धृत शत्रुक रसन।
अभय करथु बगलामुख हँसन।।
मातंगी मुद मंगल-अयन।
शोभित चारि भुजा तिनि नयन।।
गाबथि गीति बजाबथि वीण।
सुमुखि रहथु मोहि जानि अधीन।।
तप्त कनक द्युति लक्ष्मिक वरण।
परिधन क्षौम वसन आभरण।।
कमल अभय वर कर भयहरण।
राखथु शरण करथु मोर भरण।।

दोहा

लक्ष्मिक दस विध रूप ई, सभ खन रहथु सहाय।
क्रमहि दशो दिशिसौं हमर, रक्षा करथु सदाय।।

एहि प्रकारेँ महाकवि महाशक्तिक दश रूपमे दर्शन करैत छलाह, महाकविकेँ विश्वास छलैन्ह जे विश्व शक्तिमय अछि तैँ सम्पूर्ण सृष्टिमे शक्तिक प्रधानता स्वभाविक अछि तैँ महाकवि अपन रामायणक रचनामे लक्ष्मी अवतारक रूपमे सीता चरित्रकेँ निःसंकोच प्रस्तुत केलैन्ह अछि।

दोहा

लेल महालक्ष्मी तखन कृत युगमे अवतार।
वेदवती भेल नाम तँह कयल उदित संसार।।

महाकवि सीताक वर्णन किष्किन्धा काण्डमे एहि प्रकारेँ केलैन्ह अछि किष्किन्धाक पहिल चौपाईसँ उद्धृत-



चौपाई

जे लक्ष्मी नित सुकृतिक धाम।
श्री रूपेँ कर सुख विश्राम।।
पण्डित जनक हृदय पुनि जाय।
बुद्धि स्वरूपे वसथि सदाय।।
सज्जन जन मन श्रद्धा देह।
लज्जा रूप कुलीनक गेह।।
दुष्कृत जनक भवन पुनिवास।
दारिद्रिया रूपा सुखनाश।।
सैह थिकथि सीता अवतार।
पहुँचली लंका आगर।।

मिथिलाक तीन भाग नदी कल-कल बहैत अछि काशी, गंडकी ओ गंगा जे शक्ति स्वरूपा पाप उद्धारिणि छथि आ भौगेलिक नक्शा सेहो त्रिकोण अछि तैँ मिथिलाकेँ शक्तिपीठ सेहो कहल जायत अछि। बालकाण्डक चौपाईमे महाकवि कहय छथि-

सकल सरोवर सुर अवतार।
कहल सभक महिमा विस्तार।।
मिथिला मे जे नदी पुनीत।
कहल सभक महिमा-गुण-गीत।।

एक ठाम महाकवि कहय छथि-

महालक्ष्मी सभ प्रकृति मूल।
सैह सृष्टि कयलनि अनुकूल।।

रमेश्वर चरित्र मिथिला रामायणमे महाकवि सरल-सरस-सुन्दर-शालीन शैलीमे माँ सीताक विशद वर्णन करबासँ कतौ नहि चुकलाह से स्पष्ट अछि। आन सब रामायण मे सातटा काण्ड वर्णीत अछि मुदा कवि कृत रामायणमे आठटा काण्ड वर्णीत अछि। पुष्कर काण्ड आठम काण्डक रूपमे प्रस्तुत भेल, एहि काण्डसँ महाकवि रामायणक अंत केलैन्ह अछि। पुष्करकाण्ड महाकविक महाशक्ति साधनाक प्रतिफल थिक जाहि कारणेँ रमेश्वर चरित मिथिला रामायणकेँ सर्वश्रेष्ठ रामायणक श्रेणीमे विद्वत समाज द्वारा स्थान देल गेल।

मिथिलामे अदौकालसँ एकटा हीन मान्यता ग्रसीत केने छल जे मिथिलाक बेटीक भाग्य सीता सन नै होए, आ नै ओहि तिथिकेँ कियो मैथिल अपन धियाक विवाह करैत छल! महाकवि रामायण महाकाव्यक माध्यमसँ एहि भ्रमजालकेँ खूब चिक्कनसँ तोड़लैन्ह आ शक्ति स्वरूपा माँ जानकीक सामर्थ्यकेँ प्रकट करबा

मे महाकवि पूर्णतः सफल भेलाह।

पुष्करकाण्ड सँ उद्धृत - चौपाई

शक्तिक महिमा बड़ विस्तार।
शक्त्याधार सकल संसार।।
शक्तिक बल ब्रह्मा कर सृष्टि।
पालथि हरि शक्तिक शुभदृष्टि।।
रूद्र करथि जे जग संहार।
से केवल शक्तिक व्यपार।।
जे किछु मिथ्या सत्य पदार्थ।
शक्ति योगें जानब सार्थ।।
शक्तिक महिमा शम्भु अनंत।
कहयित जे नहि पौलनि अन्त।।
तनिक चरित्र कहय के पार।
किछु कहयित छी तकरे सार।।

एहि प्रकारेँ माँ जानकीक चरित गाओल गेल अछि। रावणक मृत्योपरांत पुरा परोपट्टामे आनंदक लहरि पसरि गेल रामक जयकारा होमय लागल रामो युद्धक बखान अपनहिं मुँहे करय लगलाह की सीता तऽर दऽ प्रश्न दागि देलखिन, "की युद्ध अहाँ जितलहुँ? की अहाँ ओहि रावणक हजारमो भागक रावणकेँ मारि सकब?" राम कहलखिन, "किएक नहि मारि सकब!" सीता कहलैन्ह, "चलू पुष्कर द्वीप जतय सहस्त्रस्कंध रावणक निवास अछि ओकर वध कऽ कऽ देखाउ।" राम तुनकि कऽ युद्ध करय चलि गेलाह, युद्ध शुरू भऽ गेल, राम परास्त भऽ गेलाह। सीता देखलैन्ह जे हमर पति आब मारल जेताह तखनहि सीता कालीक रौद्र रूप धारण कऽ युद्ध करय लगलीह ओ रूप देखि रामकेँ डर सन्हिया गेलैन्ह ओ परखि नहि सकलाह। तखनहि ब्रह्मा द्वारा आकाशवाणी भेल, "हे राम, ई अहींक संगिनी सीता थिकीह।" तावत सीता सहस्त्रो मुण्ड काटि वध कऽ देने छलीह। सहस्त्राननक वधक बाद माता सीताक काली रूपक उग्रता नै समाप्त भेल तखन स्वयं महादेव आगाँमे पड़ि रहलाह आ महादेवक छाति पर पएर पड़ितहि काली स्वरूपा माता सीता चौंकि गेलिह आ लाजे जीभ कुचा गेलैन्ह आ हुनक क्रोध शान्त भेल। तत्पश्चात रामकेँ अनुभूति भेलैन्ह जे हम जनक नंदनी जानकीक शक्तिक बलें रावणकेँ मारि सकलहुँ। महाकवि रामायणमे दशमुख रावण ओ सहस्त्रमुख रावणक नाश करबाक श्रेय माता सीताकेँ देलैन्ह संगहि सिद्ध केलैन्ह जे श्रीराम माँ सीतेक शक्तिसँ शक्तिशाली छलाह।

अहाँ छी परमा प्रकृति प्रधान।
जीवन हमर अहींक छी प्राण।।
अहीं छी सृष्टिक मूलाधार।
अहीं सब प्राणीक आधार।।
अहीं महालक्ष्मी साक्षात।
पालन काज अहाँक प्रख्यात।।

एहि प्रकारेँ कवि प्रभावी पुरुषक शक्तिक पाँछा नारी शक्ति तत्वक दर्शन अति सूक्ष्मतासँ करौलैन्ह जे सद्‌यह अछि। रामायणक रचना कालमे कवि बहुत सर्तकतापूर्वक रचना केलैन्ह अछि। मातृभाषाक प्रति सजग रहि ओकरा प्रति अनुराग प्रगट करबामे कतहु नहि चुकलाह अछि-

नैहर हमर सुमिथिला देश।
अतिप्रियकर की कहब विशेष।।

महाकवि जतय सीताकेँ आदिशक्ति बुझि सृष्टिक आधार तत्व देखौलैन्ह तऽ भगवान रामकेँ जन कल्याण हेतु जगतपालनकर्ताक रूपमे प्रस्तुत केलैन्ह।

बालकाण्डसँ दोहा

राम नाम नौका सदृश, पावि सुखद आधार।
अनायास भव-सिंधुसौ, सज्जन उतरथि पार।।

महाकवि स्पष्ट जनौलैन्ह जे बिनु राम कृपासँ किछुओ सम्भब नहि तैं काम, अर्थ, मौक्ष ओ धर्मक रक्षिणी सीता आ त्रिविध ताप नाशक राम एहि दूनूक संयोग रूप सीतारामक कृपा मात्रसँ जीवन कृतार्थ भऽ सकैत अछि।

दोहा

सीताराम चरित्र ई, जे पढ़ताह सुनताह।
लाल सकल सुखभोग पुन, ब्रह्मक पद पौताह।।

एहि रामायणक विशेषता जे महाकाव्यमे अध्यात्म आ काव्यत्व केर मणिकांचन संयोग अछि। संगीतक दृष्टिसँ रागक आधार पर प्रत्येक छन्द गेय काव्य अछि। महाकवि महाकाव्यमे जनसाधारण आ परिवेशक दृष्टिकेँ ध्यानमे राखि सहज, सरल आ सुबोध भाषाक प्रयोग केलैन्ह जाहिमे कृत्रिमता कतहु नहि। हिनक शब्द शिल्पसँ स्पष्ट होइत अछि जे सरलता आ सहजता भाषाक प्राणतत्व थिक। जकर पालन ओ सर्वत्र केलैन्ह अछि। महाकवि रामायणमे मातृभाषा अओर मातृभूमिक प्रति अनन्य अनुराग देखौलैन्ह जे समस्त मैथिलवासीकेँ सदति गौरवक अनुभूति करबैत रहत। एहिमे महाकवि आदिशक्ति सीताकेँ शक्ति स्वरूपा देखौलैन्ह आ सम्पूर्ण रामायण महाकाव्यमे आदिशक्ति सीताकेँ आधार मे राखिये रचना केलैन्ह। मुदा सीतातत्व प्रधान रहितहुँ महाकवि रामतत्वकेँ कतहुसँ झूस नञि होमय देलैन्ह जे रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक वैशिष्टय ओ उत्कर्ष पराकाष्ठा पर ठाढ़ भेल अछि।

चारि वर्ण युत सीता नाम।
अर्थ, धर्म, दायक गति काम।।
***स'** उच्चारण करितहिं मात्र।*
*देथि सुधाकर सुधा सुपात्र।।**काम**।।*
***ई'** उच्चारण होइछ जखन।*
*सकल अर्थ सुरपति देथि तखन।।**अर्थ**।।*
***त'** कहयित हरि सुजनि बिचारि।*
*देथि मुक्ति फल भवसौँ तारि।।**मोक्ष**।।*
***आ'** कहयित सभ भाँति अनन्त।*
*देथि धर्म्म फल बुझि भल संत।।**धर्म्म**।।*

मिथिलाक समान्यतः जनसमुदायमे धार्मिक परंपरा अनुसार घरे-घर गेसाउनी आ गामे-गाम शिवालय स्थापित भेटैत अछि जे कौलिक परम्परा रहल अछि आ महाकवि शिव आ शक्तिक परम उपासक छलाह। आजन्म शाक्त रहितहुँ पूर्ण वैष्णव छलाह संगहि तांत्रिक विधिसँ महाशक्तिक साधना करबा मे निपुण छलाह। कहि सकैत छी जे माँ सीताक साक्षात कृपा प्रसादसँ रमेश्वर चरित मिथिला रामायण संग आन ग्रंथक रचना केलैन्ह आ लालदास **महाकवि पंडित लालदास**क नामे जगत विख्यात भेलाह।

दोहा

सीतारामक महिमा युत,
रामायण सुख खानि।
जे सुनता तरताह भव,
अनायास अनुमानि।।

लेखक वरिष्ठ स्तम्भकार छथि।

महाकवि पं लालदास : संक्षिप्त परिचय



❑ कवि सुरेश कंठ

बिहार राज्य भारत देशक पिछड़ल राज्यमे मानल जाइत अछि, बिहारोमे मिथिला क्षेत्र अओरो। तैयो एहि बातक खुशी भऽ रहल अछि जे साहित्य जगतमे लालदासक जन्म भेलैन्ह ई मिथिलाक लेल सौभाग्यक बात अछि।

हुनक जन्म दिनांक 09/02/1856ई. मे मधुबनी जिलाक खरौआ गाँवमे भेल छल। हिनक पिताजीक नाम बचकन दास अओर पत्नीक नाम सूकन्या छलैन्ह। जन्मक समय हिनक नामक चुड़ामणीदास छल। हिनक पिताजी प्रसिद्ध विचारक, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी आ मैथिलीक प्रकाण्ड विद्वान छलाह। हिनक दादाजी जल्पादत्त दास राज दरभंगामे दीवानक कार्य करैत छलाह। लालदासजी अपन गुरु भाए लालदासजीक छत्र-छायामे अपन पढ़ाई-लिखाईकेँ आगाँ बढ़ौलेथ।

ओ अपन जीवनमे मुख्य रूपसँ निम्न 18टा ग्रंथरत्नक रचना केलैथ :-

1. सांग सप्तशती दुर्गा टीका (मैथिली पद्य)
2. चण्डीस चरित्र अर्थात सप्तशती दुर्गा (मैथिली पद्य)
3. मैथिली महालीय (हिन्दी गद्य)
4. स्त्री-धर्म शिक्षा (मैथिली गद्य - चारि खंड मे)
5. श्री सत्यनारायण कथा टीका (मैथिली गद्य)
6. गणेश खण्ड (मैथिली काव्य- दू भाग मे)
7. महेश्वर विनोद वा गौरी शम्भू विनोद (मैथिली काव्य)
8. सुंदरकाण्ड रामायण (मैथिली काव्य)
9. बाल काण्ड (मैथिली काव्य)
10. हरिताली व्रत कथा (मैथिली पद्य)
11. वैधव्यी भंजिनी (मैथिली पद्य) (सोमवार व्रत कथा)
12. श्रीमान मिथिलेश विरूदावली (मैथिली काव्य)
13. रामेश्वर चरित मिथिला रामायण (समग्र उष्ट काण्ड)
14. श्रीगंगा महात्यिक (मैथिली काव्य)
15. जानकी रामायण (तीन खंडमे मैथिली काव्य)
16. श्रीमद्भागवत गीता (मैथिली पद्यानुवाद)
17. सावित्री-सत्यवान नाटक (मैथिलीमे)
18. ब्रह्मोत्तर खंड (मैथिली पद्यानुवाद)

हलाँकि लालदास 23टा ग्रंथक रचना केलैन्ह, मुदा कोनो कारणवश 5टा ग्रंथक रचना पूर्ण नञि भऽ सकलैन्ह।

किशोरावस्थामे (14 सालक उम्रमे) साल भरिक बाद घर वापस एलाह, परिवारक सदस्यकेँ शंका भेलैन्ह जे ओ ब्रह्मचारी बनबाक प्रयास कऽ रहल छैथ ताहिसँ छुटकारा हेतु सुकन्या नामक लड़कीसँ हिनक वियाह करा देल गेल। भैयारीमे सबसँ पैघ हेबाक कारणेँ घरक जिम्मेदारी बढ़ि गेलैन्ह, जाहि कारणेँ दरभंगा महाराजक दफ्तरमे नौकरी करय लगलैथ।

हिनकर प्रतिभाक कारणेँ राज दरबारमे हलचल होए लागल, एक समय हिनका दरवारमे उपस्थित हेबाक फरमान सुना देल गेल। कतेका सवाल पूछल गेल, ओ सब सवालक जवाब आसानीसँ देलैन्ह। हिनक जवाब सुनि राजा स्तब्ध रहि गेलाह आ पुरस्कारमे हिनका नाम देल गेल 'लालदास' आ हिनका इज्जतदार पेशकार पद प्राप्त भेल। जखन दरभंगा महाराज रामेश्वर सिंह भागलपुर मे मजिस्ट्रेट बनलैथ तऽ लालदास जीके संग रहय लेल भागलपुर बजा लेलैथ। ओहिठामक मौलवीसँ अंग्रेजी पढ़ि ओहिमे विद्वता हासिल केलैथ। राजा कामेश्वर सिंह आ लालदासक उम्र लगभग समान छल। ताहि कारणेँ राजाक हिनका प्रति विशेष अभिरुचि छलैन्ह।

जखन राजा मजिस्ट्रेटक पदसँ त्यागपत्र दऽ देलैथ तऽ हिनका अपने संग रहय लेल भागलपुरसँ पुनः राजनगर ड्योढ़ी बजा लेलैथ।

मैथिली भाषाक प्रकांड विद्वान महाकवि लालदास मैथिली भाषाकेँ अपन रचनासँ गौरवान्वित केलैथ। हिनका विषयमे कतबो लिखब ओ कमे होएत।

अखन धरि रामायणक कतेको पोथीक रचना भिन्न-भिन्न रचनाकार द्वारा कएल गेल अछि, जाहिमे रामकेँ प्रधानता देल गेल। परञ्च महाकवि लालदास द्वारा रचित रामायणमे माता जानकीक प्रमुखतासँ वर्णण कएल गेल अछि। प्रायः सब रामायणकेँ मात्र सात खण्डमे समाप्त कएल गेल अछि। परञ्च लालदासक रामायणमे आठ खण्डक समावेश कएल गेल अछि। आठम काण्डमे विशेष रूपसँ माता जानकी जीक व्याख्यान कएल गेल अछि।

कविजीक वेद अओर तंत्र पर अद्भुत जानकारी छलैन्ह। ताहि द्वारे फारसीमे 'तश्दीद' लिखलैन्ह। पहिलुक समय मे प्रचलन छल जे परिवारक सबसँ पैघ बालक पर पढ़य लेल विशेष ध्यान देल जायत छल, हिनको संग सेहय भेलैन्ह, हिनका पर आँगा पढ़य हेतु विशेष ध्यान देल गेल। हिनक छोट भाए बुन्नीलालकेँ संस्कृत पढ़यमे झुकाव छल, नन्नू लाल दासकेँ हिंदी पढ़यमे रूचि छलैन्ह, सुंदर लाल दासकेँ फारसीमे पढ़यकेँ इच्छुक छलाह, बच्चे लाल दासकेँ उर्दूमे शिक्षा देल गेल अओर गौड़ीलाल दासकेँ अंग्रेजीमे शिक्षा देल गलैन्ह।

मिथिलामे महाकवि लालदास सन विद्वान भेलैथ। जा धरि ई धरा रहथ, महाकवि लालदासक युग-युगांतर धरि हमरा सब याद करैत रहब।

लेखक हिन्दी-मैथिलीक वरिष्ठ कवि-रचनाकार छथि।

पं महाकवि लालदासक सृजन



❑ चंदना दत्त

महाकवि पं लालदासक अवतरण मिथिलाक लेल अति सौभाग्यक बात थिक। जाहि समयमे हुनक अवतरण भेल अधिकांश विद्वतजन अपन साहित्य सृजन संस्कृतमे करैत छलाह, निस्संदेह संस्कृत देवभाषा थिक, मुदा पं लालदास कतोक ग्रंथादिक अध्ययन कऽ अपन अधिकाधिक रचना मिथिलाक जनभाषा मैथिलीमे कएलैन्ह, संगहिं कतेको ग्रंथ केर संस्कृतसँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ ओहि ग्रंथकेँ सर्वसुलभ बनौलैन्ह। हुनका अपन भाषा पर अतिशय गर्व छलैन्ह।

निज भाषा जननी निज देश।
स्वर्गोसँ जानथि जन वेश।।
तें हम कथा कहब ताहि रीति।
नहि विद्या कविता गुण-गीति।।

अपन अट्ठारह गोट ग्रंथ-रत्नक रचना जाहिमे हिन्दी, संस्कृत, फारसी आदिसँ मैथिली साहित्यक विशाल भंडारकेँ भरलैन्ह। हुनक 'स्त्री धर्म-शिक्षा' आ 'सावित्री-सत्यवान' नाटक हमरा अतिशय नीक लागैत अछि। रमेश्वरचरित मिथिला रामायण जतेक बेर पढ़ैत छी एकटा नव रूपमे चरित्रक व्याख्या करैत लागैत अछि।

आइसँ सय बरख पूर्व एहि रचनासँ हुनक अभिप्राय स्त्रीगणक शिक्षा केर नव दृष्टिकोण समाजमे देनाय रहल हेतैन्ह। यद्यपि भारतीय समाजमे पूर्वकालहिंसँ स्त्रीकेँ शिक्षा आ शस्त्र-शास्त्रक शिक्षा पर प्रतिबंध नञि छल। मुदा कालांतरमे समाज स्त्रीकेँ असुर्यपश्मा किएक बनौलक ई चिंतन केर विषय थिक। मुदा अपन ग्रंथ रचना द्वारा पं लालदास पुनः ओहि समाजमे नव ज्योति देलैन्ह। कहलो गेल अछि पुरुषक शिक्षासँ एक कुल आ स्त्रीक शिक्षित भेने दू कुलकेँ प्रकाश भेटैत अछि। हुनक रमेश्वरचरित मिथिला रामायण, स्त्री धर्म-शिक्षा, सभ स्त्रीकेँ साक्षर बनेबाक काज केलक। स्त्रीगण गीतनादक संगे एहि ग्रंथ सभहक पारायण करय लगलीह। सबकेँ खोइंछमे दूभि-धानक संग ई दूनू ग्रंथ सेहो देल जाए लागल आ एहि ग्रंथकेँ ओ स्त्रीगण सभ गहना-गुड़ियासँ बेसी जुगता कऽ राखय लहलीह। ओ सभ डिग्रीधारी बरू नहि छलीह मुदा साक्षर भऽ गेलीह। हुनक मिथिला रामायणमे माए जानकीक अद्भुत चित्रण देखबामे आबैत अछि। हुनक कहब छैन्ह जे राम वैदेही पति अर्थात रमा (लक्ष्मी)क पति बनलाक उपरांत रमेश्वर भेलाह।

पं लालदासक रामायणक विशिष्टता प्रदान करैत छैन्ह एहिमे मिथिलाक गाम-घरक चित्रण, ऋतुक वर्णन, खेत खरिहानक चित्रण, धन-धान्यक वर्णन, विवाहक शोभाक वर्णन, हास-परिहासक वर्णन, मिथिलाक नर-नारीक वर्णन। कहबाक अभिप्राय जे जाहि विषय पर हुनक लेखनी चलय छैन्ह, उपमाक प्रयोग पर पाठक गर्वसँ भरि उठय छथि जे हमर मिथिला एहन परिपूर्ण अछि सभ तरहेँ। रमेश्वरचरित मिथिला रामायणमे प्रसंग अछिः

जखन राम आ लक्ष्मणकेँ संग लऽ गुरू सिद्धाश्रम जाइत छथि। ओहि क्रममे एकटा स्थान पर जखन जाइत छथि तऽ ओ स्थान विचित्र सन सुऽन लागैत छैन्ह। एतेक काल धरि जे परिपुष्ट जीव-जन्तु, खग-मृगक दर्शन भेल रहैन्ह से आब नञि देखा रहल छलैन्ह। चारूभर सुनसान लागि रहल छलैन्ह। ई देखि गुरुसँ प्रश्न केलैन्ह जे ई विपिन एहन उदास किएक अछि? गुरू तखन गौतम मुनिक आश्रमक कथा कहैत छथिन्ह। गुरू बताबैत छथिन्ह, "ई आश्रम महान विद्वान, न्याय सूत्रक ज्ञाता गौतम मुनिक छैन्ह। अहिल्या हुनक वामा छलीह जे परम सुन्नरि आ आज्ञाकारी छलीह। इन्द्रदेव गुरुसँ शिक्षा ग्रहण करैत छलाह, एक दिन गुरु पत्नीकेँ देखि मोहित भऽ गेलाह आ हुनका लेल व्याकुल रहय लगलाह। मुदा कोनो अवसर नञि भेटैन्ह, तखन एकदिन छलसँ रातिमे कुक्कुटक स्वर निकालि गुरुकेँ भोर हेबाक भान कराय देलैन्ह। गौतम मुनि भोर बुझि नदी स्नान लेल विदा भऽ गेलाह। तखन इन्द्र देव मुनिकेँ वेषमे अहिल्यासँ प्रेमप्रसंग करैत बजलाह, "आऊ प्रिय, रमण करू अखन निशा अछि शेष।" अहिल्या इन्द्रक मंतव्य बुझि गेलीह मुदा ओहो युवा। इन्द्रक प्रेमसँ मोहित भऽ लाज छोड़ि देलैन्ह आ दूनू अपन भावनाकेँ पूर्ति कएलैन्ह। ओम्हर मुनिकेँ अन्हार देखि शंका भेलैन्ह ओ ध्यान कऽ इन्द्रक मिथ्याकेँ बुझि गेलाह आ अहिल्याक संग इन्द्रकेँ शाप दऽ देलैन्ह। तहियासँ अहिल्या पत्थर भेल एकांतवास कऽ रहल छथि आ ई वन निर्जन भेल पड़ल अछि।

एतय पं लालदासकेर दृष्टि युवा अहिल्याक कामेच्छा आ ओकर स्वीकारोक्ति आन कोनो धर्मग्रंथसँ ऊपर उठा दैत अछि। स्त्रीक मनोभाव केर अध्ययनमे पंडित लाल दासक साहित्यमे भिन्न दृष्टिकोण देखल जाइत अछि। अपन 'स्त्री-धर्म शिक्षा'मे दू गोट सखीक वार्तालापमे कतेको प्रसंग पर स्त्रीकेँ ज्ञान दैत छथिन्ह।

हुनक लेखनी ततेक सरल ओ बोधगम्य अछि जे साधारण पढ़ल गुनल स्त्रीगण सभ बड़ सहज ढंगसँ पाठ करबामे सफल होइत छथि। तैं स्त्रीगणक मध्य पंडित लालदास रचित हरितालिका व्रत कथा, चण्डीचरित, वटसावित्रीक कथा, महालक्ष्मी कथा अत्यंत प्रसिद्ध अछि। हमर सभहक दायित्व अछि जे हुनकर कृतित्वक अध्ययन, अध्यापन आ संरक्षण करि।

लेखिका वरिष्ठ स्तम्भकार अओर राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका छथि।

लाल दासक नजरि मे 'स्त्री-धर्मशिक्षा'



❑ *अंजना शमा*

महाकवि लालदासक समस्त साहित्य शास्त्र-पुराणक अध्ययनसँ अर्जित ज्ञान, कथा चरित्र आ बिम्बक आधार पर अछि। मुदा हिनक **स्त्री-धर्म** शिक्षा आ **पतिव्रताचार**क प्रत्येक सन्दर्भ आ कथा शास्त्र-पुराण केर वचनक उद्धरणसँ भरल अछि।

भर्ता देवो गुरुर्भर्त्ता धर्मतीर्थव्रतानि च।
तस्मात सर्वं परित्यज्य पतिमेकं समर्चयेत।।

अर्थात्, स्त्रीक स्वामी देवता छथि। वएह गुरु, भर्ता, धर्म, तीर्थ, व्रत छथि। तैं आन परिचर्या सबकेँ त्यागिकेँ स्त्रिक धर्म छैन्ह जे ओ मात्र स्वामिक सेवा-पूजा कएल करथि।

1909ई.मे महाकवि पण्डित लालदास अपन आश्रयदाता महाराज रमेश्वर सिंहक प्रेरणासँ 'स्त्री-धर्मशिक्षा' पोथीक रचना केलैन्ह। मिथिलेशक उक्ति छलैन्ह जे 'स्त्रीधर्म' सम्मिलित एकटा नवीन ग्रन्थक रचना कएल जाए, एहि ग्रन्थकेँ सबठाम पठाओल जाए आ देश भरिमे एकर प्रचार-प्रसार कएल जाए। जाहिसँ स्त्रीवर्गकेँ स्त्री धर्मक पूर्ण शिक्षा भऽ जाइन्ह। ओहि समयमे स्त्री-शिक्षाक विशेष प्रयोजन छलैक, ओहियो समयमे एक-सँ-एक विदुषी रहथि। समाजमे स्त्री-पुरुखकेँ समान अधिकार भेटल छल। महाकविक अनुसारेँ स्त्री लोकनिकेँ स्त्री धर्म शिक्षाक भान रहैन्ह, मुदा ओहिमे पूर्णताक अभाव छल। ओहि अभावकेँ दूर करबाक लेल महाकवि लालदास स्त्री-धर्म शिक्षाक रचना केलैन्ह।

महाकवि रचित 'स्त्री-धर्म शिक्षा' चारि खण्डमे लिखल गेल अछि। पोथिक **पहिल खण्ड**मे स्त्रिक साक्षरता आ चित्रकला निपुणताक चर्च कएल गेल अछि। निरक्षर आ अशिक्षित स्त्रीसँ पारिवारिक कलह कोना पसरैत छैक आ शिक्षासँ तकर निदान कोना संभव अछि से पहिल खण्डमे वर्णित अछि। महाकवि, सखी चन्द्रकला आ चन्द्रप्रभाक वार्तालापक माध्यमसँ सुंदर वर्णन केने छथि। चन्द्रकला विदुषी स्त्री छलीह। समय-समय पर चन्द्रप्रभा हुनकासँ ज्ञान प्राप्त कऽ सभ समस्याक हल निकालि लैत छलीह।

दोसर खण्डमे फेर दूनू सखिक वार्तालापकेँ महाकवि देखौने छथि। जाहिमे चन्द्रकला, चन्द्रप्रभाकेँ कहैत छथि जे लिखबाक-पढ़बाक फल सदिखन उत्तम होइत अछि। मूर्खताक आचरणसँ दुःख भेटैत छैक। जखन ओहि सबकेँ उपदेशसँ ज्ञान भेलैक तऽ ओ नीक आचरण करय लगलीह। चन्द्रकला, चन्द्रप्रभाकेँ कहैत छथि जे स्त्रीगणमे जौं तीन-चारि बातक ज्ञान होए तऽ घरकेँ सुंदर बना सम्हारि सकैत छथि। नीक आचरण आ कुशल व्यवहार होए जाहिसँ धन, जन, सुख, सम्पत्ति आ परिवारक वृद्धि होइत अछि।

तेसर खण्डमे महाकवि तंत्र शास्त्रक आधार पर सधवा स्त्रिक पूजाविधि वर्णित केलैन्ह अछि। एहि खण्डमे पतिव्रत धर्मक विस्तारसँ चर्च कएल गेल अछि। सधवा आ विधवा दूनू प्रसंगमे कतेको शास्त्र-पुराणक वचनसँ पुष्ट अछि। परिवार आ समाजमे नीक आचरणक कतेक महत्व अछि से कथा आ घटनाक संग सोदाहरण वर्णित कएने छथि। प्रस्तुत खण्डमे महाकवि कौशल्या द्वारा सीताकेँ उपदेश आ सीताक उत्तर, सीताक प्रति अनसुइयाक उक्ति आ सीताक उत्तर, रामायणक आधार पर सधवा आ विधवाक विवाहक कर्तव्य पृथक-पृथक वर्णित कएने छथि।

मनुस्मृति पंचम अध्याय

परुष्याण्यपि या प्रोक्ता दृष्टा या क्रोधचक्षुषा।
सुप्रसन्नमुखी भर्तुः सा नारी धर्म भागिनी।।1।।
भर्ता हि परमं नार्या भूषणं भूषनैर्विना।
एषा विरहिता तेन शोभनापि न शोभना।।2।।

अर्थात्, स्वामी जौं कठोर कथा कहि गंजन करथि वा क्रोध दृष्टिसँ देखैथ, तथापि स्वामिक प्रति प्रसन्न मुख भऽ जे स्त्री रहय छथि सएह धर्मभागिनी थिकीह।।1।।

स्त्रीक स्वामी परम् भूषण छथि, अर्थात स्वामीसँ युक्त स्त्री शोभा पबै छथि। स्वामीसँ विहीन सुंदरियो होथि शोभा नञि पबै छथि।।2।।

काशीखण्डमे स्त्री-धर्मशिक्षासँ जुड़ल एहि पाँतिकेँ देखल जा सकैत अछि -

यद्यदिष्टतमं लोके यच्च पत्युः समीहितम।
तत्तद गुणवते देयं पतिप्रीणनकाम्यया।।1।।
वैशाखे कार्तिके माघे विशेषनियमांचरेत।
स्नानं दानं तीर्थयात्र विष्णोरनामग्रहम मुहुः।।2।।
भर्तृस्वरूपो भगवान प्रियतामिति चोच्चरेत।
एवं चचर्या परा नित्यं विधवापि शुभामता।।3।।

अर्थात, विधवा स्त्रीकेँ जौं अपन कल्याणक इच्छा होइक ओ दोसरहु जन्ममे स्वामीसँ संयोगक इच्छा होइक, तऽ पतिक प्रीति धर्म्महिक आचरण करैत काल बिताबै। एहि लौकिकी सुखमे भोतिआइलि नञि रहय।।1।।

ओसवहि वैशाख, कार्तिक, माघ मासमे विशेष नियम कऽ स्नान, दान, तीर्थयात्रा, विष्णुक नाम स्मरण बारम्बार करैत रहय।।2।।

सभ कएला सन्ता स्वामी स्वरूप विष्णु बड़ प्रसन्न होइ छथिन्ह। परिचर्या कएला सन्ता विधवा स्त्री पापसँ छुटि कऽ शुद्ध भऽ जाइत अछि।।3।।

चारिम भागमे किछु पतिव्रता स्त्रिक महिमा वर्णित अछि। चन्द्रप्रभा बजलीह, "हे सखी! हमरा जे सभ सुनबाक अभीष्ट छल से सभ अहाँ शास्त्रक प्रमाण दऽ पतिव्रत धर्मक पूर्ण उपदेश कएल। जे स्त्री एहि सनातन धर्मकेँ बुझि पतिव्रतक पालन करैतो अपन दुहु कूलक उद्धार कऽ अंतकाल स्वामिक संग सुखपूर्वक स्वर्गवास करतीह, एहिमे संदेह नहि।" चन्द्रकलासँ चन्द्रप्रभा जिज्ञासा केलैन्ह आब हमरा ई बुझबाक प्रयोजन अछि जे पतिव्रत धर्मक आचरणसँ पूर्वमे ककर-ककर उद्धार भेल छैन्ह? तकर दृष्टान्तक किछु इतिहास कहि बुझाय दिअ। जाहिसँ स्त्रीगण मात्रकेँ पूर्ण शिक्षा भऽ जाइन्ह।

...शेषांश पृष्ठ संख्या 38 पर

लेखिका युवा स्तम्भकार छथि।

पंडित लालदास व्यक्तित्व आ कृतित्व



❑ जया रानी

महाकवि पंडित लालदास मैथिल साहित्यकाशक एकटा देदीप्ययान नक्षत्र छलाह जे अपन कलमसँ मैथिलीक लेल सर्वविध रचना कएलैन्ह। हिनक अपन परंपरा, धर्म, संस्कृति, भाषा, लोकाचार, क्षेत्र, लोकवेदसँ अपार प्रेम छलैन्ह। ओ मैथिली, संस्कृत, फारसीक उदभट्ट विद्वान छलाह। हिनक जन्म मधुबनी जिलाक खड़ौआ गाम केर एकटा प्रतिष्ठित आ सुसंपन्न बीयर वंशीय कायस्थ परिवारमे फाल्गुन कृष्ण तृतीया रविदिन (1263) अश्वनी नक्षत्र (1856 ई)मे भेल छल। जन्मक समय हिनक नामकरण भेलैन्ह 'चुड़ामणीदास' मुदा ओ शिशु चुड़ामणी भविष्यमे लालदास नामसँ प्रख्यात भऽ मैथिली साहित्य कऽ 'चुड़ामणी'रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेलैथ।

महाकवि 'रामेश्वर चरित मिथिला रामायण' सहित 18गोट ग्रंथक रचना कएलैन्ह। सब रामायणक रचनामे रामक चरित्रकेँ प्रमुखता देल गेल अछि, परञ्च महाकविक रामायणमे शक्ति अर्थात् सीताक चरित्रकेँ प्रमुखता देल गेल अछि। आन रामायण सात काण्डमे अछि, मुदा हिनक रामायण आठ काण्डमे अछि। अंतिम काण्ड 'पुष्कर काण्ड' अछि।

कविवर आजन्म शाक्त्य रहितहुँ पूर्ण वैष्णव छलाह। मिथिलामे शक्ति पूजामे बलिप्रदानक बड्ड महत्व अछि, परञ्च कविवर तांत्रिक आ शक्ति पूजाक उपासक रहितहुँ वैष्णव छलैथ, हनिक जीवन अदभुत, अद्वितीय छल।

कविवरक अंतिम रचना एकटा महान धार्मिक कृति स्वरूप 'श्रीमद्भागवत गीता'क मैथिली पधानुवाद छल। अनुवाद कार्य हाथमे लेबासँ पूर्व कविवर नयनविहीन जकाँ भऽ गेल छलैथ तथापि रचनाक कार्य स्थगित नञि छल। कारण ज्ञान दृष्टिक अंतर्ज्योतिक विलक्षणता अपूर्व छलैन्ह।

काव्य कलाक संग-संग लेखनी कलामे कविवर वेश मुग्धारिणी शक्ति प्राप्त कएने छलैथ। मैथिलीये नहि परञ्च देवनागरीयो लिपि लिखबमे ओ विलक्षण छटा, अत्यन्त मनोहारिणी पंक्ति आ सुन्दर वर्ण-विन्यासक अवलोकन करैत हिनक मानस नयन विमुग्ध भऽ जाएत छल। विलक्षण सूत्रमे गुंथल मोतिक मनोहर दाना जकाँ कविवरक लिखल वर्णावली कतेको पत्र खंडमे आइयो देखल जा सकैत अछि। छोट-छोट पुस्तिका पृष्ठ जकाँ चारि-चारि आंगुर चाकर रेशमी कपड़ा पर अनेक तंत्र, मंत्र, स्त्रोत अत्यंत मेहीं अक्षरमे अपन चमत्कारपूर्ण लालित्य सौं आइयो अपूर्व आनंद कऽ देबाक शक्ति राखैत अछि। लेखनक ई दिव्य कला-कुशलता कविवरक कौलिक वरदाने कहल जा सकैत अछि। अमरकलाकार कविवर लालदास जीक चित्रकलो दिस ध्यान गेलैन्ह।

दुर्गासप्तशतीक मैथिली टीका केहन विशिष्ट महत्त्व राखैत अछि, तकर सत्यता डालटेनगंजक एकटा कथा-प्रसंगसँ सिद्ध होइत अछि- एकटा भाषणक विषय राखल गेल छल 'दुर्गासप्तशती'। बुन्नीलाल नामक अध्यापक कविवरक 'दुर्गासप्तशतीक' मैथिली टीका हाथमे लऽ टीका देखि अथ पढ़िकेँ सुनाबय लगलाह। सब जजगण बुन्नीलाल बाबुसँ पुछलखिन्ह, "ये बताइये महात्मा लालदासजी कौन हैं?" बुन्नीलाल द्वारा परिचय देलाह पर जजगण सभ कविरक ज्ञान गरिमासँ अभिभुत भऽ गेलाह।

महाकवि सुच्चा मैथिल छलैथ, तैं सीताक चरित्रकेँ उत्सर्ग देखैलैथ। मिथिला सदिखनसँ शक्तिस्थल रहल अछि, माए जानकीक जन्मस्थल। अपन रामायणमे कविवर लिखने छथि।

निज भाषा जननी निज देश।
स्वर्गोसँ जानथि जनवेश।।
तैं हम कथा कहब तेहिं रीति।
नहि विद्या कविता गुण रीति।।
मिथिला भाषा मधुयाधुर्य।
शेष शारदा कऽ प्रचुर्य।।
पुण्य देश मे भाषा निकि।
मिथिला सभहक शिरोमणि थिक।।

महाकवि लालदास जी अगहन कृष्ण तृतीया रवि 1328केँ 65 वर्षक अवस्थामे इहलोककेँ त्यागी वैकुण्ठवास कएलैन्ह। कविवरक निधनसँ मैथिल साहित्यक एकटा देदीप्ययान नक्षत्र टुटि खसल आ मैथिलीक कोरसँ एकटा 'लाल'रत्न विलुप्त भऽ गेल।

महाकविक जीवनक अपूर्व संयोग अछि, जे हिनकर जन्म, विवाह आ मृत्यु एकहीं तिथि मे भेल छल। हिनक विवाहो 13 सालक वयषमे 1277 फाल्गून कृष्ण तृतीया रविदीन भेल छलैन्ह। हिनक धर्मपत्नी (दादी) बड्ड धर्मपारायण आ पतिव्रता नारी छलीह। कविवरक देहांतक उपरांत गंगा लाभ करबाक लेल सिमरिया गेलीह, पाँच-छह मास रहला उपरांत देहावसान नञि भेलैन्ह, तऽ खड़ौआ घुरि कऽ नञि एलीह। गामसँ सटल परसा गाममे रहलीह। हुनक पुत्र सब ओतय पोखरि आ महादेवक मंदिरक निर्माण कऽ देलैन्ह। ओ अपन शेष जीवन ओतिहंये भगवानक भक्तिमे लीन भऽ केलीह आ अंतमे एहिलोकक त्याग कऽ वैकुण्ठवास कएलन्हि। परसा गाममे अखनो ओ पोखरि आ महादेवक मंदिर अछि।

कविवर अपन संपूर्ण जीवन मैथिली साहित्यक सेवामे उत्सर्ग कऽ देलैन्ह। हुनकेँ शब्दमे-

श्रेयकर सुरलोक मे जे विधी विष्णुक धाम।।
तेहि विधि 'मिथिला' मर्तुय मे पावन सूख विश्राम।।

लेखिका प्रसिद्ध स्तम्भकार अओर पं लालदासजीक कूलक वधु छथि।

पं. लालदास उर्फ चूड़ामणिदास



❑ विकास चन्द्र दास

पं. लालदासजीक रामायणक मैथिलीमे वएह स्थान प्राप्त अछि जे संस्कृतमे आदिकवि वाल्मीकिक रामायण आ हिंदीमे तुलसीदासकृत रामचरित मानसक अछि। हिनक रामायणक कथानक आन रामायणसँ भिन्न छैन्ह। राक्षसराज रावणादि सहित श्रीराम सेना युद्धमे अचेत भऽ जाईत छथि। माता जानकी महाकालीक रूप धारण कऽ रावणक सेनाक संहार करैत छथि आ श्रीराम, लक्ष्मण समेत श्रीरामक सेनाकेँ पुनर्जीवित कऽ दैत छथि। एहि प्रकारे मातृशक्तिक विजय होइत अछि।

पं. लालदास शैव आ शाक्त छलाह। मुदा अपन रामायणमे श्रीराम, श्रीलक्ष्मणादिकेँ मांसाहारी चित्रित केने छथि। क्षत्रिय आखेट करैत छलाह आ वन्य पशुक माउस हुनक आहारमे शामिल छल। मिथिलामे माछ, पान आ मखानक प्रचलन आदि काल सँ अछि। समालोचक सब एकर आलोचना करैत छथि।

हमर मत अछि जे जे कवि शाकाहारी छलाह ओ मर्यादा पुरुषोत्तमकेँ शाकाहारी चित्रित केने छथि आ जे मांसाहारी छलाह से मांसाहारी चित्रित केने छथि, ई स्वाभाविक अछि। मिथिलामे नदी सभहक जाल बिछल अछि। नदीसँ माछक उत्पादनक कारणेँ माछ-भात मिथिलाक पसंदीदा भोजन अछि।

पं. लाल दासजीक संक्षिप्त

जन्म - 1856 ई. (फागुन कृष्ण तृतीया)

जन्म स्थान - खड़ौआ, मधुबनी, जिलान्तर्गत, प्रतिष्ठित कर्ण कायस्थ परिवारमे

पिता का नाम - बचकन दास

पितामह का नाम - जाल्पादत्त दास

मातामाह का नाम - महिनाथ दत्त, कमलपुर (फेंट कमलपुर)

विवाह - 1870मे भच्छी निवासी दीवाजीदासक सुपुत्री सँ

देहांत 1921 ई.।

शिक्षा-दिक्षा : बाल्यावस्था सँ कुशाग्रबुकि



छलाह। फारसी एकटा मौलवी सँ पढ़लथि। संस्कृतमे गहन रूचि। अमरकोश, दुर्गासप्रशती गीता, रामायण, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, मनुस्मृतिक गहन अध्ययन केलैन्ह। साधु-संतक समागममे अभिरूचि देखि, हिनक माता हिनसा मातृक कमलपुर पठौलथि। ओतय सँ विराटपुर ऐलैथ। विराटपुरमे राजा विराटक गढ़, मंदिर, मनोरम उद्यान हिनका आकर्षित कएल। पुनः खड़ौआ आबि अपन पितामह द्वारा स्थापित शिवलिंगक अराधाना प्रारंभ कएल। रामचरितमानस आ विनय पत्रिकाक अध्ययन केलैन्ह। अपन काका काशीनाथ जीसँ अंग्रेजी अध्ययन हेतु दरभंगा अयलाह। अर्थाभावक कारणेँ अध्ययन पूरा नञि कऽ सकलाह।

1874मे दरभंगा राजक महफिज कार्यालयमे चाकरी मेहल पर, 1875मे काशीनाथ जीक मृत्युक पश्चात 1876मे संघातिक रोगसँ ग्रस्त भऽ गेलैथ। 1877मे पुनः नौकरी कएलथि। 2 वर्षक बाद नौकरी छोड़ि बाबाधाम चलि गेलाह। महाराज रामेश्वर सिंह द्वारा पंडितक उपाधि प्रदत्त। एहिकालमे दरभंगा Raj court of wordsक आधीन छल। राजव्यवस्थाक सकल अधिकार अंग्रेज अधिकारीक आधीन छल। महाराज रामेश्वर सिंहक पेशकर छलाह आ महारानीकेँ धर्मग्रंथक पाठ सुनबैत छलाह।

रचना :– (1) मिथिलामहात्म्य (हिन्दी मे)

(2) आत्मकथा - अपूर्ण

(3) श्रीमद्भगवतगीताक पध्यानुवाद (मैथिली मे)

(4) रामेश्वर चरित मिथिला रामायण (मैथिलीमे)

(5) एहिमे माता जानकी-जानकी रामायणक मुख्य भूमिका छैन्ह। पुरुषपात्रक भूमिका गौण अछि।

(6) शिव गाथा।

पुण्यश्लोक पं. लाल दासजी के कोठिशः नमन।

लेखक विभागाध्यक्ष, गणित DAV Cantt अओर हिन्दी-मैथिलीक वरिष्ठ रचनाकार छथि।

मैथिली साहित्य मे पं. लालदास जीक योगदान



❑ तनुजा दत्त

मैथिली साहित्यक पुरोधा महाकवि पंडित लालदासक पोथी पढ़ि कऽ हुनक रचना आ रचनाधर्मिताक उल्लेख केनाय हम अकिंचन लेल सूर्यकेँ दीया देखेनाय सन अछि।

महाकवि रचित पोथी 'महेश्वर विनोद' अद्वितीय कृति अछि जाहिमे शिव-पार्वतीक विवाहक प्रसंग अछि। पोथीकेँ विस्तृत विवेचनक संग भाव पक्ष, कला पक्ष आ विविध चौपाई, छंद, दोहा, सोरठा द्वारा प्रस्तुत कएल गेल अछि। मैथिली साहित्यमे एहन अद्भुत कृति संग्रहणीय अछि।

नगर नगर वार्ता चलि गेल।
शिव विवाह गौरिक संग भेल।।
सुनल रती ई शुभ सम्वाद।
मन हर्षित सभ छुटल विषाद।।

विज्ञ रचनाकार सभ लेल हिनक शब्द प्रारूपकेँ अपना अन्दर आत्मसात करबाक जरूरत अछि। ओ सारगर्भित विधानक संग-संग सहज, सरस, सुंदर, सुबोध शैलीमे अपन भाषा वैविध्यक पाण्डित्यसँ मिथिलाकेँ अपूर्व धरोहर प्रदान केलैथ। अपन 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'मे सीताक चरित्र चित्रण कऽ साबित कएने छथि जे धन्य छलीह सीता! जनिक पवित्रता आ तेजक शक्ति रामकेँ प्राप्त भेलैन्ह जाहिसँ भगवान राम दुष्ट रावणकेँ मारबामे सफल भेलैथ। ई रामायण शक्तिक प्रधानताक दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि। विश्व शक्तिमयी अछि अओर सम्पूर्ण सृष्टि मंडलमे शक्तिक प्रधानता आ व्यापकता अछि।

सीतारामक चरित ई, जे पढ़ताह सुनताह।
'लाल' सुख भोग पुन, ब्रह्मणक पद पौताह।।

महाकवि एहि रामायणमे रामसँ बेसी प्रधानता सीताकेँ देने छथि। ग्रंथमे आठटा काण्ड अछि, अन्तिम काण्ड पुष्कर काण्ड अछि जाहिमे सहस्रानन रावणक वधक वर्णन अछि अओर सीताजीक महत्वकेँ विषद् रूपमे देखाओल गेल अछि, जाहिमे ओ रामचन्द्रोसँ बेसी शक्तिमयी प्रतीत होएत छथि।

सुविज्ञ साहित्यकार एहि पुनीत ग्रंथ जहिमे महाकवि अद्भुत काव्य-रचना कएने छथि कें अध्ययन करी मैथिली भाषाकेँ गौरवान्वित करैथ। एहिमे अप्रचलित प्रकार केर नवीन प्रयोगकेँ स्थान देल गेल अछि जे साहित्यकार लेल विचारणीय अछि।

साहित्यक प्रत्येक पुरातन विधा, छंद विधान, मात्रिक आ वर्णिक छंद सब अपन सनातनी ग्रंथ सबमे निःसृत आ साहित्यिक मनीषी सब लेल अनमोल धरोहर अछि। पोथीक पल्लवन, सृजन, प्रकाशन आ संरक्षण सब शारदे पुत्र-पुत्रीक प्रथम कर्तव्य अछि, जकर काव्य मनीषी पूर्णतः निर्वहन केने छथि। एहि स्तुत्य कार्य लेल करबद्ध नमन आ हार्दिक अभिनंदन जे एहि पोथीक लाभ सब मिथिलावासी उठा रहल छथि।

मैथिली भाषा-साहित्यिक क्षेत्रमे महाकविक अवदान देखल जाएत अछि। महाकविक समस्त साहित्य शास्त्र-पुराणक अध्ययनसँ अर्जित ज्ञान, कथा, चरित्र आ बिम्बक आधार पर अछि परञ्च **स्त्री-शर्म शिक्षा** आ **पतिव्रताचार**मे सहज, सरल, सारगर्भित भाव, भाषा, शब्दावलीक प्रयोग आ कथा शास्त्र-पुराण केर वचनक उद्धरणसँ पुष्ट अछि।

स्त्री वर्गक शिक्षा कोन प्रकारक होए, से विचारक आ विवादक विषय भऽ गेल रहय। ओहि समयमे अधिकांश पुरुषवर्ग ऐतिहासिक आ सामाजिक कारणेँ स्त्रीलोकनिकेँ पाठशाला पठाबयक पक्षधर नञि छलाह। मुदा लालदासजी सामाजिक, पारिवारिक जीवनक प्रयोजनकेँ देखैथ **स्त्री-धर्म शिक्षा**क रचना केलैथ जे चारि खण्ड मे अछि। कविवर स्त्री-शिक्षाक महत्वक प्रतिपादन शास्त्र-पुराणक आलोकमे निबन्धात्मक शैलीमे लिखने छथि। गंभीर आ सशक्त रचनाकाक भूमिकाकेँ निष्ठाक संग निर्वहन करैत शुचिता, सौम्यता, काव्य-सौष्ठवक सफलता पूर्वक पल्लवन कएल गेल अछि। सावित्री-सत्यवानकेँ मैथिली नाटकक रूपमे कवि अपन उद्गार प्रकट केलैन्ह।

कवि जतय स्त्री शिक्षामे ओहि समयक स्त्रीक समस्या, व्यथा, पीड़ाक उल्लेख कएने छथि ओहिठाम प्रेम, सौहार्द, विरह, संयोग आदि सबकेँ समुचित स्थान देने छथि।

सुमिरौं लाल दास क कृति,
उर मे आठों याम।
गूँजत अनहद नाद फेर,
मिथिला के हर गाम।।
मिथिला के हर गाम,
गीत जन-जन पहुँचाबी।
दिन हो चाहे साँझ,
हुनक कृतित्व के गाबी।।
शिव-गौरी 'किव' संग,
ग्रंथ गौरव सब पढ़ितौं।
फहरे कृति सारंग,
रचल अछि अप्रतिम सुमिरौं।।

चौपाई कवि कर्म के,
कीर्ति-ध्वजा अछि जेष्ठ।
भावक अद्भुत उर्मियाँ,
लिखल महाकवि श्रेष्ठ।।
लिखल महाकवि श्रेष्ठ,
बहय अछि अनुपम गंगा।
भरथि प्रीती प्रकोष्ठ,
करय छथि तन मन चंगा।।
'तनु' छंदक लालित्य,
बहय अछि सुरसरि आई।
दोहा, रोला, काव्य,
लाल दासक चौपाई।।

लेखिका प्रसिद्ध स्तम्भकार अओर हिन्दी-मैथिलीक रचनाकार छथि।

मिथिलाक ध्रुवतारा लाल दास



❑ प्रो. राजीव कुमार वर्मा

बरीख 1856, भेल मिथिला भूमिमे
ध्रुवताराक जन्म, नाम छल लाल दास
ओ छलाह सर्वगुण सम्पन्न
स्वतंत्रता आ समानताक
भावनासँ ओत-प्रोत, किएक नहि हेताह
हुनक जन्मक एक बरीख
बाद भेल 1857मे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
जे केलक स्वतंत्र भारत लेल मार्ग प्रशस्त।

ई छल सामाजिक-धार्मिक
सुधार आंदोलनक काल
राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती,
इश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन,
रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंदसँ
पटल भारतक धरती-अकास
एक नव शंखनादसँ गुंजल
एहि मध्य भेल मिथिलाक धरती पर
लाल दासक अवतरण।

अंग्रेजी संस्कृति आ सभ्यताक
छल भारत पर प्रतिकूल प्रभाव
चुनौती छल अपन
मैथिली भाषा, मिथिला संस्कृति,
मूल्य आ सभ्यता कोना राखब अक्षुन्न
लाल दास केलैन्ह चुनौती स्वीकार
भेल फेर साहित्यिक जात्राक आरम्भ।

उद्देश्य छल अप्पन संस्कृति सभ्यताक रक्षा
हिनक साहित्यिक जात्रा छल विस्मयकारी
रचलैथ एकसँ एक महान ग्रंथ
गद्य-पद्य दूनूमे सिद्धस्त
मिथिला महात्यम/सप्तशती दुर्गा टीका/
चण्डी चरित्र/सत्यनारायण कथा टीका/
गणेश खण्ड/सुंदरकाण्ड रामायण/
बाल काण्ड/हरिताली व्रत कथा/
श्री गंगा महात्यम/श्रीमद्भगवदगीता/
सावित्री-सत्यवान/जानकी रामायण/
स्त्री धर्म शिक्षा/सोमवारी व्रत कथा।

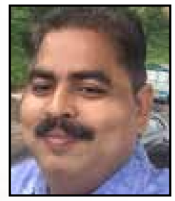
मिथिला भूमि अछि जानकी भूमि
वैदेहीक कर्मस्थली सीता छथीन
लालदासक काव्यक केंद्र
जाहि दौरमे स्त्री सम्पतिक प्रारूप छल
सीताक रूप लालदासक काव्यमे
गौरवान्वित छल।

लालदास थीका स्त्री धर्म, स्त्री संस्कृति,
स्त्री शिक्षा, स्त्रीक अस्मिताक महान प्रणेता
सीता रामायणमे सीता
छथि शक्तिस्वरूपा आ आदिशक्ति।

विश्वास करू स्त्री-सशक्तीकरणक
जड़ि छुपल अछि लाल दासक सीतामे
नारीवादी विमर्शमे लालदासक योगदान
अछि अनिवार्य आ आदर्शकारी
लालदास छलाह बहुभाषाविद
महान विद्वान, दरभंगा महाराजसँ
भेटल धौत सम्मान आ पंडितक उपाधि
इतिहास आ संस्कृतिक जनतब लेल
हुनक रचना सभक अछि
अध्ययन आवश्यक
भारतीय आ मिथिला संस्कृतिक
ओ सभ छथि महान धरोहर!!

लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय मे राजनीति शास्त्रक प्राध्यापक अओर मैथिलीक साहित्यकार छथि।

महाकवि लालदास



❑ मणि 'आमारूपी'

बिहुसल चहकल गाम खड़ौआ,
गुणी बचकन घर आयल बौआ।
पिता संस्कृत मैथिलीक विद्वान,
अंग्रेजी फारसीक सेहो छल ज्ञान।।1।।

सौ अठारह सन् ओ छप्पन,
रत्नगर्भा सुशीला गुणी सम्पन्न।
नवम् दिवस फरवरी मास,
गुंजल आंगन स्वर लाल दास।।2।।

कवि भाव हम बहुते देखल,
की कही महाकविक उल्लास।
कृति रचल तऽ बहुते भेटल,
रचल ग्रंथ हुनकर विन्यास।।3।।

मिथिलाक इतिहासक देखू,
देखब कवि अहाँ बहुते रास।
कृतिका गद्य काव्य पदावली,
नीक भाव संग सुन्नर भाष।।4।।

सिनेह रामेश्वर महाराजक भेटल,
छलाह महारानीक खासमखास।
सबसँ पैघ भेलाह मिथिला मे,
तैयो कहेला लालेकऽ दास।।5।।

पेशकार लालक अलगे पहचान,
पदवी पंडित धौत सम्मान।
हिन्दी मैथिली संस्कृत फारसी,
ज्ञान विधा सभ एक समान।।6।।

गुरू भैया लालक साध्य,
काव्य बनल जानकी आराध्य।
बयस बाइसम नै बनल बाध्य,
विद्वान देखि मुग्ध रचल आद्य।।7।।

बीससँ बेसी लिखल पोथी,
मीठगर भाष मधुर छल थोथी।
सत्यनारायणक सन्नर कथा,
पढ़िते सुख हरत सभ बेथा।।8।।

गुणी मैथिल ओ निर्विवाद,
भगवद्गीता'क मैथिली पदानुवाद।
हरिताली व्रत सन कतेको प्रथा,
सत्यवान सावित्री लिखल सर्वथा।।9।।

स्त्री धर्म शिक्षा वैधव्य-भंजिनी,
भक्त साक्षात पुत्र ओ अंजनी।
बुद्धि समर्पण सभ महाबली,
श्रीमान् मिथिलेशक विरुदावली।।10।।

चन्डी चरित्र कृति सप्तशती,
यति गति संग देखल प्रीति।
काव्य रचल बहु विषय व्याप्त कऽ,
स्त्रीक शिक्षाक अलगे नीति।।11।।

न्याय मीमांसा विशिष्ट मेरूदण्ड,
ब्रह्मोहत्तर संग गणेश खण्ड।
बालरूप संग सुन्दरकाण्ड,
रचल रामायण अद्वितीय प्रकाण्ड।।12।।

कष्ट धीया सिया सभ दिन सहल,
रामायण जानकी सभकिछु कहल।
विश्व इतिहासमे ओ रचल पहिल,
पुष्कर काण्ड कृति जे स्नेहिल।।13।।

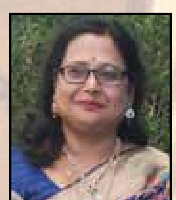
कुशाग्र बुद्धि ओ धर्म परायण,
लिखल रमेश्वरचरित्र रामायण।
भक्त सिनेही शाश्वत शिवनारायण,
महात्म्य गंगा आर मिथिला गायन।।14।।

देखल लोकक बहुते बेबहार,
खोइछ दुरागमनियाँ पोथीक भार।
'महेश्विर विनोद'क पौराणिक आधार,
सरस छन्दमे लिखल सभ सार।।15।।

साल एक्कीसम शताब्दी बीस,
देलक निर्मोही एगो टीस।
सदिखन अमर अहीं कें नाम,
स्वीकार करू हे हमर प्रणाम।।16।।

लेखक मैथिलीक वरिष्ट साहित्यकार छथि।

सादर नमन हे महाप्राण



❑ *कंचन कंठ*

शत-शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम
माए मैथिलीक अमर्त्य पुत्र
दियेलहुँ हुनका जगमे मान
जगतजननी धारिणी सीता
तनिका भेल छल विश्व विपरीता
बनेलहुँ हुनका शक्तिस्वरूपा
नारी शक्ति उठलीह कऽ हुँकार
बुझथु नञि कियो अबला जगमे
छथि माता सभहक पालनहार
धयलहुँ सभ दिन धर्मक ओट
पालन पोषण रहल उत्कृष्ट
पढ़लहुँ गुनलहुँ केलहुँ सभ दिन मान
माए छथि सीता सहती किएक अपमान
हे पुत्र विलक्षण!
धयलहुँ माएक आँचरक कोर
हमसभ रहि अनुगामी सतत,
सीखी, सदाकरब सम्मान माएकऽ
सभहक जननी सीता महान
रचि लेलहुँ ग्रंथ कएल साहित्यकेँ समृद्ध
कएलहुँ चिंतन-मनन हरलहुँ सभक अज्ञान
छलहुँ मेधावी अपने माए सरस्वतीक वरदूपुत्र
क्षणहिंमे कऽ देलहुँ दूर तिमिर काटि देखेलहुँ
अपमानक छल जे परल फंद,
मातु सीते रहलीह सर्वदा पुनीते
छथि गर्व औ सम्मान नारी जगतक
मलिन जे भऽ रहल हुनकर दृष्टि
गढ़लहुँ कएलहुँ नव धवल सृष्टि
जे छथि सभ दिन अमोघ पुनीत पवित्र
अप्पन सुता, छथि जे सीता
करी हुनक हम गायन नित्य,
भरल लालित्य सुशोभित गान
पुलकित, हर्षित, आननंदित, पवित्र मोन
सादर प्रणाम हे महाप्राण,
शत-शत नमन, शत-शत नमन।।

लेखिका हिन्दी, अंग्रजी अओर मैथिलीक रचनाकार छथि।

मिथिलांगन पत्रिकाक प्रकाशित अंक



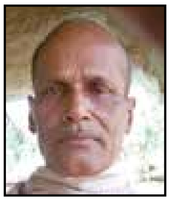




मिथिलांगनक प्रकाशित स्मारिका

2007, 2008, 2010, 2012, 2014, 2017

लौल



❑ *कपिलेश्वर राउत*

प्रेमानन्द चौकीपर बैस किछु सोचि रहल छलाह, सोचता की अपन दिनचर्या आ धिया-पुताक अहार-विहार आ बेवहारक सम्बन्धमे मने-मन विचारि रहल छलाह। एक तऽ मन ओहिना अघोर छेलैन्ह तेकर कारण छेलै, प्रेमानन्दकेँ ब्रह्ममुहूर्तमे पर-पैखानासँ निवृत्त भऽ किछु व्यायाम करी ई नियम छेलैन्ह, मुदा तइमे खलल पड़ि गेलैन्ह। जहन पैखाना बेरमे कलपर पानि लेल गेला तऽ कलक जिभिया पानि छोड़ि देने छेल। पत्नी रतनाकेँ कएक हाक देलखिन्ह, तेकर बाद पत्नी एक लोटा पानि लऽ कलमे ऊपरसँ ढ़ाड़लैन्ह तहन कल चालू भेल। कनिया उपराग दैत पतिसँ कहलैन्ह, "कएक दिनसँ कहैत छी जे कल ठीक करा लिअ से होइते नञि अछि, कलो बेगरते पर मुँह मोरि लैत अछि।"

दोसर कारण भेलैन्ह चाह बेरमे, चीनी घरमे सठल छल तऽ चाहमे कनी समय लगलैन्ह। तेसर कारण भेलैन जे अखबारबला अखन धरि समाचार पत्र नञि दऽ गेल छेलैन्ह।

नअ बाजि गेल छल। तखने रतना एक लोटा पानि, दूटा सोहारी आ चीनी देल दूध एक बाटी नेने एलीह आ पुछि देलकैन्ह, "एना मन अघोर-अघोर किए अछि?"

ताहि पर प्रेमानन्द बजला, "की कहू, आब तऽ उमेरो साठि-सत्तैर बर्खक भेल। अछैते समांग, लगमे एकोटा धिया-पुता नञि अछि जे मिस्त्री आ कि दोकानक कोनो समान आनत, आ कि एक लोटा पानियेँ देत। दूनू बेटा अपना-अपना घरवाली आ धिया-पुताकेँ लऽ कऽ परदेशेमे रहैत अछि, गामपर दूनू परानी अपन करम कुटै छी! तैँ मन अघोर अछि।"

पत्नी बजलीह - होउ, पहिने जलखै करि लिअ। मन जौँ बेसी चिन्तित हएत तऽ शरीर पर ने पड़त।

प्रेमानन्द उमेरगर छथिए। पढ़ल-लिखल कमो रहैत दसगरदा काजमे बड़ मन लगै छैन्ह। तहूमे तेजगर जौँ कोनो विद्यार्थीकेँ देखथिन तऽ छाती फुइल कऽ चौंसैठ इंचक भऽ जाइ छैन्ह। जखन तीस-पैंतीस बर्खक रहैथ तखने दसटा बेरोजगार विद्यार्थीकेँ संगोर केलैन्ह आ हुनका सभकेँ कहलैन्ह, "एना जे बौआएल घुमय जाइ छह से किएक, ने दू घन्टा समय अपनासँ निच्चाँ किलासक विद्यार्थी सबकेँ पढ़ाबैमे लगबै छह। एहिसँ अपनो बुधि बढ़तह आ विद्यार्थीयो सभहक कल्याण हेतइ।"

सएह भेलइ। सर्वसम्मतिसँ प्रस्ताव पास भऽ गेलइ। भिनसर आठ बजेसँ दस बजे धरि विद्यार्थी सबकेँ पढ़बऽ लागल। किछु दिनक बाद फेर प्रेमानन्द एकटा विचार रखलैन्ह जे बेरोजगार छात्रक बीच जेकरा अपना लोकैन पढ़ेलौंह अछि ओइ विद्यार्थी सबकेँ टेस्ट परीक्षा लेल जाए...। मुदा सुरेन्द्र पुछलकैन्ह, "अहाँ किएक एतेक अपसियाँत छी?"

बजलाह - यौ सुरेन्द्र भाए, हमरा सेहन्ता अछि जे हमरो गाममे आइ.ए.एस, आइ.पी.एस. बनए, माने पैघ-पैघ हाकिम बनए।

पछाइत प्रेमानन्द अगल-बगलक मिडिल स्कूलसँ लऽ कऽ हाइ-स्कूल धरिक मास्टर सबसँ सम्पर्क केलैन्ह। मास्टरो लोकैन कहलकैन्ह, "नीक काज अछि एहिमे केँ संग नञि देत, तऽ एकटा समय निश्चित कऽ कऽ हमरो लोकैनकेँ कहू, हमरो स्कूलक विद्यार्थी सभ भाग लेत।"

सएह भेल। दू अक्टुबरक दिन राखल गेल। जाहि दिन दू महापुरुषक जन्म दिवस छल। एकटा महात्मा गाँधी आ दोसर लाल बहादुर शास्त्रीजीक। दिन-तारीख तय भऽ गेल। सुरेन्द्र फेर पुछलकैन्ह, "ऐ काजमे तऽ खर्चो-बर्चो हेतै ने, से केतए सँ औत?"

प्रेमानन्द कहलैन्ह - यौ भाए, सए रूपैआ करि कऽ अपने सभ दस गोरे दियौ ऐ पुण्य काजमे गौरव प्राप्त हएत आ काजो सफल भऽ जेतइ।

सभ कियो 'हँ-मे-हँ' मिला देलक आ सभ कियो मिल कऽ प्रेमानन्देकेँ संयोजक बना देलकैन्ह।

समय जहन नजदीक आयल तहन प्रेमानन्द बगलक प्राइवेट कोचिंग आ सरकारी स्कूलोक मास्टर सभकेँ खबर कऽ दिन-तारीख बुझा देलैन्ह। संगे तीनटा भार्गव डिक्सनरी, तीनटा ऑक्सफोर्ड ग्रामर, तीनटा ट्रान्सलेसन, तीनटा जूनियर ग्रामर आ ट्रान्सलेशनक किताब लऽ लेलैन्ह। संगे पेन-कॉपी सेहो बजारसँ मंगा लेलैन्ह। जलपानक बेवस्था सेहो कएल गेल।

मंचक नाम राखल गेल 'प्रतिभाक खोज।' प्रश्न पत्र तैयार करबाक भार मनोज, सुरेन्द्र, विरेन्द्र आ गणेशकेँ देल गेलैन्ह आ काटि-छाँटि कऽ प्रश्न पत्र तैयार करबाक भार प्रो.



आनन्दजीकेँ देल गेलैन्ह। हर प्रश्नक आगँमे चारिटा विकल्प सेहो देल गेल। प्रो. आनन्दजी अपने दिससँ प्रशस्ती-पत्र सेहो तैयार केलैन्ह।

दू अक्टुबरकेँ बारह बजेसँ कार्यक्रम मिडिल स्कूलक एकटा पैघ कोठरीमे आयोजन कएल गेल। अभिभावक संग शिक्षक लोकैन सेहो निश्चित समयसँ पहुँच गेलाह।

प्रतिभा खोज मंचक नमहर बैनर सेहो टाँगि देल गेल। कार्यक्रमक अध्यक्षता केलैन साहित्यकार जगदीश प्रसाद मण्डलजी आ मुख्य अतिथि रहैथ अवकाश प्राप्त प्राचार्य जनक किशोर लाल दास। सभ कियो पहिने

शेषांश पेज 60...

पैठ



❑ *घनश्याम घनेरो*

माधव गणपति ओतय गेल छल। सटले बासा छैक। माधवकेँ देखितहिं गणपति हुलसैत बाजल, "आबह-आबह!" ओ बरंडापर पएर दैत अछि आ कि गणपति पत्नीकेँ हाक देलकै, "एक कप चाह बना देबै।" ओकर पत्नी किचेनसँ तुरछैत कहलथिन, "यै! अखने तऽ चाह देने छलहुँ, चट्टे-चट्टे चाह हमरासँ नञि बनाओल हैत। जेताह स्नान कऽरऽ से नञि। खाली चाह-चाह!" माधव गुम भऽ अखबार उनटा-पुनटा विदा भऽ गेल।

पाछासँ गणपतिक पत्नी किल्लोल केलैन्ह - 'बौआ! हमरे सप्पत। घुरू, आउ-आउ! अहाँ छलहुँ से ओ कहबो नञि केलैन्ह।

"भौजी! हम अहाँ हाथक चाह नञि पीयब।"

"किए यौ मनमोहना? एना किए छिड़ियाइत छी?"

"यै! ओकर नाम तऽ माधव छै।"

"छैन्ह तऽ छैन्ह! हमरा हुनकामे 'मनमोहना' लागल अछि।"

"भौजी! अहाँ घरक आब जलो नञि पीयब कहियो। जतय पुरुखक बात स्त्री हल्लुक करैत हो।"

माधवकेँ प्रोमोशन भेलै आ संगे ट्रांसफर लेटर भेटलै तऽ अनायास ई सभ स्मरण भेलैक। आब फेर ओत्तहि जा रहल छी। ओकरा आब गणपति नञि भेटतैक। सुनबामे आयल छलै जे भौजी (रमा) गणपतिक अनुकम्पा बले ऑफिसक सहायिका पदपर काज करैत छथिन।

एसडीओ बनि माधव ज्वाइन तऽ केलक मुदा लगलै जी ओकियैत हो तेना। रमा दौगल एलीह। हुनका देखिते माधवकेँ आँखि झरझरा गेलै। अपन कुर्सी छोड़ि रमाक बगलबला कुर्सीपर लुद दऽ बैसि गेल। ओ आँचरसँ हमर नोर पोछैत बजलीह, "मनमोहना हमर! हम करेज पाथर केने जा रहल छी आ ई भोकासीक किल्लोल करै छथि। काज निष्ठासँ करू। अहाँ एलहुँ तऽ एकटा ई भेल जे स्त्रीक मोनमे ऑफिस माहौलक प्रति जे अदक होइछ से मिटा गेल।"

रवि एलै तऽ नीचैनसँ आमक गाछ तर बैसल छल माधव। पत्नी मनोरमा सेहो कुर्सी घीचने आबि बैसलीह। अनायास माधवकेँ पूछा गेलै, "गणपतिकेँ संतानों छैक ने?" पत्नी गेन उठबैत बजलथि, "हे! आबह ने! इएह गेन छौ तोहर, ले!" आठ बरखक लड़िका कुदल-कुदल आबि गेलै। मनोरमा बात नमरोलैन्ह, "चिंहलियै नञि एकरा? इएह ने छैन्ह गणपतिक बेटा - रघुनाथ! कैक बेर तऽ अहाँक जाँघपर मूतने रहय।"

माधव रघुनाथकेँ लग बैसा ओकर माथ हँसोथऽ लगलै। अनमन गणपति सन नाक-सीक! ओह! अनायास ओ बड़का गरम सोंसा छोड़लक। मुड़ी ऊपर केलक तऽ रमा भौजीक हाथमे छौंकी नेने हहायलि अबैत नजरि खिड़लै।

रघुनाथ जेना बाप लग होए, निर्भीक छल। माएक डरे रघुनाथ माधवक कोंढ़मे सटियाएल जाए। ई देखतहि भौजीक हाथसँ छौंकी ससरि गेल। लग अबैत आदेश देलैन्ह, "दियौ ने यौ धेले चाट कनपट्टीमे! पिंगल भऽ गेलैए, भरिदिन कॉलोनीमे नचबैत रहैए। जी नकमानि केने रहैत अछि... ओह! नहि पुछू जे ...!"

मनोरमा सआँचर रमाकेँ पएर छूलैन्ह। मनोरमा अपन कुर्सी घुसकाबैत कहलथिन, "दीदी! ई बैसौथ, हम चाह बनौने अबै छी।" माधवकेँ बात सुनि अचरज भेलै, चाह आ भौजी! कदापि नञि। की हमरा सँ इएह सात-आठ बरिसमे सब बिसरा गेल! अपन माथापर जोर दैत माधव मनोरमासँ कहलक, "ओह! चाह छोड़ू। कोल्ड ड्रिंक्स लाउ संगे रघुनाथ लेल मिठाई आ बिस्किट लऽ लेब। हिनका बुझले नञि छैन्ह जे भौजी चाह नञि पीबैत छथिन!"

रमा साकांक्ष होइत मनोरमाक हाथ पकड़ि लऽग आनैत बजलीह, "हुनका आ मनमोहनामे कहियो नञि पटलैन्ह। ओ शेषावतार होथि जेना आ मनमोहना गुम्मा। हुनका मनमोहनाक टुसब कहियो नञि सोहेलैन्ह मुदा रातिमे सुतैकाल पलंगपर हुनका ठोरपर मनमोहना जरूर अबैत छलाह। जखन-जखन कतौ हुसैत छलाह तऽ एतबे कहैथ 'माधवक बात बेकारे कटलियै' मनोरमा अगुताइतमे हाथ छोड़बैत बजलीह, "दीदी! इएह एलियैन्ह।"

मनोरमाक हाथमे ट्रे ताहिमे मिठाई, बिस्कुट संगे चाहक कप देखि माधवक मोन रिसिया गेलै, "अपन जिद्द अहाँक ऊपर रहय, सएह ने? जनै छियै जे भौजी चाह नञि पीबैत छथिन तऽ अह्लादि कऽ वएह अनतीह।"

रमा भौजीक समर्थन पाबि मनोरमा हुड़कलीह, "से दीदीएसँ पूछियौन्ह ने? जेना सभहक स्वाद हिनकेँ बुझल होंहि, हूँ!" रमा माधवकेँ चाहक कप पकड़ाबैत बजलीह, "उठो ने गे अपन कप। की तोरो हाथमे हमहीं दियौ?" तीनू गोटे संगे-संग चाह सुरकऽ लागल।

एकटा बिस्किट उठा कड़कड़बैत रमा भौजीसँ माधव पूछलक, "भौजी! अहाँ तऽ चाह नञि पीबैत रहियै ने?" भौजी निसास छोड़ैत जवाब देलैन्ह, "की पूछै छी मनमोहना! लोक पियाबऽ लागल चाह, आब अपनो चाह बना असगरे पीबैत छी। लोक सभ कहलथि चाह किएक नञि पीबै अहाँ, चाह भोर-साँझ अवस्से पीबु, 'हुनका' पैठ हेतैन्ह। अहा! ओ कतेक चाहक प्रेमी छलाह। अपना संगे सभ संगीकेँ संगोर केने चाह पीयबैत छलाह। अहाँ जरूर पीबि चाह से हमर सभहक सप्पत अछि।"

"तऽ अहाँ चाह पीयब प्रारंभ कऽ देलियै! नीक केलहुँ मुदा एहिमे कॉलोनीक महिला सभहक कुचक्र तऽ नञि जे बिनु चाहक अबरजात नीक नञि तैं हिस्सक लगोलैन्ह?" माधव रमा भौजीकेँ खोधलक। "नहि बौआ! इएह चाह हमरा भूतसँ वर्तमानमे जीयबैत अछि। हुनको पैठ आ हुनक जान-पहिचान लोककेँ चाहक कप आगाँ घुसका टूटप्पीमे लाथे दुनियादारीक हालचाल बुझि करेज जुड़ा जाइए।"

रघुनाथ प्लेट खलिया ससरि गेल, भौजी देह झाड़ैत बजलीह, "बैसू अहाँ सब बौआ!

शेषांश पेज 60...

अवाक



❑ *राजदेव मण्डल*

अन्हरिया राति। लगै छेलै जेना आसमान अन्हार उगैल रहल होइ। ऊपरसँ हाँइ-हाँइ बहैत हवा गाछ-बिरिछकेँ झिकझोरि रहल छेलइ। तैपर कखनो-काल टिपटिपाइत पानिक बून...।

कखैन समय ठीक भऽ जेतै आ कखैन अधला तेकरा कोन ठेकान। ऐपर केकर वश चलि सकै छै? ओ तँ...।

जितू ऊपर मुहेँ तकलक। लगलै मेघ उनटल आबि रहल अछि। देखते ओकरा टाँगमे पाँखि लगि गेलइ।

एहेन खराप समय आ दू कोसक रस्ता! बान्ह-सड़क बनिते छेलै तैँ ओइ गाम बस-ट्रक तऽ जाइते ने छल। एहेन बिगड़ल समैमे रिक्शा, टेम्पू जेबे नै करतै। पैदले जाए पड़त।

केकर कपार खराप हेतै जे एहेन समैमे निकलत। जितू निकलल छल ठीके समैपर। ओकरा की पता छेलै जे बाटमे बस भँगैठ जेतै आ बसक डरेबरसँ जातरी सभकेँ झगड़ा-फसाद भऽ जेतै। तइ कारण बसकेँ दू घण्टा बेमतलब ठाढ़ केने रहतै। आ जातरी सभकेँ एते समस्या हेतइ। तइसँ बसबलाकेँ मतलबे की।

सभ तऽ अपने सुआरथमे डुबकी मारैत अछि। सुआरथ पूर भेल तऽ वाह नञि तऽ आह। अनकासँ केकरो की मतलब!

ओ सोचलक, मुदा हम तऽ स्वार्थमे नै छी। बेमार सारि बारम्बार फोन कऽ रहल छेली जे, “हम जीअब की मरब तेकर कोनो ठेकान नञि। एक बेर भेट कऽ जाउ।” ओइठाम केना नै जाएब, जैठाम जेनाइ कर्तव्य अछि।

‘केतबो लिखब लेख, परेमक रूप अनेक।’

भेट होएत। ओइ भेट करबामे नै जानि केतेक सुख छइ। केतेक आनन्द छइ। सूचना मिललाक उपरान्त जितूकेँ कछमछी लगलै से अखनो धरि लगलै छेलइ।

ओकरा यादि पड़लै। अँगनासँ निकलैत काल पत्नी टोकने रहइ, “केतए जाइ छिऐ। कोनो ओइठाम लोक नै छइ।” पत्नी जेना तमसाएल रहइ।

शंकामे औनाइत मन! तामसे फड़फड़ाइत! जितू मिलबैत बाजल, “कोनो आनठाम जाइ छिऐ जे एना तमसाएल छी। अहींक गाम तऽ जाए छी।” हँसैत जितू निकैल गेल छेलइ।

सड़कपर ऐबते दोस टोकि देने रहइ, “हे यौ, सासुर अछि पछिम आ जाइ छिऐ उत्तर मुहेँ।”

“कनी बैंकसँ टको-पैसा लेबाक अछि। अखैन हम नञि रूकब।” कहैत आगाँ बढ़ि गेल रहइ।

जितूकेँ मनमे आएल। जतरा पहर टोकि देने रहए तैँ शायद बाटमे एना बाधा भऽ रहल अछि। पुनः सारिक संगे बिताएल समय ओकरा स्मरण हुअ लगलै। हँसी-खेल, फगुआक रंग-अबीर, आमक मास, मधुमास। ओकर रूप, गुण, बोली आ मुस्की मारैत मुख।

किछुकाल लेल जेना ओ स्वर्गक सागरमे डुमकी मारए लगल। सुखकेँ यादि केलासँ लोक किछु पलक लेल पुनः सुखी भऽ जाइत अछि, भोगर सुखक नव रूप!

सुनमसान बाट आ बिकट समय। जेना सभ किछु बिला गेल छेलइ। एकाएक मेघक गर्जनासँ जितूकेँ धियान भंग भऽ गेलइ। जेना फेर चारू-भरसँ अन्हार घेर लेलकै। एहने समैमे घटल घटनाक सभहक चित्र आगाँमे आबए लगलै। ओकरा मन पड़लै। एकबेर सासुरेमे सारक दोस कहने रहए, “हे यौ, इलाकामे जौँ कुसमय केतौ फँसि जाएब तऽ हमर नाम सुमैर लेब।”

सारक मुहसँ दोसक बड़ाइ खूबे सुनने रहए। जितूकेँ बुझेलै जेना कातमे किछो छेलइ। मुदा ओ अन्हारमे किछो नञि देख रहल छल। पएर थरथराए लगलै। कथी छेलै भूत-प्रेत आकि चोर-डकैत। पता नञि ओतए पहुँच सकब आकि बाटेमे प्राण बिला जाएत।

फेर भट्ट दऽ किछो खसल। डेराइते ओम्हर तकलक। देखते जेना मनकेँ भरोस भऽ गेलइ। कियो आगूमे बाट धेने धड़फड़ाइत जा रहल छेलइ। जहिना लटछुटु माल दोसर माल-जालकेँ देखते स्थिर भऽ जाइत अछि तहिना जितूकेँ सन्तोख भेलै। शंका सभ मेटाए लगलै। डेग बढ़ौलक जे संगे चलब, लगमे जाइते ओ उनैट कऽ कर्कश अवाजमे पुछलक, “रेऽऽ ठाढ़ रह! केतऽ रहै छी?”

तखने बिजली चमकल। ओहि इजोतमे जितू ओकर भयंकर रूप देखलक। भागल भय जेना फेरसँ देहमे समा गेल। डरे देह थरथराए लगल। पेटक हवा निकास लेल गोंगिया उठल मुदा ओहो डरसँ अन्दरेमे बिला गेल। अनायासे मुहसँ निकलल, “हौ, अहि अगिला गाम हमर सासुर अछि। हमहुँ तोरा चिन्हैते छिअ आ तहुँ हमरा चिन्हैते हेबहक। एना किए करै छहक।”

“आ रे तोरी-के, कोनए गेलै रौ, चेला सब, ई तऽ सभकेँ चिन्हैते छौ। जुलुम भेलौ। सभटा भेद खोलि देतौ। सभ किछो छीन ले आ सारकेँ साफ कऽ दही।”

“हौ बाप, हम केकरो नहि चिन्हैत छी।”

“चुप...।”

तड़ाक-तड़ाक मुँहपर चमेटा खसए लगल। लगलै जेना बज्जर गिरैत अछि। जितू धड़फड़ा कऽ भूमिपर खसि पड़ल।

“देखै छी पाछूमे इजोत, पुलिस आबि रहल छौ। सभ किछो छीन ले आ गरदैन काटि दही। हम आगाँ निकलै छियो।”

एकटा चेला तरूआरि लेने जितू दिश बढ़ल आर सभ तेजीसँ आगाँ बढ़ि गेल। चेला जितू लग आबि सभ जेबीक तलाशी लेलक आ उठैत बाजल, “यौ गुरू, ई तऽ थप्परेसँ मरि गेलै। मारबै की। भागू जल्दी, पुलिसक इजोत लगीच आबि गेल।”

सभ पड़ा गेल। जितू चिन्हल अवाज सुनि कुहरैत उठल। मन घृणासँ भरि गेलइ। अचरजमे डुमल स्वर निकललै, “धनक लेल लोक एतेक नीचाँ गिर सकैत अछि। केकरा कहबै केँ पतिएतै, जेकरे कहबै सएह लतिएतै।”

जेना लगलै केतौ किछु नञि, कोनो सम्बन्ध नञि। मनुख केहेन आ जानवर केहेन। केँ नीक? अनायासे ओकर हाथ ओहि जेबी दिस गेलै जइमे आठ हजार टका रखने रहए। सभ टका-पैसा सुरक्षिते रहइ। ओ अवाक् भऽ गेल। सोचलक केतौ आ केकरो लग ईमान रहि सकैत अछि। बुढ़-पुराणक बात मोन पड़लै -

केतबो काटबहक जड़ि, ईमानक सोर पताल धरि।

हकमारी



❑ *राम विलास साहु*

रौदी बाबा पुरान सोच-विचारक लोक छैथ। हुनका चारिटा बेटा-पुतोहु छैन्ह, सभ कियो धिगर-पुतगर अछि। पहिने जुआनीमे रौदी बाबा बड्ड बलगर-धकगर आ लठधर छलाह। मुदा शरीर पुरान आ मन थीर भेने विचारो बदैल गेल छैन्ह। ओ आब अपना परिवारकेँ सुलझा शान्तिसँ जीवनयापन करए चाहि रहल छैथ। अपना परिवारकेँ झगड़ा-झंझैटसँ दूर राखए चाहै छैथ। मुदा से नहि भऽ उनटे परिवार झंझटिया भऽ गेल।

बेटा-पुतोहु सभहक किरदानी देख रौदी बाबा शोगाय-रोगाय गेला। एक तऽ बेमार तैपर सँ बेटा-पुतोहुक डकही-पुकही बात सुनि हुनक करेज खंगहैर रहल छैन्ह। खाइयो-पीबैयोमे कोताही हुअ लगलैन्ह। तखन रौदी बाबा बेटा सबसँ अलगे रहबाक निर्णय केलैन्ह। बेटा सभ रौदीबाबाकेँ हक-हिस्सा दइसँ इनकार केलक। रौदी बाबा गामक बुर्जुग लोककेँ बजा पनचैती बैसौलक। पंच लोकैन हिन अवस्था देख बेटा सबकेँ समझा-बुझा देलैन्ह। पंचमे आएल मैनजन काका बजलाह, “समाजमे अखन बुढ़-बुर्जुगकेँ कुभेला करैए जखन कि हुनका सभकेँ रक्षा-सेवा केनाइ हमरा सभहक कर्तव्य छी। जइमे बेटा-पुतोहुकेँ बेसी कर्तव्य अछि। जे माए-बापकेँ कुभेला करैए तै बेटाकेँ कर्तव्यहीन मानल जाइए। सरकारक कानूनक द्वारा सजाक भागी सेहो होइए। तैँ ए रौदी बाबाकेँ आइसँ कोनो कष्ट बेटा-पुतोहु नै दियौ। हुनकर सेवा केने अहुँ सबकेँ नीक मेवा मिलत। सभ किछु हुनकरे अरजलाहा छी आ हुनके मुँहमे जाबी लगबै छिऐ।”

पंचक बात मानि सभ कियो मिलि रहए लगलाह। किछु दिन तऽ रौदी बाबा आ बेटा-पुतोहु सभ मिलि-जुलि रहल। खेनाइ-पीनाइक संग सेवा-बरदाइस, दवाइ-दारू सभमे कोनो कोताही नै भेल। एक दिन बाड़ीमे एकटा केरा घौड़ पकि गेल रहए। रौदी बाबा चिड़ैकेँ खोदि-खोदि खाइत देलखिन्ह। केरा काटैले बेटाकेँ कहलखिन्ह, तैपर बेटा बाजल, “अखन खेतपर काजसँ जाइ छी दुपहरमे जखन आएब तखन केरा काटि आनब।”

रौदी बाबा एकबोलिया बात सुनिते बेटा-पुतोहुपर बरसए लगलाह। गारि दैत अपने हाँसु लऽ केरा काटए विदा भेला। केराक घोड़ नमहर आ भारी रहए जइ कारणेँ हुनकासँ नै सम्हरलैन्ह। केराक घौड़ गीर थकुचा गेल। केराक हत्था छँहों-छीत देख बड़की पुतोहु रौदी बाबापर आँखि लाल-पिअर करए लगलैन्ह। कहा-सुनी होइत-होइत झंझटमे बदैल गेल। तखनसँ रौदी बाबाकेँ मनमे कचोट हुअ लगल। ओ पुनः अपन हक-हिस्सा लेल लड़ए लगला आ कहए जे हम तोरा सबसँ अलगे रहब।

बेटा-पुतोहु बुड़हासँ तंग भऽ अनठा देलक। रौदी बाबा बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बजक्कर भऽ गेलाह। मन विशेकु जकाँ भरि-भरि दिन फौतली पढ़ैत रहैथ। बेटा-पुतोहुक बेवहार आ अनटेटल बोलीसँ तंग भऽ रौदी बाबा थाना जा बेटा-पुतोहुपर नालिश करबाक बात सोचए लगला। हुनकर सोच छैन्ह जे हमरे अरजलहा धनपर बेटा-पुतोहु सुख करैए आ हमरा मुँह तकबैये, से तऽ हम अपने जीता-जिनगी नै हुअ देब। कखनो थीर मनमे सोचै छला जे थाना तऽ फन्ना छी, जे फँसैए ओ ओझड़ा कऽ दुःख सृजैए। तखन तऽ ई दुःख हमरो आ हमरे बेटा-पुतोहुकेँ हएत। सोचैत-विचारैत रौदी बाबा ठमैक जाइ छलाह। मुदा चिन्तासँ चतुराइ आ शोकसँ शरीर घटैत गेल। निर्बल शरीर आ कम बुद्धि भेने रौदी बाबा रोगाए असक्क पड़ि गेलाह।

पिताक लड़खड़ाइत जिनगी आ रोगसँ रोगाएल देख बेटा इलाज खातिर टाँगि कऽ डॉक्टर लग लऽ गेलैन्ह। डॉक्टर साहैब रौदी बाबाकेँ पुछलखिन, “अहाँकेँ की सभ दिक्कत अछि, बताउ?” मुदा रौदी बाबा किछु ने उत्तर देलखिन्ह। डॉक्टर साहैब शरीरक जाँच कऽ पुनः बजला, “बाजू ने की दिक्कत अछि?”

रौदी बाबा कुहरैत बजलाह, “हमरा कोनो जड़ियाएल बेमारी नै अछि। तखन बेमारीक जड़ि छी बेटा-पुतोहुक निष्ठुर बेवहार। बेटा-पुतोहु सभ मिलि हमरा कुभेला आ हकमारी कऽ जान मारैक फेरिमे अछि।”

डॉक्टर साहैब बजलाह, “जखन अहाँ मरैले कमर कसने छी तखन हिस्साक संघर्ष करै छी से केतेक उचित अछि पहिने स्वस्थ हएब तखन ने नीकसँ लड़ब। रहल बेटा-पुतोहुक बेवहार, ओइ लेल अपने चिन्ते छोड़ि दियौ। जे जेहेन करत से तेहेन भोग भोगत। अखन टटके फल भेटै छै एक हाथे करू आ दोसर हाथे फल पाऊ। कर्मे-गुणे ने फलो मिलते। तइले हकमारीक शिकार किए बनै छी। लिअ तीन-चारिटा दवाई लिखि देलौं हेन। किछु दिन सेवन करू सभ दुःख भागि जाएत।”

रौदी बाबा बजला, “हम हक-हिस्सा लऽ कऽ दुःख भगबए चाहै छी मुदा अहाँ दवाई खिआ केतेक दिन जीआ कऽ राखब?”

डॉक्टर साहैब बजलाह, “पहिने दवाई खा मजगूत भऽ जाऊ तखने ने लड़ाईमे सकब जखन मरिये जाएब तखन हक-हिस्सा केना लेब। अहाँ हक-हिस्सा की खोजै छी, सभ सम्पैत तऽ जा जीबै छी अहींक छी। हकमारीकेँ छोड़ि अपन जिनगीकेँ सदकर्ममे लगाऊ।”

डॉक्टर साहैबक आ रौदी बाबाक बात सुनि बेटा-पुतोहुकेँ ज्ञान भेल। बेटा मने-मन सोचए जे सभ सम्पैत तऽ पितेजीक छी। हुनका जीबैत हम किछु नै छी आ ने किछु कऽ सकै छी। हमरा सेवाधर्मक पालन करबाक चाही। सम्पैत कोनो पिताजी अपन माथपर उठौने जेता, ओ तऽ हमरे सबहक हएत आ हमरे रहत...।

बेटा दवाई लऽ पिताजीकेँ घर आपस आनलक। अपन सेवा-कर्म धर्मक पालन करैत पिताजीक सेवा करए लगल। रौदी बाबा बेटा-पुतोहुक बदलल बेवहार आ कर्मसँ खुश रहए लगला। मने-मन खुशियाइत-मुस्कियाइत रौदी बाबाक मुहसँ बजा गेलैन्ह, “लड़लौंह तैँ ने सेवा पेलौंह।”

उपकारक उपकार



❑ *नन्द विलास राय*

जीतन भैया बड्ड मिलनसार बेकती छैथ। दोसरक उपकार ले हरदम बेहाल रहै छैथ। किनको बेटीक बिआह रहए चाहे किनको माए-बापक श्राद्धकर्म, जीतन भैया बिनु बजेलो जा कऽ हालचाल पुछि लै छथिन। जौँ पाइ-कौरीक खगता रहल तऽ ओ मदैतो करै छथिन। कियो बेराम पड़ि गेल हन आ इलाज वास्ते लहेरियासराय डॉक्टर ओतए जाए पड़तैन्ह तऽ संगे कें जेथिन तऽ जीतन भैया। एतबे नहि, पंचमासँ लऽ कऽ दसमा धरिक चटिया सबकेँ बिनु एक्को टका नेने गणितक हिसाब सेहो बता दै छथिन। बतेबो केना ने करथिन। ओ जमानाक ग्रेजुएट छैथ, ताहुमे गणितसँ ऑनर्स। ओइ जमानाकेँ जइ जमानामे नागमणिक खूब चर्च रहैन्ह। नागमणि बिहार विश्वविद्यालयक उपकुलपति बनि कऽ आएल रहैथ। अबिते परीक्षा सभमे चोरि बन्द केलैथ। केतेको विद्याथी। बिच्चेमे परीक्षा छोड़ि देने रहैथ।

हँ, तऽ गप करैत रही जीतन भैयाक। ओ पूरा समाजिक बेकती छैथ। अपन परिवारिक काजसँ बेसी समाजिक काजकेँ महत् दइ छथिन। सन्तानक नाओंपर एक्केटा बेटी छैन्ह जे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्लीमे मैथिली विषयक विभागाध्यक्ष छथिन। गाममे अपने जीतन भैया आ सुलोचना भौजी रहै छैथ। खेत-पथार जे छैन्ह सभ मनकूतपर लगौने छथिन। हँ दूध वास्ते एकटा देशी गाए जरूर पोसने छैथ।

एक मास पहिनुका गप छी। जीतन भैया दीनाभाएकेँ लऽ इलाज करबए लहेरियासराय गेल रहैथ। कर्पूरी चौकसँ पहिने एकटा मोटर साइकिलबला जीतन भैयाकेँ धक्का मारि देलकैनन्ह जइसँ ओ गिर पड़ला। माथ फाटि गेलैन्ह। माथसँ शोणितक टघार चलए लगलैन। ई तऽ रक्ष रहल जे पुलिसक गाड़ी कर्पूरीए चौकपर लागल छलैए। एक गोटे पुलिसकेँ कहलकै जे एक आदमीकेँ मोटर साइकिलबला धक्का मारि देलकै ओ आदमी सड़कपर गिर बेहोश पड़ल अछि। पुलिस आएल आ जीतन भैयाकेँ गाड़ीमे लऽ कऽ अस्पतालक आकस्मिक विभागमे लऽ जा भर्ती कऽ देलकैन्ह। अस्पताल जाइत-जाइतमे जीतन भैयाकेँ काफी खून बहि गेलैन्ह।

डॉ परवीन ड्यूटीपर छला। ओ जीतन भैयाकेँ जाँच-पड़ताल करए लगलखिन। हुनका जीतन भैयाक चेहरा किछु जानल-पहचानल लगलैन्ह। डॉ परवीनकेँ भेलैन्ह जे हिनका हम केतौ देखने छी, मुदा केतए से मोने नञि पड़ैन्ह। एम्हर जीतन भैयाकेँ हालत खराब भऽ गेलैन्ह। हुनका खूनक कमी भऽ गेलैन्ह। डॉ परवीन जीतन भैयाक खूनक ग्रूप जँचबौलैन्ह तऽ ए पॉजिटिव ग्रूपक खून निकलल। ई खून अस्पतालमे उपलब्ध नै छल। डॉ परवीन जीतन भैयाक संगबे दीनाभायकेँ कहलखिन, "हिनका खून चढ़बए पड़तैन्ह। जल्दीसँ ए पॉजिटिव ग्रूपक खूनक प्रवन्ध करू, नहि तऽ पेसेन्टक हालत बहुत खराब भऽ जाएत। अस्पतालमे ए ग्रूपक खून उपलब्ध नै अछि।"

दीनाभाएकेँ लहेरियासरायक कोनो अनुभव नञि। ओ डॉक्टर परवीनक मुँह दिस बकर-बकर ताकए लगलाह। डॉ परवीन फेर बजलाह, "हमर मुँह दिस की तकै छी? जे कहलौं से जल्दी करू। नहि तऽ पेसेन्टक जान बाँचब मुश्किल भऽ जाएत।"

मुदा दीनाभाए की कऽ सकितए? ओ बाजलाह, "डाक्टर साहैब, हमरा किछ नै बुझल अछि। कतए खून भेटै छै, हम सेहो ने बुझै छिऐ? गोड़ लगै छी अपनेइये कोनो जोगार कऽ दियौ।"

डॉ परवीन फेर जीतन भैयाक ब्लडप्रेसर जाँचए गेला तऽ हुनका फेर भेलैन्ह जे हिनका जरूर हम देखने छी। डॉक्टर साहैब अपना दिमागपर जोर देलखिन तऽ हुनका सात-आठ बरख पहिलुका ट्रेनक घटना मोन पड़ि गेलैन्ह। डॉक्टर परवीन सोचए लगलाह, धनि ई महामानव जे आइ हम डॉक्टर छी। नहि तऽ केतए रहितौं केतए ने..। आगाँ सोचलैथ जे हमरो खूनक ग्रूप तऽ ए पॉजिटिवे छी। किएक ने हम अपने शरीरसँ खून दऽ कऽ हिनकर जान बँचा दियैन्ह। हमरापर जे ई महामानवक एतेक पैघ उपकार छैन्ह तेकरो बदला सधि जाएत।

डॉ परवीन अपन सहायक डॉ अनीलकेँ कहलखिन्ह, "एहि दुर्घटनाबला पेसेन्टकेँ हम अपना शरीरसँ खून देब। चलू अहाँ हमरा शरीरसँ खून निकलबा कऽ एहि पेसेन्टक शरीरमे चढ़ा दियौ।

दूनू गोटे यानी जेतए शरीरसँ खून निकालल जाइत अछि ओतए गेलाह। डॉ परवीन अपना शरीरसँ खून निकलबेलैथ। खून निकाललाक बाद डॉ परवीनकेँ कमजोरी महसूस होमए लगलैन्ह तऽ ओ आराम करए लगलाह आ डॉ अनील खून लऽ कऽ जीतन भैयाक शरीरमे चढ़ा देलैन्ह। आधा घन्टाक बाद डॉ परवीन एलाह। हुनका ई देख कऽ संतोख भेलैन्ह जे आब रोगी खतरासँ बाहर अछि। हुनका भेलैन्ह जे हमरा खूनक सदुपयोग भेल आ एक आदमीक जान बाँचि गेल। दोसर ई जे हमरापर जे एहि महामानवक उपकारक रूपमे एकटा पैघ कर्जा छल सेहो किछु हद धरि सधि गेल।

डॉ परवीन दिनमे तीन-चारि बेर जीतन भैयाक हाल-चाल पुछए आ दवाई-विर्रो बतबए वार्डमे अबैत रहथिन। जीतन भैयाक इलाजमे जेतेक दवाई लागल सभ डॉ परवीने आनि-आनि देलखिन्ह। जखन-जखन डॉ परवीन जीतन भैयाकेँ देखए आबथिन, जीतन भैयाकेँ होइन जे डॉक्टर साहैबकेँ केतौ देखने छियैन्ह, मुदा केतए से मोने नञि पड़ैन्ह।

जाहि दिन जीतन भैयाकेँ अस्पतालसँ डिसचार्ज कऽ देलकैन्ह ताहि दिनक गप छी। डॉ परवीन जीतन भैयाक हाल-चाल पुछए आएल रहथिन। ओ जीतन भैयाक बेडपर बैस गेलाह आ जीतन भैयासँ पुछलखिन्ह, "सर,

अपने हमरा चिन्हलियै?”

तैपर जीतन भैया बजलाह, “डॉ साहैब, हमरा होइए जे अपनेकेँ केतौ देखने छी। मुदा केतए से मोने ने पड़ैए।”

डॉ परवीन बजलाह, “आइसँ आठ बरख पहिनुका बात छी। मोन पाड़ियौ। हम तऽ अहाँकेँ देखते चिन्हि गेलौंह।”

जीतन भैया बजलाह, “अहाँ अखन जबान-जुहान छी। स्मृतिशक्ति बाँचल अछि। हम आब बूढ़ भेलौंह साठि-एकसैठ बरख उमेर भऽ गेल हन तैँ स्मृतिशक्ति कमजोर भऽ गेल हन।”

डॉ परवीन कहलाह, “आइसँ आठ बरख पहिनुका घटना छी। मोन पाड़ियौ मनीगाछीसँ ट्रेन खुजि गेल रहए। हम दौड़ कऽ चलैत ट्रेनमे चढ़ल रही। हमरा एतक समय नै भेटल रहए जे ट्रेनक टिकट लइतौंह, तऽ बिनु टिकटे ट्रेनमे चढ़ि गेल रही।”

जीतन भैया बजलाह, “हँ, डॉक्टर साहैब, आब हमरा सभ गप मोन पड़ि गेल।”

एकाएक सिनेमाक रिल जकाँ सभ दृश्य हुनका आँखिक आगाँ आबय लगलैन्ह। हम दरभंगा जाइत रही। हम निर्मलीएमे ट्रेनमे चढ़ल छेलौंह। ट्रेन मनीगाछीसँ खुजि गेल रहए कि एकटा उन्नैस-बीस बरखक लड़का दौड़ैत आबि कऽ कहुना चलैत ट्रेनमे चढ़ल। ओ हमरे बौगीमे आएल। घामे-पसीने नहाएल रहए। ओ हमरा सीट लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ओकर हालत देख हम कनेक खिसैक गेलौंह आ ओकरा बैसा लेलिऐ। ट्रेन मनीगाछीसँ किछ अढ़ाइ-तीन किलोमीटर आगाँ बढ़ल कि सीटी मारलक आ ट्रेनक रफ्तार कम हुअ लगल। मजिस्ट्रेट चेकिंगक हल्ला भेल। ओ लड़का कानय लागल। हम कहलिऐ की बात छैक बौआ, किएक कनै छह? तऽ ओ कहलक,“काका, हमरा टिकट लेल नै भेल। गामेपर देरी भऽ गेल। तैँ दौड़ कऽ आबि कहुना कऽ ट्रेनमे चढ़लौंह। काल्हि पटनामे मेडिकलक प्रतियोगिता परीक्षा अछी। जौँ ई ट्रेन छुटि जइतए तऽ परीक्षा छुटि जाइत। हमरा बिनु टिकटकेँ मजिस्ट्रेट पकैड़ कऽ लऽ जाएत आ जेलमे ढुकाऔत, हमर जीनगी बर्वाद भऽ जाएत। हम बड़ गरीब परिवारसँ छी।

हमरा ओकरापर दया लागि गेल। अपन बात मोन पड़ल रहए। जे ट्रेन छुटि गेलाक कारणेँ ग्रामसेवकबला इन्टरभ्यू छुटि गेल रहए तैँ नौकरी नञि भेल। हम कहलिए, “बौआ नञि कानू। हम अपन टिकट अहाँकेँ दऽ दै छी।” हम अपना जेबीसँ टिकट निकालि ओकरा दऽ देलिऐ। तखने ट्रेन रूकल आ धम-धम कऽ टी.टी. सभ बौगीमे चढ़ल आ टिकट चेक करए लगल। हम अपन टिकट ओकरा दऽ देने रही तैँ धरा गेलौंह। टी. टी. हमरा पकैड़ कऽ ट्रेनसँ निचाँ उतारि



लेलक। एतबो समय नञि भेटल जे ओकरासँ नाम-ठेकान पुछितिऐ वा अपने नाम-ठेकान ओकरा कहितिऐ।

डॉ परवीन पुछलैन्ह, “सर, आब सभ घटना मोन पड़ि गेल किने?”

जीतन भैया कहलखिन्ह, “हँ, सभ बात मोन पड़ि गेल। अहाँ कहु, अहाँ वएह लड़का छी जेकरा हम अपन टिकट देने रहिऐ?”

तैपर डॉ परवीन बजलाह, “हँ सर, हम वएह लड़का छी” बजैत ओ जीतन भैयाक दूनू पएर छुबि प्रणाम केलैन्ह आ बजलाह, “सर, कहू टी.टी. जे अहाँकेँ ट्रेनसँ निचाँ उतारलक तऽ केतए लऽ गेल?”

जीतन भैया बजलाह - टी.टी. सभ बिनु टिकटबलाकेँ उतारि बस लग लऽ गेल। सबकेँ बसमे चढ़ा दरभंगा अनलक। सबकेँ मजिस्ट्रेटक आगाँ पेश केलक। सबसँ पहिने हमरे मजिस्ट्रेटक आगाँ लऽ गेल। हमर कपड़ा-लत्ता देख कऽ मजिस्ट्रेट कहलक, “कपड़ा-लत्ता से तो पढ़ा-लिखा मालूम पड़ता है और बिना टिकट ट्रेनमे सफर करता है।” हम की बजितौं चुप्पे रहलौंह। मजिस्ट्रेट आगाँ बाजल, “एक हजार रूपैआ फाइन किया जाता है।” हम कहलियै, “सर, किछु कम करि दियौ। हमरा लग पाँचे सए टका अछि।” मजिस्ट्रेट बाजल, “दो हजार रूपैआ फाइन किया जाता है।”

हमरा लग दू हजार टका नहि रहए तैँ जेल जाए पड़ल। जेलसँ गामपर चिट्ठी लिखलौंह तखन जा कऽ हमर पितिऔत भाए फाइनबला रूपैआ दऽ कऽ हमरा जेलसँ निकाललक।

डॉ परवीन बजलाह, “सर अहाँकेँ हमरा खातिर जेल जाए पड़ल। अपने आदमी नञि, फरिश्ता छी।” कहैत डॉ एकबेर फेर जीतन भैयाक पएरपर झुकि गेलाह आ प्रणाम केलैन्ह आ कहलैन्ह, “सर, ओहि परीक्षामे हमरा सफलता भेटल आ आइ अहाँक कृपासँ हम डॉक्टर छी। अपनेकेँ हमरा पर बड़ उपकार अछि। हमरा लायक कोनो सेवा हुअए तऽ निधोक कहु।”

जीतन भैया कहलैन्ह, “अहाँ अपना शरीरक खून दऽ हमर जान बचेलौंह सभ उपकारक बदला चुका देलौंह। हम अहाँसँ एतबे आग्रह करब जे सेवाक भावनासँ डॉक्टरी करू। गरीब-गुरबाक मदहत करैत रहियौ।”

डॉ आश्वस्त करैत वादा केलैन्ह जे ओ सदति सेवाक भावनासँ डॉक्टरी करताह।

पसरैत माथ, सिकुरैत छाती



❑ *रतन कुमार 'रवि'*

गोर लगैत छी बड़का भैया - पएर छूबैत उमा रमणकें कहलकै।

"नीके रह। उमा छी गे?" अकचका कऽ उमाकें देखि रमण बाजल। "गै! कतेक बरखक पाछाँति आइ हम तोरा देख रहल छीयौ। शकुंतला, श्याम आ अरविंदोकें देखने कतेक बरख बीत गेल अछि। कहियो फोनो-फानसँ तों सभ गप्प करतैंह तऽ संतोष होएत। पता नञि किये सबकें हमारा सबसँ उच्चाट भऽ गेल छौ। हमारासँ कोनो कष्ट छौ तऽ बतेबाक चाही। सबकें समाधान छै, खैर. .. छोड़ ई सभ बात। पाहुन आ धिया पूताक हाल-चाल कह। सास-ससुर नीके छथुन ने?"

उमा - हँ बड़का भैया! सभ नीके छथिन्हे। मझिला आ छोटका भैयो सभ नीके छथिन्हे। शकुंतलोक स्थिति बेजाय नै छै। हम सभ मस्तीमें रही रहल छी। हमरा सभ वास्ते अहाँ चिंता नै करू। हमरा सभक आपसमे गप्प-शप, एक-दोसर ओहिठाम आन-जान होयते रहैत छै। आहाँसँ ककरो किएक दुःख हेतै। अहाँ अपन कहु। बड़की भौजी आ बाल-बच्चा सभ नीके?

रमण - हमहुँ सभ ठीके छी। गै उमा! हम सभ मोन नै पड़ैत छियो। तोहर भौजी हरदम चर्च करैत रहैत छथुन आ हमरा उपराग दैत रहैत छथुन जे हम तोरा सभहक खोज पूछारी नै करैत छियौ। बालो-बच्चा तोरा सबसँ अनचिन्हार भेल जाइत छौ। शकुंतला, अरविंद, श्यामो सबकें सपरिवार आबय लेल कहीं। धियो-पूताकें तऽ अपन मात्रिक आ दादा-दादी गामक मनोरथ पूरा करऽ दहीं।

"भैया यौ, किया अपन जन्मडीहो बिसरैत छै? मुदा भोरसँ रातिमे सुतैत काल धरि घरक काम-काजमे ओझरायल रहैत छी। कखनो पलखैत कहाँ भेटैत। नोकर-चाकर पर कोन विश्वास? घर मे तऽ हरदम पार्टीये होएत रहैत छै। बड़का-बड़का लोकक पार्टी, आयल-गेल लोकक तऽ बाते छोड़ू। आइयो पार्टीयेक खरीददारी लेल आयल रही।" उमा कहलकै।

रमन - गै! ई जंजाल लोककें सभ दिन लगले रहैत छै। मोन होइतौ तऽ तोरो नैहर ऐबाक फुरसत भेटिए जेतौह?

सुनी उमा किछु क्षण चुप रहल। फेर ठहैर-ठहैर कऽ गम्भीर स्वरमे बाजल - भैया, तैं मन रहैतो अहाँ ओतय आबयसँ कतरायत रहैत छि। इएह समस्या मझिला, छोटका भैया आ शकुंतलोक संग अछि। हमारा सबकें एक-दोसरा ओहिठाम ऐनाय-जेनाय होयत रहैत अछि। हमरा दूनू बहिनकें नैहर आ बच्चा सबकें मात्रिक सुख हुनका दूनू ओहिठाम भेटिये जाइत छै।

भैया! हम अहाँक दुःख आ मजबूरी बुझैत छी। माए-बाबुकें मरला पछाँति अहाँ आ बड़की भौजी हमारा सभ लेल माए-बाप बनी ठाढ़ भेलहुं। सभ भाय-बहिनकें पढ़ेलौंह, नीक घर-वर-कनिया ताकि वियाह करेलौंह। जखन अहाँक धिया-पूताकें पढ़य-लिखयक समय आयल तऽ मझिला आ छोटका भैया भिन्न भऽ गेलाह। हम दूनू बहिन अपन-अपन



झूठें की कहु, धिया पूता आ हमहुँ दूनू प्राणी ए सीसँ बाहर होयते हाँफ लगैत छि। बिनु टाइल्सक फर्श पर हमरा सबकें तड़बा छिला जाइत अछि। सबकें टाइल्स आ फ्लशबाला वाशरूम आ बाथरूम चाही, सभ कियो आरो आ मिनरल वाटर पियत। धिया पूता तऽ क्षणे-क्षणे बर्गर, पिज्जा आ फास्ट फूडक माँग करैत अछि। बिनु ब्रांडेड गद्दाकें हमारा सबकें निन्नो नञि आबैत अछि। आ भैया अहाँ एहिठाम ई सभ सुख-सुविधा आ कान्वेंटमे पढ़े आ अंग्रेजी बाजैवाला बच्चाक अभाव अछि। हमर बच्चा सभ ककरा सगें बाजतै आ खेलैतै? मोन रहितों हम सभ तैं नञि आबैत छि अहाँ ओहिठाम। धिया-पूता कहऽ लागत जे मम्मीक नैहर कत्ते पिछड़ल आ दरिद्र अछि, सुनी हम लाजे मैर जाएब। अपन नैहरकहिंनता हम केना बर्दाश्त कऽ सकब। सासुरमे रमल छि। आहाँ असगर भऽ गेलहुँ। बाल-बच्चाकें पढ़ायव आ कि घर द्वारमे आधुनिक सुविधा जुटायब? भैया, कहबाक नै चाही, दुःख हैत सुनी कऽ। मुदा कह परैया जे जमाना आ आधुनिकता केर नजरमे अहाँ आ हमरा सभक बीच स्टेटसक फर्क भऽ चुकल अछि। शोणितक सम्बंध वर्गमे विभाजित भऽ पतरा रहल अछि। अपना सभहक बीच सोच, लाइफ स्टाइल, तौर-तरीका, कल्चर आ प्राथमिकतामे अंतर आबि गेल अछि। सम्पन्नता-विपन्नताक लक्ष्मण रेखा खिंचा गेल अछि अहाँ आ हमर सभक बीच। हमर सभहक बच्चा अहाँक बाल बच्चा संग खेलेनाय-बजनाय पसीन नञि करत। सत्य तऽ इहो अछि जे हमर सभहक बादक पीढ़ी तऽ आहाँकें सम्बन्धीयो मानैसँ लजायत। भैया! हमर बात अकठ लागैत हैत मुदा ई

साँच अछि। जखन अहाँ अहिठाम हमरा सभ ऐहन व्यवस्था भऽ जाइत तहियासँ हमहुँ सभ अहाँ ओहिठाम आन-जान करय लागब। दुःख नै मानब। आजुक समाज आ दुनियाक मन-मिजाजसँ अहाँकेँ अवगत करेलौंह, इएह साँच अछि, बड़का भैया! हमारा मार्केटिंग करबाक अछि, बिलम्ब भऽ रहल अछि। आब अहुँ जाऊ।

एतेक कहि रमणक पएर छूबि उमा विदा भऽ गेलै। जाइत उमाकेँ निहारैत रमण सोचय लागलाह उमा आब अनचिन्हार जकाँ भेल जाइत अछि। ओना तऽ हम नै जैतिये मुदा ऐको बेर अपना घर पर चलयक आग्रह नञि केलक। भऽ सकैया ओ धर-फरमे बिसैर गेल हेतै। ओना ओ जमानाक अनुसारेँ कोनो बेजाय गप्प नञि कहलक, दोष ओकरो नै छै। उमा सभहक पीढ़ी संक्रांति कालसँ गुजैर रहल अछि। ओ सभ माथा आ हृदयक द्वंद्व बीच जीबि रहल अछि। अखन माथा हृदय पर भारी देखायत अछि तैं आजुक पीढ़ी हृदयसँ नञि माथासँ निर्देशित होयत अछि। ठीक छै मुदा एहनो तऽ बात नै छै जे हृदयक सभटा निर्णय खराबेटा होयत अछि। हृदये नञि तऽ मनुखे की? आजुक लोकक सोचमे धनटा सर्वोपरि अछि। ओ नञि जानैत अछि जे समृद्धि अपना संगे ढेर रास दुर्गुण आनैत अछि। डायर मोटा कऽ अपनाकेँ गाछे मानऽ लागैत अछि। मेघमे चिड़ैकेँ उड़नाय बड्ड पसीन छै, मुदा जखन उड़ैत-उड़ैत थैक वा मोन उचैट जाइत छै तऽ नीचा आबि कोनो गाछे पर विश्राम करैत अछि। नीक दिन आ पैसा रहैत लोककेँ अनेरो मामा-नाना भेट जाइत छै, मुदा कें जानैत अछि जे ओ कंस-शकुनि हेताह वा कृष्ण मामा।

उमा हमरा नीक लागल तोहर सभहक समृद्धि जायन। हम सभ तोरा सभहक लायक भले नै रहियौ मुदा हमर सभहक मोन आ घरक दरवाजा तोरा सभ वास्ते हरदम खुजल रहतो। चिंता एतवे अछि जे हमर धिया-पूता कहीं तोहर धिया-पुतासँ आगाँ निकैल गेलौ तऽ ऊ सभ तोरा सबकेँ चिन्हतो की नै?

लौल

क्रमशः (पृष्ठ 53 सँ) ...

गाँधीजी आ शास्त्रीजीक तैलचित्रपर माल्यार्पण केलैन्ह। स्वागतगण भेल, स्वागत भाषण भेल आ तेकर बाद दूनू अतिथि महापुरुषक सम्बन्धमे अपन-अपन मनतव्य सेहो रखलाह। पछाइत प्रतियोगिताक कार्यक्रम शुरू भेल।

क्लासक मुताबिक सभ विद्यार्थीकेँ अलग-अलग करि कऽ प्रश्नोत्तर थमा देल गेल आ बीस मिनटक समय देल गेल। प्रश्नक उत्तरो तऽ दस सेटमे ने देनाए छल। सिरिफ चेन्हटा लगौनाए छल।

परीक्षक लोकैन मुस्तैजीसँ निरीक्षण करैत छलाह। बीस मीनटक बाद जहन प्रश्नोत्तर सभ विद्यार्थीसँ लऽ लेल गेल आ जाँच कएल गेल। जाहिमे जे.एम.एस. कोचिंग सेन्टर-चनौरागंजक दूटा विद्यार्थी दसमीमे फस्ट केलक आ एकटा सकेण्ड केलक।

उतीर्ण विद्यार्थी सबकेँ विस्कुट आ अभिभावक आ आएल अतिथि सबकेँ सेहो हल्का जलपान देल गेल। तकर बाद फस्टकेँ भार्गव डिक्सनरी, सकेण्डकेँ ग्रामर आ थर्डकेँ ट्रान्सलेशनक किताब पुरस्कार स्वरूप देल गेल संग प्रशस्ती-पत्र सेहा।

तखने एकटा विद्यार्थी बाजल - रिजल्टमे भेद-भाव कएल गेल हन!

ओ विद्यार्थी केहन तऽ हरदम मोबाइल सनक उपयोगी वस्तुकेँ खेलौना बना देने रहए। दाबी मुदा सबसँ अधिक। तुरन्ते जहन पुनः जाँच भेलै, विद्यार्थीक आगाँ तऽ उहो स्वीकार केलक जे हमर भूल छल। तकर बाद सब पास केनिहारकेँ कॉपी-कलम सेहो देल गेल।

अखुनका विद्यार्थी लोकनिक आ अपन जिनगी समाजक विकृत रूप सहए सभ विचार प्रेमानन्दक मनकेँ अघोर केने छेलैन्ह। तखने शंभु अखबार लऽ कऽ हल्ला करैत आएल जे आजुक टटका समाचार, अपना गामक जीबछक बेटा रंजीत डाक्टरी पास केलक हन। पहिल पृष्ठपर देखा देलकैन्ह।

"हौ, से नञि बुझलहक हमरा लौल लागल अछि जे हमरो गाममे डाक्टर, इंजीनियर, आइ.ए.एस, आइ.पी.एस. होइतए, गामकेँ रौशन करितए। से कहाँ अखैन धरि भेल हेन? एतेकटा गाम अछि, पढ़लो-लिखल आब तऽ कम नहञ अछि, मुदा कहाँ आइ.ए.एस; आइ.पी.एस. कियो बनि रहल अछि?"

शंभु कहलकैन्ह - बाबा यौ, शंकर जे सयकिलक सीट कौभर बनबै छल तकर बेटा तेज प्रताप आइ.ए.एस.क तैयारी कऽ रहल अछि।

"अँइ! ठीके हौ!" बाबा बजलाह।

शंभु कहलकैन्ह - ठीके कहै छी बाबा।

ठीक छइ। कौहुना भगवानक इच्छासँ पास कऽ जाए। हँ तहन एहेन नञि डाक्टर भऽ जाए जे सीरिंजसँ रोगी सबहक खूने घिंचइ। आ नञि एहेन आइ.ए.एस, आइ.पी.एस. हुआए जे विकासक फण्डेकेँ सर्वग्रास कऽ लिअए।

शंभु - की करबै बाबा, जेहेन नेत तेहने ने बरऽकैत हेतइ।

प्रेमानन्द - हौ बौआ, हमरा जे लौल लागल अछि से तऽ एकटा पुरा भेल, आब देखहक छौड़ा सबकेँ की करैत अछि। आशा तऽ अछिये, निराश कहाँ भेलौं हँ।

पैठ

क्रमशः (पृष्ठ 54 सँ) ...

देखियौ ने छौंड़ा कोना पड़ा गेल? आब जाए दिअ!" रमा भौजी माधवक आँखिसँ ओझरा गेलीह तऽ माधव पत्नीसँ पूछलक, "ठीके यै, पैठ होइ छै?" ओकर पत्नी उतारा देलकै, "पतिक प्रेम आ ताहूमे ओछावनक स्नेह कहियो स्त्री नञि बिसरा सकैए। चाह सन बहुतरास आर लाथ हेतैन्ह जकर छाँहमे ओ अहाँ मित्रकेँ हेरैत हेतीह। सपना आ एहसास स्त्रीक जीबाक संबल होइछ। ताहि बले दीदियो समय गुदस्त करैत हेतीह।"

माधव मनोरमाक गट्टा पकड़ि उठबाक यत्न केलक, बाजल, "पुरुखो संगे एहिना होइत हेतै, नै?" ओ दोसर हाथे पत्नीक मुँह हँसोथैत कोठली दिस विदा भऽ गेल।

अपूर्व स्वाद



❑ *कुमार मनोज कश्यप*

महिना लगैमे एखन एक हफ्ता आर छै। सभ खुदरा-खुदरी मिला कऽ गिनलक... कुल चारि सय नब्बे रूपया मात्र। चाऊर, दालि, आँटा, तेल तऽ घरमे भरि महिनाकेँ छैहे। बस घटल-बढ़ल सामान आ तरकारी, दूध इएह सबकेँ लेल पाई चाही। ओ अंदाज लगेलक ... एतबा पाईसँ कहुना महिना खिंचा जेतै बशर्ते कोनो अप्रत्याशित खर्चा नञि बजड़ै। ओ आश्वस्त भऽ साईकिल लऽ कऽ तरकारी लाबय बिदा भेल। कॉलोनीक गेट पर रफीक अबैत देखा गेलै। ओ रूकल, “की हौ रफीक भाई! कहाँ सँ अबैत छह? ई भरल साँझ कऽ घोघना किये लटकेने छह?”

“नञि भाई! कोनो बात नञि। सभ ठीक छै।” रफीक सामान्य हेबाक प्रयास केलक।

“तों कहबऽ तऽ हम कोना पतिया लेब! किछु बात तऽ जरूर छै जे तोरा असहज कऽ रहल छह। हौ, हमहुँ तोहर भैयारिये छियह। फरिछा कऽ कहऽ कोनो बात छै तऽ।” ओ साईकिलसँ उतरि रफीकक आर लऽग गेल।

“की कहियऽ भाई... बात कोनो नै आ अखन बड़ीटा! अई महिनामे रिश्तेदारीमे कैकटा निकाह सभ रहै ताहिमे हाथ खाली भऽ गेल। आ तही पर कोइढ़ मे नोचनी जकाँ बड़का छौंड़ाकेँ वजीफाक परीक्षाक फॉर्म भरैकेँ काल्हिये लास्ट डेट छै। छौंड़ा चन्सगर छै, फॉर्म नञियो भरेबै तऽ ओहो नीक नञि आ ककरो आगाँ हाथ पसारितो लाज लगैयै।”

“कते पाई लगतै?”

“साढ़े पाँच सय, साढ़े चारि सयकेँ ड्राफ्ट आ सय रूपयाकेँ प्रॉस्पेक्टस।”

“हमरा लऽगमे एतबे बाँचल अछि, लैह आरो कोनो जोगाड़ कऽ कऽ काज चलाबह।”

“आ तों?”

“धुर्र मर्दे! तों हमर चिंता जुनि करह। एक्के हफ्ता रहलैये आब... काज कहुना चलिये जेतै। सभहक जोगाड़ भगवान लग छैन्ह। एखन तौँ जाह जल्दी बाकीक जोगाड़ करह बेटाकेँ फॉर्म भराबह।”

आब दुहुकेँ ठोर पर मुस्कान छलै। दुहु अपन-अपन घरक रस्ता धेलक। जल्दी घर जा कऽ बतबैकेँ छै नञि तऽ कनियाँ तरकारी लै बैसल रहतै। आइ ओकरा नून-तेल संग रोटी खेबामे अपूर्व स्वाद बुझा रहल छलै।

जन आ तंत्र



❑ *ज्ञानवर्द्धन कंठ*

बुढ़िया गाछीमे जमघट लागल रहैक। किछु गोटे आम तोड़ऽ-तोड़बाबऽमे लागल रहथि। शेष लोकनि समकालीन विषयक चर्चमे संलग्न रहथि। एकटा प्रश्न पर विशेष झौहड़ि भऽ रहल रहैक जे जखन हमरा लोकनि जनतंत्र स्वीकार केने छी तखन जनक हाथमे तंत्र नञि भऽ तंत्रक हाथमे जन किएक भऽ जाइछ? बगिलेमे बच्चाकाका आमक बोरिया सरिया रहल रहथि। केओ पुछि देलकैन्ह, “एहि प्रश्नपर अपनेक की मत?”



बच्चाकाका मुस्किया देलथिन्ह आ रमेशकेँ कहलथिन्ह, “रौ रमेशबा! कनी एहि मचान पर चढ़ि पएर लटका कऽ बैस! आब अपन दहिना हाथ आ दहिना पएरकेँ घड़ीक सुइयाक अनुरूप संगे-संग गोल-गोल घुमाबह।” ओ ओहिना घुमाबऽ लागल। तऽ बच्चाकाका फेर कहलथिन्ह, “रमेश! आब हाथकेँ उनटा दिशामे गोल-गोल घुमाबह।” ओ तहिना केलक। बच्चाकाका फेर टोकलैन्ह, “रौ! हाथकेँ उनटा घुमाबऽ कहलियौ तऽ पएर सेहो उनटा कोना घूमऽ लगलौ?”

ई दृश्य देखि सम्पूर्ण मंडली सन्न रहि गेल। रमेश बाजल, “सत्ते! ई पएर तऽ अपने उनटा घूमऽ लगलैक! आश्चर्य!!!”

बच्चाकाका बजलाह - देखू लोकनि! एकर पैएकेँ जौं ‘जन’ मानी तऽ एकर हाथ भेल ‘जनक प्रतिबद्धता’! ई प्रतिबद्धता कोनो मत, वाद, विचार, स्वार्थ वा आवश्यकता भऽ सकैत अछि। पएरकेँ कोनो हाथ नञि गछारने छैक जे हमरे संगे घूमू, मुदा ओ अपने ओकरा संगे ओकरे अनुरूप घूमऽ लगतैक तऽ कियो की करतैक?” कहि बच्चाकाका खरपा खट-खटबैत अगोरबाहक संग ओतयसँ विदा भऽ गेलाह।

छी तैं न



❑ *रीना चौधरी*

सीमा भोरेसँ घरक काजमे लागल छलीह। धिया-पुताकेँ तैयार कऽ टिफिन दऽ स्कूल पठा, आब पतिदेव लऽ लंच बनाबमे जुटि गेलीह। हुनको परिचर्या तऽ बच्चे जँका छय घड़ी, रूमाल, पर्स, मोबाईल सभ हाथ कऽ दियौन्ह। पतिदेवकेँ ऑफिस विदा कऽ, उधेसल घरकेँ सेरसाबुत करैत, कखनि बारह बाजि गेल से पता नञि। पूजा-पाठ करैत एक। जौँ कदाचित एक्कोटा फोन आएल तऽ आर देरि। भोरू पहर अहिना सभ दिनक हाल।

सीमा डाइनिंग टेबल पर थारी राखि कुर्सी पर बैसि पानि पीबैत थारी दिस देख रहल छलीह। भात, दालि, तरकारी, भुजिया, रोटी, सलाद, दही सभ थारिक चारूकात सजा कऽ रखने रहैथ। घड़ी दिस नजरि गेलैन्ह दू बाजि रहल छल। बरबस आँखि नोरा गेलैन्ह। जखनि माँ रहथि तऽ अपसियांत भेल कहय छलखिन्ह, "हे! कनि नहा लिय, खा लिय ने, काज तऽ भरि दिन लागल रहत।"

हम कचकचा कऽ कहैत रहियैन्ह, "ई ऐना नञि हल्ला करौथ, हम काज निपटायेकेँ स्थिर भऽ नहायब तखान खायब।"



ओ सदिखन कहय छलखिन्ह, "छी तैँ न टोकय छी। हम नञि रहब तऽ केँ पुछत, खेलैं कि नञि खेलैं। बच्चा सब तऽ भरि दिन स्कूल, ऑफिस मे रहयै। अखनि टोकय छी तऽ नञि नीक लगैये। जखनि नञि रहब तऽ मोन परत।"

सीमाक आँखिसँ नोर झहरि रहल छलैन्ह आ ओ कहुनो कऽ खा रहल छलीह।

सुमतिया



❑ अरुण लाल दास

सुमतिया आ दिनमा जरे-जरे सात किलास धरि पढ़लकै। गोर नारि सुमतियाक नाक तऽ पिचले रहैक मुदा चढ़ंत जुआनीमे ओ आर निखरि कऽ नीमन एकटा माउग नियर लगैत छलै। कद्दू सन पोछल-पोछल बाँहि धप-धप गोर सुमतियाकेँ देखिते दिनमाकेँ मनमे प्रेमक हिलकोर उठय लगलै।

सात-आठ बरखक बाद दूनूकेँ एक-दोसरासँ बतियेबाक मौका लागल रहैक।

दिनमाकेँ समरथ सकरथ देखि सुमतियाक मनमे लड्डू फूटय लगलै। छट्ठा-सतमा किलासक बात ओकर स्मृति पटल पर नाचय लगलै। केहेन उकट्टी रहय दिनमा। मजाल छलै ओकरा



आगू सुमतियाकेँ किओ आँखि उठा कऽ देखि सकै छलै।

दूनूकेँ आमक गाछीमे भेट भेलै तऽ भरि मन बतियाइते-बतियाइते प्रेम परबान चढ़ि गेलै। दिनमा ओकरा मनमे बैस गेलै।

फेनो एक राति दिनमाक मोबाइलसँ मैसेज पढ़िकऽ सुमतियाक मन लड्डू जाँकित नचैत-नचैत गोल-गोल घूमय लगलै। ओकरा बिसबासे ने होइक जे दिनमा ओकरा एहन नकपिच्चीसँ बियाहक प्रस्ताव रखतै।

सब गप्प तय भऽ गेलै। अधरतियाकेँ बादे सुमतिया कठपूला लग ठाढ़ छलै। दूनू गोटे पैदले रमि देलकै बाबा कपलेश्वर थान।

मंदिरमे भोरे-भोर पहुँच कऽ जयकारा लगबैत दिनमा एक चुटकी सेनुरसँ सुमतियाक सीथ लाल करैत बाजि रहल छलै, "हे बाबा, हमरा दूनूकेँ जनम-जनम धरि लौक लगौने रहू।"

लौकडाउनमे दूनूक डेग बड्ड आगाँ धरि बढ़ि गेल छलैक।

घरौंदा



❑ पीयूष रंजन 'राहुल'

देर राति दिवालीक लेल गाम पहुँचलौंह। एतेक लंबा सफरक बाद शरीर थकानसँ टूटल छल। भोरे-भोरे आँखि खुलबाक नाम नै लऽ रहल छल। दिवालीक तैयारी खूब जोर शोरसँ भऽ रहल छल। ओना चाह बिनु भोरे-भोरे निन्न नञि टूटैत अछि, मुदा आइ भनसाघरमे बनैत आलू-कोबीक तरकारीक सुगंध हमर धैर्यक परीक्षा लऽ रहल छल। एतेबेमे छोटकी बहिन चाह लऽ कऽ आबि गेल। अपन हाथसँ टॉवेल फेंकैत कहलक, "जल्दीसँ नहा लियौ। कुम्हार लगसँ दीप अनबाक अछि आ घुरैत काल केरा आ धानक लावा सेहो लऽ लेबै। पापा कहबा देने छथिन। अपन खेतक अछि। ककरो संगे लऽ लिय।" हम जल्दी-जल्दी चाह खत्म कऽ नहाय वास्ते बाथरूम दिश लपकलौंह। सबटा थकान फुर्र भऽ गेल। पावैनक अपन अलग बात आ रौनक होइत अछि। समुचा गाम चकाचक लागि रहल छल। सब अपन-अपन घरकें सजाबैमे लागल छलैथ। फूल, पत्ता, केराक थम्ब, चौर आ पिठारसँ रंगोली। लौटैत काल हमर चाल तेज भऽ गेल। हम लेट होए लेल नै चाहै छलौंह, नै तऽ माँ कहत, "मजाल छै जे तोरासँ एकटा काम समय पर होऊ। हमरा पर छजै छौ। कनिया औथुन तखैन देखबौ लाट साहेबी।" घर पहुँचलौंह की छोटकी बहिन कहलक, "बगलक अंगनावाली दीदी आएल छलैथ, अहाँकें साँझमे बजेलक यै।"

ऐना लागल जेना हमर आँखिक आगाँसँ पूरा बचपन फ्लैशबैकमे गुजैर गेल होए। केना साँझेसँ दीदी अंगना जेबाक वास्ते नहा-धो कऽ तैयार भऽ जाइत रही। ई घड़ी एतेक स्लो किएक चैल रहल अछि से नञि कैल्ह पता चलल आ नञि आइ। हम तैयार होमय लगलौंह। दै वास्ते माँ पकवान, मखान आ मिठाई पैक करवा देलक। गामक रिश्तामे हमरासँ जेठ बहिन लागैत छल, मुदा हमरा बड्ड मानैत छल। हमहुँ ओकरा अपन सहोदर बहिनसँ बेसी मानैत छलौंह। दिवालीमे दीदी घरौंदा बनबैत छलीह। दूर्गा पूजाक बादसँ घरौंदा बनाबेकें काज शुरू भऽ जाइत छल।



साँझमे पूजाक बाद भाए अपन हाथसँ घरौंदा तोड़ैत अछि। माटिक चुकरीमे लावा भरल रहैत अछि जे घरौंदा तोड़लाक बाद खेबा लेल भेटैत छल। हम घरसँ निकैल गेलौंह। दालान, पोखैर, आमक दू-चारिटा गाछ। आबि गेल अंगना। दलान पर पहुँचते छी की दीदी अंगनासँ दौड़ल आयल आ हमरा गलासँ लगा लेलक। हमर गाल खिंचलक आ कहलक, "पहिले नै आइब भेलौ?" हम मुस्का देलौंह। दीदी लोटामे जल आनि हमर पएर धोअऽ लगलीह। किछो तऽ नञि बदलल ओकरामे। हमरा लेल ओकर स्नेह ओहिना-कें-ओहिना अछि। शायद हम अतेक दिनमे बदलि गेल होए। घरौंदा तोड़बाक बाद लावा खेलौंह। ताबैत दीदी केराक पात पर खेनाय परैस देलक। नवका धानक कुटल चूड़ा, दही, गरमा-गरम आलू-कोबीक तरकारी आ उजरका तीलक अँचार। दही-चूड़ा आ आलू-कोबी सब मिलकें एक भऽ गेल छल। पूरा पात समाजवादक एकटा जीबैत नमूना। सभहक एकटा पर्सनल आइडेंटिफिकेशन छल ओ सामूहिक सेहो। छैककें खेलौंह। हाथ धोलौंह आ माँक देल पोटली दीदी दिस बढ़ा देलियै, ओ मुस्कुरा देलक आ एक मुट्ठी काटल नारियल आ बादाम हमर कुर्ताक जेबीमे राखि देलक। हम जेबाक लेल उठलौंह, दीदीकें पएर छुलौंह आ ओकरासँ पुछलौंह, "जखनि घरौंदा तोड़ैयेकें रहैत छौ तऽ अतेक मेहनत से बनाबैत किएक छी?"

"तोरा लगैत छौ जे तू घरौंदा तोड़ि देलही?" दीदी हमरेसँ पुछि देलक।

"हँ लागैत अछि। कखनो काल गिल्ट सेहो फील होइत अछि।" हम उत्तर देलौंह।

"घरौंदा तऽ तखैन टूटत जखैन तू एतऽ सँ जेबहि....।"

हम किछ नै बाजि पेलौंह। दीदी पुछलक, "फेर कहिया ऐभी?"

"जहिया तोहर बियाह हेतौ। भरोसा राख एहि बेर घरौंदा तौरे लेल नञि बल्कि जोड़य लेल।"

दीदी हँसय लागल। हम ओतयसँ निकैल गेलौंह। ओ देर धरि दरबज्जा पर ठाड़ हाथ हिलबैत रहल। हम सोचय लागलौंह जे निश्छल प्रेम शायद इएह होइत अछि। आब घरौंदा बनाबैवाली कतेक बाँचल अछि?

एहि घरौंदा पर तऽ लाखों फ्लैट कुर्बान अछि। विदा..। तू एनहिंये घरौंदा बनाबैत रहियैं आ हम एहिना तोड़ैत रहबौ। साँझ भऽ गेल छल। हम एकटा दीप जला कऽ दरबज्जा पर राखि देलौंह। आइ घरक संग मन सेहो रौशन अछि।

तीर्थाटन : नैमिषारण्य



❑ कविता पाठक झा

तीर्थस्थान, अर्थात् ओ स्थान जे पवित्र विचारक संचार करैत होए ओ पावन पुनीत स्थान तीर्थस्थान कहाबैत अछि। भारतीय धर्ममे तीर्थक बड्ड विशेष मान्यता अछि। ओना सब धर्ममे तीर्थक मुख्य उद्देश्य एकहिं अछि जे विशिष्ट चेतनाक जागृति होए आ मन-मस्तिष्कमे अलौकिक चेतनाक अनुभव होए अछि।

व्यक्तिक मोन सांसारिक दुःख, शोक, संताप आदिसँ घिरल रहैत अछि। कोनो व्यक्ति शांति आ पवित्रताक लालसासँ तीर्थस्थान जाइत अछि जाहिसँ भावहीन, उत्साहीन मोनमे नव उत्साह रूपी संजीवनी ऊर्जा प्राप्त होए।

हमहुँ 2016क कार्तिक मासम पवित्रता आ शान्तिक लालसासँ नैमिषारण्य तीर्थस्थल गेल छलहुँ। मानव जीवन पर परिवारिक संस्कार केर प्रमुखता रहैत अछि अओर परिवारिक वातावरण सदैव नश-नशमे समाहित रहैत अछि। घरमे माँकेँ धार्मिक विचार आ अध्यनशीलताक शुद्ध वातावरण छल। माँ द्वारा धार्मिक पुस्तकमे नैमिषारण्यक बड्ड उच्यतासँ चर्चा सुनैत छलहुँ। मोनमे नैमिषारण्य दर्शन उत्कृष्ट इच्छा उत्पन्न भेल छल। धर्म पुराणमे वर्णीत बहुतों महत्वपूर्ण स्थान जतय ऋषि-मुनि विशिष्ट संत-महात्मा धार्मिक निवास स्थल वा तपःस्थली छैन्ह। जाहिमे मुख्य सात विशिष्ट स्थानमे सँ एक अछि नैमिषारण्य।

गोमती नदीक तट, हरियर वन, आध्यात्मिक शुद्ध वातावरणसँ परिपूर्ण, तपस्या स्थल नैमिषारण्य धर्म पुराणमे विशेष महत्व राखैत अछि। शौनक ऋषि अ सूतजी अट्ठारह पुराणक कथाक उपदेश देने छलखिन। श्रीमद भागवत पुराणक प्रथम अनुष्ठान परम पुनित स्थान नैमिषाण्यमे भेल अछि। श्री शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षितकेँ सुनायल गेल छल। श्री वेदव्यास कृत श्रीमद्‌भागवत पुराण हिन्दु धर्मक सर्वश्रेष्ठ कथा मानल गेल अछि जकर श्रवण मात्रसँ मनुष्य केर जन्मांतरक विकार नष्ट होइत अछि अओर परम कल्याण, ज्ञान, मोक्ष केर प्राप्ति होइत अछि। श्रीमदभागवत कथाक प्रथम अनुष्ठान लेल नैमिषारण्यमे भागवत पुराणक श्रवण केर विशेष महत्व अछि।

संयोग बस हमर मामाजी (गुरुजी) नैमिषारण्यमे भागवत कथा सुनैक आयोजनसँ मित्र मंडली संग पहुँचलाह। भागवत लेल सब व्यवस्था गामसे केने आयल छलाह संगे व्यास जी सेहो आनने छलाह। नैमिषारण्यमे भागवत कथा श्रवण विशेष फलदायि मानल गेल अछि। मामाजीक आदेशानुसार हम, माँ अओर दल्लीवाला मामा-मामी सब नैमिषारण दर्शन लेल चललहुँ। ट्रेन दिल्लीसँ मुरादाबाद धरि छल। भारतीय रेल अपन गुणानुसार बिलम्बसँ छल। हम सब मध्यरात्रिमे मुरादाबाद पहुँचलहुँ। संयोगसँ एकटा यात्री नैमिषारण्य जेनिहार भेट गेलाह, ओ हमरा सबकेँ कहलाह जे नव स्थानमे एतेक रातिकेँ नञि जाऊ, नैमिषारण्य जंगली क्षेत्र अछि, अहाँकेँ कोना जानकारी नञि अछि, गाड़ीवाला कत्तौ उतारि कऽ कहत "यही जगह है।" तऽ की करब?ओकरो बात उचित लागल, सही मार्गदर्शन केलक। कतेक सार्थक गप जे नव स्थानमे सचेत भऽ कदम उठाबि। ओकर गपक अनुकरण करैत हम सब राति भरि स्टेशन पर रही गेलहुँ। भोरे बससँ नैमिषारण्य दिव्य भूमि पहुँचलहुँ । अनुपम आनन्द भेटल, चक्रतीर्थक दर्शन लेल, चक्र सरोवरमे स्नान केलहुँ। ओहि प्रांगणमे अनेको मंदिरक दर्शन केलहुँ। नैमिषारण्यक बारेमे बहुतो नव ज्ञान भेटल, किताबी ज्ञान आ प्रत्यक्ष ज्ञान दूनूमे बड्ड अन्तर होइत अछि। कतेको प्रत्यक्ष ज्ञानप्रद विषय दृश्यमान भेल। मान्यता अछि जे प्रभु श्रीराम जे अश्वमेध यज्ञ केने छलाह, नैमिषारण्येमे लव-कुश हुनक घोड़ा पकड़ने छलाह। मुनि बाल्मीकी आश्रम एहिठाम अछि।

शौनक मुनिक ज्ञान पिपासा लेल विष्णु द्वारा भेटत वरदान स्वरूप चक्रकेँ नेमि गिरि एहि भूमिमे प्रवेश केने छल। ई स्थान ज्ञान प्राप्तिक लेल उत्तम आ पवित्र अछि। एहि स्थल पर पुराणक अनुसार 88000 ऋषि-मुनि तपसँ ज्ञानार्जन केलाह। ज्ञानर्जन केन्द्र ई स्थल अछि, हमहुँ नैमिषारण्य स्थानसँ अक्षय ज्ञानक लेल कर जोड़ी प्रार्थना केलहुँ।

कतेको मुनिक तपस्या स्थल, एते चक्रतीर्थ, स्वयंभू मुनि मनु-शतरूपाक आश्रम, अक्षय वृक्ष, हनुमान गढ़ी, व्यास गद्दी, पंच प्रयाग, ललिता मंदिर, भूतनाथ मंदिर, दाधिची कुण्ड, आनन्दमयी आश्रम अनेकों विशेष स्थल अछि। एहि स्थान पर अनेको धर्मशाला भागवत प्रयोजन लेल बनल अछि, बहुतो होटल सब उपलब्ध अछि। हम सब गोमती स्नान कऽ सब स्थलक दर्शन केलहुँ। तीन दिन भागवत कथा श्रवण केलहुँ, गोमती तट पर कतेको रास संतगुरु सब अपन-अपन भव्य पंडाल लगौने भागवत कथाक दिव्यतासँ वाचन करैत छलाह। मेला आ भक्तक सैलाबक दर्शन भेल।

जाहि नैमिषारणक वर्णन रामायण, महाभारत, पुराण आदिमे भेल अछि ओहि पुण्य धरतीक प्रत्यक्ष दिव्य दर्शन कऽ ईश्वरकेँ धन्यवाद ज्ञापित केलहुँ, नव उत्साहित ऊर्जाक अनुभूति भेल, ओकर सुमधुर स्मृति एखनो मन मस्तिष्ककेँ अलौकिक करैत अछि।



काव्यकर्मकेँ औदार्य आ औचित्य : कवि रहस्य



❑ *अश्विनी कुमार तिवारी*

एकटा साधारण व्यक्ति द्वारा एकटा असाधारण कृति पर एकटा सार्थक प्रयास कयल गेल। ई काज अचानकेँ सामान्य साधारण व्यक्तिकेँ आगाँ असाधारण व्यक्तित्वमे बदलि देबाक सामर्थ्य राखैत अछि। जाहि व्यक्तिक चर्चा एतय कऽ रहल छी से छथि हमर सहपाठी श्री संजय झा। संगी छथि, सहपाठी छथि सेहो हाफ पैंटक जमानाकेँ तैँ कने आवश्यक झुकाव परिलक्षित भऽ सकैत अछि।

आब एकटा असाधरण व्यक्तित्वक चर्चा करैत छी जिनका मिथिलाकेँ कहय सम्पूर्ण भारतमे शायदे कियो हैत जे नहि जानैत हैत, ओ छथि म. महो. उपाध्याय डॉ. सर गंगानाथ झा। हिनक एक समयमे देल गेल तीनटा व्याख्यान (1928-29)केँ संकलित कऽ एकटा हिंदी भाषामे पोथी आयल जकर नाम छल **कवि रहस्य**।

आब एकटा तेसर व्यक्तित्वक चर्चा करैत छी जे प्रत्यक्ष रूपसँ तऽ एहि पोथीसँ जुड़ल नञि छथि मुदा एहि पोथी (अनुदित)मे सर्वत्र विद्यमान छथि आ से छथि मिथिलाक विद्वत धाराक एकटा महत्वपूर्ण स्तम्भ **डॉ सुभद्र झा**। संजय झा हिनकेँ गाम नागदहकेँ छथि आ बचपनमे हिनक नेह-छोह प्राप्त कएने छथि।

संजय झा एहि पुस्तक कवि रहस्यकेँ मैथिली अनुवाद कयने छथि। अनुवादमे जाहि प्राञ्जल मैथिली भाषाक व्यवहार भेल अछि तकर आधारभूत भावकेँ धार डॉ सुभद्र झासँ आबैत अछि आ संजय जी पूरा प्रयास कएने छथि यथा सम्भव सक्क भरि ओकर निर्वहन करैथ। कतहु-कतहु असफल सेहो भेल हेताह किएक तऽ समयक प्रभाव भाषा पर पड़ने बिनु रहि नञि सकैत अछि।

किताबक अनुवाद पर गप करी तऽ अनुवादक सार्थकता एहीमे अछि जे अनुवादक अपनाकेँ, अपन विचारकेँ आ अपन सोचकेँ विषय-वस्तुसँ अलग राखथि आ जे जेना छै तकरा तहिना एक भाषासँ दोसर भाषामे भाषांतरण कऽ दैथ। हमरा जतेक पढ़ि कऽ अनुभव भेल ताहि आधार पर कहि सकैत छी जे अनुवादक अपन काजमे काफी हद धरि सफल भेल छथि।

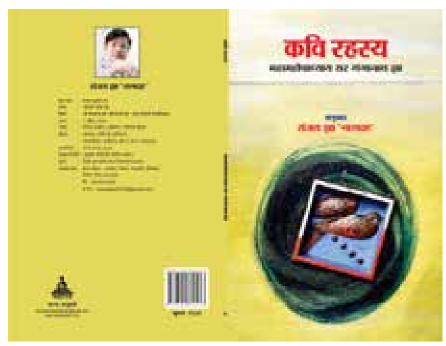
विषय-वस्तुक चर्चा नञि करब तऽ एहि काजक औचित्य पूरा नञि होएत। अनुदित पोथी दू भागमे बँटल अछि। पहिल भाग काव्य आ कविकेँ उत्पत्तिसँ सम्बद्ध अछि आ दोसर भाग कविचर्या अर्थात् कविकर्मसँ सम्बंधित अछि।

सर गंगानाथ झा अपन व्याख्यानमे वेद-पुराण आ विभिन्न संस्कृत ग्रंथक उदाहरणक आश्रय लऽ काव्यक उत्पत्ति आ विकासकेँ सोझा रखने छथि। कविक कर्म, ओकर ज्ञान, ओकर अध्ययन क्षेत्र, ओकर पहिचान चिह्न आदिकेँ विशद व्याख्या कएने छथि आ एकर अनुवाद सेहो संजय जी बहुत नीकसँ सोझा लऽ आयल छथि। एहि अनुदित पोथीमे सस्कृतक श्लोक आदि अपन मूल रूपमे अछि आ व्याख्या अनुदित मैथिली मे।

आब एकटा महत्वपूर्ण प्रश्न उठैत अछि जे आखिर हिंदी कोनो एहन भाषा तऽ नञि अछि जकरा मैथिली भाषा भाषी जनैथ नञि होथि तहन एहन श्रमसाध्य काज करबाक आखिर की औचित्य अथवा उद्देश्य? हमरा लगैत अछि अकर दूटा कारण रहल होएत **पहिल** तऽ ई जे पोथी बड्ड पुरान अछि आ करीब-करीब लुप्त प्राय अछि तैँ अकर उपयोगिता देखैत नव कलेवरमे एकर आयब जरूरी लागल हेतैन्ह। आ **दोसर**, जे सर्वाधिक महत्वपूर्ण अछि जकर चर्चा करैत अपन एहि पोथीमे डॉ सर गंगानाथ झा स्वीकारय छथि जे जहन हिंदीमे हुनकासँ व्याख्यान देबय कहल जाए छैन्ह तऽ हुनका लाज होए छैन्ह कारण जे हिंदी हुनक मातृभाषा नञि, हुनक मातृभाषा अछि मैथिली। संजय झाकेँ सम्पुर्ण पुस्तकक मात्र ई एकटा पाँति अकर मैथिली अनुवाद करय लेल विवश कऽ देने हैतैन्ह।

पुस्तकमे नगण्य त्रुटिक प्रयास रहितो किछु अवश्य रहि गेल अछि तथापि संजय झा संगे हुनक प्रकाशन नवारम्भकेँ अजित जी एकर प्रकाशनमे खुब मेहनत कएने छथि। पुस्तकक भाषा आइ-काल्हिक प्रचलित भाषा अछि। अनुवादकक भाषा पर सुभद्र झाकेँ प्रभाव बहुत हद धरि बाँचल रहि गेल अछि तैँ अनुवादमे मैथिली भाषाक नीक स्वरूपकेँ दर्शन होइत अछि।

एकटा आग्रह कवि लोकनिसँ जे एहि पोथीकेँ अवश्य पढ़ी ताकि काव्यकर्मकेँ औदार्य आ औचित्य समझि सकी, जानि सकी जे कविक आखिर समाजमे आइओ एतेक प्रतिष्ठा प्राप्त अछि से किएक? आर की करी जे ई प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रहि सकय? जे पाठक छथि से जौँ एहि पुस्तककेँ पढ़ताह तऽ हुनक साहित्यिक समझकेँ परिष्करण निश्चित रूपेण हेतैन।



पोथी : कवि रहस्य
(महामहोपाध्याय सर गङ्गानाथ झा)
अनुवादक : संजय झा 'नागदह'
प्रकाशक : नवारम्भ प्रकाशन
पृष्ठ संख्या : 104
मूल्य : 200/- टाका

समीक्षक सहायक प्रबंधक (यांत्रिक) NHPC LTD छथि।

खटगर-मिठगर घरक बनल व्यंजन



❑ सोनल चौधरी

आमक मिठका चटनी

सामग्री :–

1. आम - 1 किलो
2. सरसों/राई - दू चम्मच
3. सौंफ - 1 चम्मच
4. घी - आधा कप
5. नून - एक चौथाई चम्मच
6. सुखल लाल मिरचाय - 1टा
7. तेजपत्ता - 4टा
8. काजु - 20टा
9. बादाम - 20टा
10. किशमिश - 20टा
11. धनिया पाउडर - 1-1/2 चम्मच
12. गुड़ लगभग - 1 किलो

विधि :– सबसँ पहिले एकटा कड़ाहीमे घी लिय आ ओकरा बढ़ियाँसँ गर्म कऽ लिय ओकर बाद ओहिमे राई दऽ नीकसँ कड़कऽ दियौ। जखन राई खुब कारी भऽ जाए तऽ सोंफ आ तेजपत्त दऽ 1 मिनट धरि रहय दियौ। ओकर बाद सुखलका मिरचाय दऽ दियौ। फेर



ओहिमे काजु, किशमिश आ बादाम दऽ दियौ।

एक मिनट बाद कद्दुकश कएल आम मिला कऽ 10 मिनट धरि नीकसँ भूईज लिय ओकर बाद नून आ धनिया पाउडर दऽ कऽ नीक जकाँ मिला लिय तकर बाद गुड़क फोइड़ कर कड़ाहीमे दऽ दियौ आ ता धरि चलाऊ जा धरि गुड़ पूर्णतः मिल नै जाए। गुड़ जखन मिल जाएत तऽ रूख कऽ कऽ चटनीक कड़ाहीसँ उतारी कऽ राखि लिय। ई चटनीकेँ एयर टाइट कण्टेनरमे राखि कऽ फ्रिजमे राखि लिय आ महिना धरि चटनीक लुत्फ उठाउ।

कटहलक बिरयानी

सामग्री :–

1. कटहल - 1/2 किलो (छीलल)
2. टमाटर - 250 ग्राम
3. चाऊर (बिरयानी राईस) - 1/2 किलो
4. नमक - स्वादानुसार
5. प्याज - 1/2 किलो।
6. लहसून - पेस्ट (2 चम्मच)
7. आदी - पेस्ट (1 चम्मच)
8. खड़ा/सौस गरम मसाला :-

दालचीनी - दूटा एक-एक इंचक टुकड़ा
ईलाइची (छोटका) - 20टा
स्टार एनीस - 10टा
जावित्री फूल - 2टा
गोल मिरचाय - 20टा
लौंग - 20टा
तेजपत्ता - 4-5टा

9. केवड़ा जल - 1 चम्मच
10. गुलाब जल - 2 चम्मच
11. हल्दी पाउडर - 100 ग्राम
12. जिरा - 1 चम्मच
13. धनिया पाउडर - 2 चम्मच
14. लाल मिरचाय पाउडर - 1 चम्मच
15. दही - 250 ग्राम
16. तेल (रिफाईंड) - 1 कप
17. बरियानी मसाला - 2 चम्मच
18. धनिया पत्ता
19. पुदीना पत्ता
20. घी - 4 चम्मच

विधि :– सबसँ पहिले चाउर धो कऽ 1 घंटा धरि पानिमे फुला लिय, ओकर बाद कटहलकेँ छोट-छोट टुकड़ा काटि लिय आ कुकरमे 1



सीटी धरि पका कऽ एक कात राखि लिय। ओकरा बाद एकटा टोपियामे पानि गरम होए लेल चढ़ा दियौ। ओहि पानिमे दू चम्मच नून दऽ दियौ। ओकरा बाद सौंसका गरम मसाला सब ओहिमे दऽ दियौ। जखन अदहन खौलऽ लागय तऽ ओहिमे फुलेलहा चाउर दऽ कऽ अधपक्कु होमय धरि पका लिय। ओकर बाद चाउरकेँ छाइन कऽ निकालि लिय आ ठंडा पानिसँ धो कऽ एक कात राखि लिय। आब प्याजकेँ मेंही-मेंही काटि कऽ ओकरा तेल आ जीरक फोरनमे धऽ दियौ। कनि देर चलेलाक बाद लहसुन आ आदीक पेस्ट सेहो दऽ दियौ। आब सब मसल्ला (हल्दी, धनिया, मिरचाय आ 2 चम्मच बिरयानी मसल्ला) ओहिमे मिला लिय। कनि कालक बाद टमाटरकेँ छोट-छोट काटि कऽ ओहिमे मिला लिय आ कटहलकेँ ओहिमे दऽ दियौ। जखन टमाटर नीकसँ गैल जाए आ प्याजो गलल बुझना जाए तऽ आँच धिमा कऽ कऽ ओहिमे दही मिला दियौ। 5 मिनट चलेलाक बाद मिश्रणकेँ आँच परसँ उतारी कऽ अलग राखि लिय। आब एकटा टोपियामे अधपक्कु चाउरकेँ एक तिहाई भाग पसाइरक धऽ दियौ। ओकर ऊपर पकायल कटहलकेँ तह लगा दियौ आब ओहि पर बाँचल भातकेँ तह लगा कर ओकरा पूरा ढेक लिय। आब ओहिपर केवड़ा जल आ गुलाब जलकेँ पुरा छींट दियौ।

ओहि पर बिरयानी मसाला आ घी सेहो छिड़ैक दियौ। ऊपरसँ धनिया आ पुदिनाक पत्ता छोट-छोट टुकड़ी छिड़ैक दियौ। आब टोपियाकेँ पुरा बढ़ियाँसँ बंद कऽ-कऽ एकटा

आँच पर चढ़ल गर्म तवा पर 25-30 मिनट लेल छोड़ि दियौ। तवासँ उतारलाक 10-15 मिनट बाद बेहतरीन कटहल बिरयानी परसु।

चिकन लिट्टी

सामग्री :-

1. बोनलेस चिकन - 250ग्राम
2. आटा - 1/2 किलो
3. नमक - स्वादानुसर
4. जीरा - 1 चम्मच
5. तेल (रिफाइंड) - अढ़ाई कप
6. हल्दी पाउडर - 1 चम्मच
7. धनिया पाउडर - 1 चम्मच
8. मिरचाय पाउडर - 1 चम्मच
9. आजवाइन - दू चुटकी
10. मंगरैल - दू चुटकी
11. चिकन मसाला - 2 चम्मच

विधि :– सबसँ पहिले बोनलेस चिकेनकेँ धो कऽ एकटा कड़ाहीमे फोरन गरम कऽ कऽ



दू चम्मच तेल दऽ पकय लेल चढ़ा दियौ। आँच धिमे राखब। इम्हर आटामे आजवाइन, नून,मंगैरल आ 7-8 चम्मच तेल दऽ कनी कड़गर कऽ साइन लिय (जौँ खायवाला सोडा पसंद वा ज्यादा खस्ता चाहि तऽ मिला लिय) सानल आटाकेँ एक कात झाँपि कऽ राखि लिय। एम्हर चिकेनकेँ कनि-कनि देर पर लारैत रहियौ। लगभग आधा घंटा पकलाक बाद छोलनीसँ चिकनकेँ पूरा मैस कऽ लिय ओकर बाद धनिया, मिरचाय, हल्दी आ चिकन मसाला सब मिलाकर 5मिनट भूजि लिय (जौँ पसंद होए तऽ दूटा टमाटर सेहो भुजै कालमे मिला लिय)।

आब ओकरा आँचसँ उतारि कऽ आटामे जेना सतुआ लिट्टीमे भरै छी तहिना भैर लिय। आब लिट्टीकेँ मध्यमसँ कम आँच पर फ्राई (डीप) कऽ लिय। गर्मागर्म लिट्टी चोखा वा मुर्गाक संग सर्व करू।

हिलसा माछक भापा

सामग्री :–

1. हिलसा माछ - 1/2 किलो
2. हल्दी पाउडर - 1 चम्मच
3. मिरचाय पाउडर - 1 चम्मच
4. जमाइन - 1/4 चम्मच
5. मंगरैल - 1/4 चम्मच
6. कच्चा नारियल - आधा टा (जौँ नै उपलब्ध होए तऽ सुखल नारियल लऽ लिय।)
7. पास्ता दाना - 2 चम्मच
8. पियरका सरसों - 1 चम्मच
9. ललका सरसों (राई) - 1 चम्मच
10. कसुरी मेथी - 1 चम्मच
11. नमक - स्वादानुसार
12. हरियर का मिरचाय - 10-15टा
13. दही - 4 चम्मच
14. धनिया पत्ता
15. सरसों तेल - 4 चम्मच

विधि :– सबसँ पहिले सबटा गोटा मसालाकेँ मिक्सर ग्राण्डरमे पिस लिय ओकर बाद दही आ बाँचल मसाला दऽ मिक्सीमे नीकसँ मिला लियर (सरसों तेल आ 4-5टा हरियर मिरचायकेँ अलगसँ राखि लेब)।



आब माछकेँ बढ़ियाँ जकाँ धो कऽ सब मसालाक मिश्रण ओहिमे मिला कऽ सबकेँ कड़ाहीमे उझलि लिय। कनि पाइन मिला कऽ सब माछकेँ मसालामे बढ़ियाँसँ डुबा लिय,आब ऊपरसँ सरसों तेल आ बाँचल मिरचाय बीचसँ काट कऽ धऽ दियौ आ कड़ाही गर्म कऽ कऽ माछकेँ लगभग 20-25 मिनट झांपि कऽ उबालि लिय। गर्मा-गर्म भापा तैयार अछि। एकरा भात आ प्याज संगे स्वादानुसार लऽ कऽ खाऊ।

नैचुरल्स टेंडर कोकोनट आइसक्रिम

सामग्री :–

क्रिम (डेरी टॉपिंग) 250 ग्राम
मिठाई मेड - 300-400 मिली.
कचका नारियल दूध - 200 मिली.
कचका मलाई (नारीयल वाला) - 1टा
कचका नारीयलक पाइन - 1/2 कप

विधि :– एकटा गहीर बरतनमे डेरी टॉपिंग (क्रिम) लऽ कऽ ओकरा 10 मिनट धरि फेंट लिय ओकरा बाद अपन स्वादानुसार (मिट्ठक हिसाबसँ) मिठाई मेड, नारियलक पाइन नारियलक मलाई (मिक्सीमे बारीक पिसल) सब मिला कऽ 2 मिनट फेंट लिय।



आब मिश्रणकेँ एकटा एयर टाइट बरतनमे झाँपि कऽ फ्रिजरमे 4 कम-सँ-कम 7-8 घंटा धरि छोड़ि दियौ।

नैचुरल्सक टेंडर कोकोनट फ्लेवरवाला आइसक्रिम तैयार भऽ गेल। ठंडा-ठंडा सर्व करू।

गुलाबी मेकअप



❑ *संतोषी कर्ण*

सबसँ पहिने चेहरा पर CTML कऽ लेबाक अछि, ओकर बाद primer लगाबयकेँ अछि। ध्यान राखाब जे कोनो एकटा product लगेलाक बाद 1 सेकेंड रूकि फेर दोसर product केर इस्तेमाल करू।

आब dark area पर concealer लगा लिय आ नीक जँका चेहरा पर फैला लिय। ओकरा बाद foundation लिय आ पुरा face पर लगा लिय अओर beauty blenderक सहायतासँ नीक जँका मिला लिय। beauty blenderकेँ भिजा, extra पानिकेँ निचोरि कऽ इस्तेमाल करू। आब loose powder लऽ कऽ जतय-जतय बेसी पसीना आबय अछि ओतय लगा लिय। फेर face powder पुरा चेहरा पर लगा लिय। आब bronzer लिय आ chick bone पर लगबैत कपाड़ धरि हल्का-हल्का लगा लिय, एक कानसँ दोसर कानक नीचासँ होइत टुड्डीक निचला भागकेँ cover करैत लगा लिय। आब कोनो pink shade blusher लिय आ गाल पर, नाक पर, कपाड़ पर लगा लिय। आब bro powderसँ eyebrowकेँ shape दऽ दिऔ। तकरा बाद skin colourकेँ eyeshadow eyelidसँ first cut crease धरि लगा लिय। आब लिय pink eyeshadow अओर cut crease पर लगा कऽ पुरा eyelidकेँ cover करैत नीक जँका मिला लिय। जौँ अहाकेँ मोन होए तऽ आँखिक अन्तिम कोना पर कोनो dark shade सेहो लगा सकैत छी।

आब liner, mascara लगा लिय। जौँ इच्छा होए तऽ fake eyelashes सेहो लगा सकैत छी। आब नीचा water line पर skin colourकेँ eyeshadow लगा लिय। आब eyebrowक नीचा मध्य सँ अन्त धरि highlighter लगा लिय। highlighter गाल पर,नाक पर, टुड्डि पर, कपाड़ पर आ आँखिक आगुक कोना पर एक बूँद सेहो लगा लिय। नीचा आँखिमे काजर पसंद अछि तऽ लगा लिय। आब pink lipstick लगाऊ अओर makeup fixerसँ पुरा face पर spray कऽ लिय जाहिसँ makeup long lasting रहत। अपन मन पसंद hairstyle बना लिय।

नोट :-

1. सौंदर्य प्रसाधन हमेशा नीक companyक ली।
2. कोनो product जरूरतसँ ज्यादा नै थोपी।
3. Primer हमेशा ऊपरसँ नीचा दिश लगाबी जाहिसँ facial hair दैब जाए।
4. CTMLक मतलब अछि Cleansing, Toning, Moisturising आ Lipbam।
5. सुतयसँ पहिने makeup remove जरूर कऽ ली।
6. अगर brush me कोनो product बेसी लागि गेल होए तऽ झैर कऽ हटा लिय।
7. अगर face पर कोनो allergy अछि तऽ चिकित्सकक परामर्श लऽ कऽ कोनो product केर इस्तेमाल करी।

नुस्खाः-

जौँ चेहरा पर कोनो तरहक दाग अछि, खास कऽ झाई तऽ जाफर (जयफल)केँ काँच दूधमे घैस कऽ ताधरि लगाऊ जाधरि दाग साफ नै भऽ जाए।





ध्वनि मल्लिक







कबड्डीमे नव कीर्तिमान बनाबैत मिथिलाक धिया - वैदेही



मिथिलाकेँ सदति अपन ललना पर गर्व रहल अछि। आदिकालक सीता, गार्गी, मैत्रीय, भारती होइथ वा वर्त्तमानक प्रत्यक्ष प्रमाण हिमानी दत्त, भावना कंठ। मैथिलानी सदिखन अपन व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ अपन समाज आ देशक नाम ऊँच करैत आबि रहल छथि।

एहि स्तम्भक माध्यमे वर्तमान मे मिथिला आ देशक नाम ऊँच करयवाली मैथिल धियाक परिचय पाठक लोकनि सँ कराओल जाएत।

खेलब-कुदब तखनहुं नीक बनब दिश अग्रसर आ एहि कथनकेँ सत्यापित करैत वैदेही कुमारी पुत्री श्री अरूण कुमार दास अपन एकेडमिक पढ़ाईक संग-संग खेलमे आगाँ बढि अपन मिथिलेकेँ नञि वरन् अपन देशक नाम बढ़ौलैन्ह आ एकटा उदाहरण सेहो स्थापित केलैन्हअछि। 22 वर्षीय वैदेही वर्तमान मे J.C. Bose University of Science & Technology, YMCA Faridabad, Haryana सँ B-tech फाइनल कऽ रहल छथि।

बचपनसँ स्पोर्टमे रूचि राखयवाली वैदेही नौमी कक्षासँ प्रोपर कबड्डी खेलय लगलीह। वो जिला स्तर, राज्य स्तर आ अंतर राष्ट्रीय स्तरक मैच खेल चुकल छथि। हँ, एखन वैश्विक महामारी आ ग्राऊण्ड बन्न रहब कारणेँ आ अपन पढ़ाईक कारणेँ हुनका खेलबमे एक-डेढ़ सालसँ किछु व्यवधान उत्पन्न भऽ गेल छैन्ह मुदा जोशमे कनियो कमी नञि छैन्ह। खेलक माध्यमसँ वो अपन माता श्रीमती आशादेवीक स्वप्नकेँ पाँखि दऽ रहल छथि।

हुनक किछु महत्वूर्ण मैचमे खेलक प्रदर्शन आ उपलब्धि निम्न छैन्ह :

1. भारत बनाम दक्षिण अफ्रीका सर्किल कबड्डी (स्वर्ण पदक)
2. भारत बनाम श्रीलंका नेशनल कबड्डी (स्वर्ण पदक)
3. फरीदाबाद बनाम रोहतक स्टेट चैंपियनशिप (स्वर्ण पदक)
4. हरियाणा बनाम दिल्ली स्टेट चैंपियनशिप (रजत पदक)

वर्तमानमे वैदेही अपन पढ़ाई संपन्न करक संग महामारीक समाप्ति पर ग्राऊण्ड खुजब केर प्रतीक्षा कऽ रहल छथि।

श्रीलंका, नेपाल आदि जा अपन खेलक प्रदर्शन कऽ चुकल छथि, संगहिं साउथ अफ्रीकाक टीम जखन भारत आयल छल तकरो संग अपन खेलक प्रदर्शन कऽ सभहक प्रशंसा पाबि चुकल छथि।

हम सम्पूर्ण मिथिलांगन परिवार दिशसँ हुनक एहि इच्छाक पूर्ति आ उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत छियैन्ह।

प्रस्तुति - बिनीता मल्लिक



मिथिलाक धरोहर : जितिया पावनि



❑ बी. के. मल्लिक

जितिया पावनि मिथिलिक धरोहर अछि जे सम्पूर्ण भारत देशक अलावा विदेशमे सेहो मनायल जाएत अछि। एहि पावनिकेँ किछु स्थान पर जीवितपुत्रिका, जीवपुत्रिका व्रत आ जितिया कहल जाइत अछि। एहि पावनि कएलासँ पुत्रक प्राप्ति आ संतान दीर्घायु होइत अछि।

आश्विन मासक कृष्ण पक्षक अष्टमी तिथिकेँ ई व्रत होइत अछि। कहल गेल अछि जे जे नारी ई व्रत कऽ शालिवाहन राजाक पुत्र जीमूतवाहनक पूजा करैत छथि, हुनक सौभाग्य अटल रहैत छैन्ह सन्तानक उन्नति होइत छैन्ह। जाहि दिन सन्ध्याकालमे अष्टमी तिथि रहए ताहि दिन व्रत करबाक चाही। जौँ सप्तमीक उदय होए आ तकर बाद अष्टमी तिथि पड़ि जाए तऽ ओही दिन व्रत होएत, अगिला दिन नञि। जौँ दूनू दिनमे सँ कोनो दिन अष्टमी सन्ध्याकाल नञि रहए तऽ दोसर दिन ई व्रत करी। एहि व्रतमे अष्टमी तिथिमे भोजन कएने दोष कहल गेल अछि।

व्रत आरम्भ करबासँ पहिने ओठगन होइत अछि। मिथिलामे सौभाग्यसूचक पदार्थ सभक भोजन अर्थात् माछ, मड़ुआ आदि सप्तमी तिथिकेँ खेबाक परम्परा अछि। मिथिलाक ई पहिल पावनि अछि जाहिमे माछ खेनाय सेहो जरूरी अछि। एहिसँ कहि सकैत छी जे माछक उपयोग शुभ कामक संग व्रतमे सेहो होइत अछि। जे माछ नञि खाइत छथि ओ नोनी सागक व्यवहार करैत छथि।

कथाक अनुसार महिला लोकनिक बीच बेन बिलहब सेहो एकर एकटा अभिन्न अंग थीक। अंकुरीसँ पारणा करबाक चर्चा कथामे अछि।

एतय एकर कथा कहब उचित नञि रहत, मिथिलाक सभ सौभगयवती आ पुत्रवती एहि व्रतकेँ करैत छथि आ एकर कथा सुनैत छथि।

दंत कथानुसार, एक दिन कैलाशक अति रमणीय शिखरपर बैसि पार्वती शंकरजीसँ पुछलैन्ह, “कोन व्रत, कोन तपस्या वा कोन पूजा केलासँ स्त्रीगणक भाग-सोहाग बनल रहैत छथि आ हुनक धियापुता जीबैत छैन्ह?” उत्तरमे शंकरजी कहलैन्ह, “आसीन मासक कृष्णपक्षे अष्टमी तिथिकेँ जौँ स्त्रीगण लोकनि पुत्रक कामनासँ शालिवाहन राजाक पुत्र जिमूतवाहनक कुशक प्रतिमा बना कलशक जलमे स्थापना कऽ ओकरा खूब सुसज्जित कऽ नजदीकमे खाधि खुनि पोखरिक निर्माण कऽ ओकर मोहार पर एकटा पाकड़िक ठाढ़ि रोपि, ठाढ़िक ऊपरमे गोबर माटिक चिल्होड़िक निर्माण कऽ राखथि आ नीचामे गीदरनीक आकृति बनाय राखि देथि। दूनूक माथ पर सिन्दूर पिठार लगाय फूल मालासँ युक्त भऽ धूप-दीप नैवेद्य लऽ बाँसक पात पर पूजा करैथ तऽ पुत्रक जतेक ग्रहचक्र आदि रतैब अछि ताहिसँ मुक्ति भेटैत अछि आ ओकर वंशक वृद्धि होइत अछि अओर संग-संग सब मनोरथ पूरा होइत अछि।”

एखनहुँ जे महिलासभ श्रीजीमूतवाहनक पूजा कऽ, कथा सूनि, उपवास कऽ, ब्राह्मणकेँ संतुष्ट कऽ पारणा करैत छथि, हुनक पुत्रक आयु बढ़ैत छैन्ह आ ओ सदति संतानवाली बनल रहैत छथि, हुनक सभ मनोरथ पूरा होइत छैन्ह से निश्चय जानू।

एहि व्रत-कथामे कतेको दुःख, कष्ट भेलाक बादो अपन संस्कार, शिक्षा आ दोसराक भलाई हेतु कतेक समर्पण अछि मिथिलाक नारीमे से सिद्ध होइत अछि। अपन मिथिला स्त्री त्यागक प्रतिबिम्ब छथि।





कुम्हरौरी
पेठे की बड़ी
अदौरी
उड़द दाल की बड़ी
अदौरी
मूंग दाल की बड़ी
आभाश्री
महिला गृह उद्योग
स्वादिष्ट अदौरी (उड़द एवं मूंग दाल की बड़ी) एवं कुम्हरौरी (पेठे की बड़ी) प्राकृतिक रूप से घर पर स्वच्छता का ध्यान रखते हुए हाथों से तैयार कि जाती है।
महिला उद्यम, सशक्त भारत
आभाश्री महिला गृह उद्योग
Flat Number 22, Gali No.1, Shastri Park Extension, Part 2, Uttrakhand Enclave, Burari, Delhi-110084
e-mail: anjudasaabha@gmail.com
fssai
Registration No. 23321005001143
आर्डर करने के लिए सम्पर्क करें
9968669988



INTERIOR & EXTERIOR DESIGNER
PRATIK Gaurav
MUKESH Dutta
9643270141
9910952191
enormousdecor13@gmail.com

बौआ-बुच्ची लोकनि,

अहाँ सभहक रूचिकेँ देखैत एहि स्तम्भक आरम्भ कएल गेल, अहाँक सहभागिता सराहनीय अछि। अहाँ सब अपन-अपन प्रश्न आ एहि स्तम्भमे पुछल प्रश्नक उत्तर मिथिलांगनक ईमेल **mithilangan@gmail.com** वा मो. न. ***9910952191*** पर व्हाट्स अप कऽ सकैत छथि। चुनल प्रश्न/उत्तरकेँ अहाँक नाम आ पताक संग अओर मिथिलांगनक विशेषज्ञक उत्तरक संग पत्रिकाक अगिला अंकमे प्रकाशित कएल जाएत।

\- सम्पादक

1. पानीक पाइपक आकार तिकोना वा आयताकार नहि भऽ गोल किएक होइत अछि?

उत्तर :- पानिक पाइपकेँ गोल हेबाक तीन मुख्य कारण अछि। पहिल, निश्चित लम्बाईक रेखासँ बनल वलयक क्षेत्रफलकेँ सबसँ बेसी भेनाय, जाहिसँ प्रदत्त आकारमे गोल पाइपक वृत्ताकार काटक पाइपमे पानि लऽ जेबाक सबसँ बेसी क्षमता दैत अछि। दोसर, वृत्ताकार काटक पाइपमे पानिक दबावसँ ओकर भितरी सतह पर एक समान बँटि गेलासँ ओकर फटय केर सम्भावना कम भऽ जाइत अछि, मुदा तिकोन वा आयताकार पाइपमे दबाव एकसमान नञि बँटि पाबैत अछि आ उच्च दबावक कारणेँ पाइप फैटो सकैत अछि। तेसर, पाइपकेँ आपसमे रिसन रहित जोड़य लेल जोड़पर चूड़ी बनाबऽ पड़ैत अछि जे वृत्ताकार पाइपमे आसानीसँ बनि जाइत अछि। एहि सबसँ पानिक पाइपकेँ गोल राखल जाइत अछि।



(सौरभ कुमार; निर्मली, बिहार)

2. लोक सपना किएक बिसरि जाइत छथि?

उत्तर :- एकर कोनो ठोस वैज्ञानिक स्पष्टीकरण नञि अछि, मुदा मनोवैज्ञानिकक प्रयोगनुसार जौँ कोनो व्यक्तिकेँ नीन्नमे सपना देखयकाल उठा देल जाए तऽ ओ सपना लोककेँ याद रहैत अछि।



सपना अक्सर नीन्नक एकटा विशेष अवस्था रैम (आर ई एम - रैपिड आई मूवमेन्ट) जे देर रातिमे आबैत अछि, देखाइत अछि। जौँ कोनो व्यक्ति एहि अवस्थामे जाइग जाइत अछि तऽ ओकरा आभास भऽ जाइत अछि जे ओ कोनो सपना देखि रहल छल। तैयो नीन्नक रैम अवस्थेमे सपना किएक आबैत अछि, ओ पूर्णतः वा आंशिके याद किएक रहैत अछि? एहि विषय पर शोध जारी अछि।

(शालु कुमारी; विराटनर, नेपाल)

3. बांसुरीमे बनल छिद्रकेँ आँगुरसँ दबेला पर बाँसुरीक ध्वनि बदलैत किएक रहैत अछि?



उत्तर :- बांसुरीमे जे ध्वनि उत्पन्न कएल जाइत अछि ओ एयर-कॉलम (वायु-कोष्ठक)केँ अपन प्राकृतिक आवृत्तिपर कराबयकेँ कारणेँ होइत अछि। वास्तवतमे, होइत ई अछि जे जखन कोनो बांसुरी वादक बांसुरीमे हवा फूंकैत छथि तऽ ओ ओहिमे भरल हवाकेँ कम्पित कऽ दैत अछि। बांसुरीक नलिकाक प्रवेश द्वारक निकट लागल पत्तीसँ जखने हवा निकलैत अछि ओ हवामे भंवर (एडिज) उत्लन्न करैत अछि जाहिसँ बांसुरीमे बनल एयर कॉलममे कम्पन्न होइत अछि। एहि बांसुरीमे बनल विभिन्न छेद पर आंगुर राखय वा ओकरा हटाबैत रहयसँ एयर कॉलमक लम्बाई घटय-बढ़य लागैत अछि। ई घटैत-बढ़ैत एयर-कॉलमक लम्बाइये ध्वनीक विभिन्न आवृत्तिकेँ उत्पन्न करैत अछि। सिद्धान्तानुसार एयर कॉलमक लम्बाई ध्वनि विशेषक आवृत्तिक विलोमानुपाती होइत अछि।

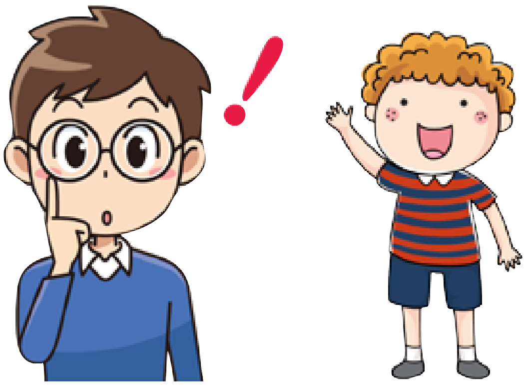
(शुभम वर्मा; जमशेदपुर, झारखण्ड)

आहाँ लोकनिक लेल प्रश्न

1. **भारोत्तेलक वजन उठाबयसँ पहिने हमेशा पेट पर एकटा चौड़गर मोटगर बेल्ट किएक बाँधैत अछि?**
2. **एल्यूमिनियम फॉइलमे राखल खेनाय/वस्तु देर धरि किएक गर्म रहैत अछि?**
3. **गर्म बनल खेनाय, ठण्डा भेल खेनायसँ नीक आ स्वादिष्ट किएक लगैत अछि?**

चुटुक्का

शिक्षक : आई तु होमवर्क किएक नञि केलह?
छात्र : मास्सैब! खैस पड़ल रहि, लागि गेल रहै।
शिक्षक : ओहो! किम्हर खसलैंह? कतऽ लगलौह?
छात्र : मास्सैब! गेरूआ पर खैस पड़लौंह अओर आँखि लागि गेल।



माए : बौआ! दूध पी ले।
बेटा : माँ हमरा दूध नञि नीक लागैत अछि।
माय : बौआ तोरा बुझल नञि छौ, गाएक दूध पीबैसँ दिमाग तेज होइत अछि।
बेटा : माँ! जौं से रहितै तऽ सबटा बछड़ा वैज्ञानिके बनि जाइतैक।



मेहमान : बेटा बताऊ तऽ आहाँक जन्म कोन दिन भेल?
बच्चा : बुधदिन, अओर अहाँक जन्म कोन दिन भेल अछि कक्का?
मेहमान : रविदिन।
बच्चा : किएक झुठ बाजैत छी, रविदिन तऽ छुट्टी रहैत छै।

बेटा : पापा, अहाँके शेरसँ डर लागैत अछि?
पापा : नञि।
बेटा : अओर हाथीसँ?
पापा : बिलकुल नञि।
बेटा : तखन आहाँ भूतसँ जरूरे डरैत हैब?
पापा : नञि, हम भूतो से नञि डरैत छी।
बेटी : देखलीह, हम तऽ पहिनेसँ कहैत छलियौह जे पापा खालि मम्मीयेटा से डरैत छथिन्ह।



मालिकः हमरा कम्पनी मे सब काम बिजलीये सँ होइत अछि।
नौकर : सुआइत, तनखा दै कालमे आहाँकें झठका लागैत रहैत अछि।

(आयुष वर्मा; जमशेदपुर, झारखण्ड)



आयुष वर्मा *शुभम वर्मा*

बौआ-बुच्ची लोकनि!

जौं अहाँ मैथिली मे अपन लिखल खिस्सा, कविता, गीत, चुटकुला इत्यादि मिथिलांगन पत्रिकाक बाल मचान मे छपाबऽ चाहैत छी तऽ कागत कलम उठाऊ आ फुलस्केप पेज पर साफ-साफ नीक सँ लिखि कऽ मिथिलांगनक पता पर पठाऊ। संगहि जौं अहाँ सब चित्र वा कार्टुन बनबैत छी तऽ सेहो बना कऽ पठा सकैत छी।

हँ! अपन मूल रचना वा चित्र इत्यादिक संग अपन पूरा नाम, माँ-बाबूजीक नाम, निवासक पता, अपन कक्षा आ विद्यालय केर नामक संग अपन हालक खिंचल पासपोर्ट साइज फाटो अवश्य पठाबी।

- संपादक

भाए राजनन्दन लालदास



❑ *जगदीश प्रसाद मण्डल*

भाए राजनन्दन लाल दासजीक जन्म दरभंगा जिलाक गोनौन गाममे पाँच जनवरी उन्नैस सए चौंतीस (1934) ई. दिन स्व. मनीलाल दासक परिवारमे भेलैन्ह। माता स्व. विद्या देवी छलीह। ओना, एहनो तऽ कहले जा सकैए जे पैछला भुमकमक साल राजनन्दनजीक जन्म भेलैन्ह।

गोनौन गामकेँ जनने बिनु राजनन्दनजीकेँ जानब किछु खोर रहबे करत, तैँ पहिने नव पीढ़ीक जे खोजी छैथ हुनक धियान दरभंगा जिलाक भौगोलिक बुनावटिपर दिअ चाहै छी। ओना, दूटा बात पहिनहि कहि दै छी, पहिल- 1972 ई. पूर्वक दरभंगा जिला कटि कऽ समस्तीपुर, मधुबनी आ दरभंगा जिला बनल अछि। दोसर, 1960 ई.सँ पूर्वक गाम आ साठि ई.क पछाइत गामक रूप-रेखा।

अपन दरभंगा जिलाक अन्तर्गत दर्जनो नदीक बहाव अछि जे मधुबनी, आइ अलग जिला अछि, जाहिमे दू दर्जनसँ ऊपर छोट-पैघ नदी अछि। जखन सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर जिला)सँ पश्चिम चंपारण जिलाक पूर्वी चम्पारण जकरा मोतीहारी सेहो कहै छियै, तैठाम धरि पहाड़ी नदी, माने नेपालक पहाड़क नदी, घुमैत-फिड़ैत दरभंगा जिलामे आबियै गेल अछि। अपना सभ सेहो मानिते छी जे मोतीहारी धरि अपन मैथिली भाषी क्षेत्र अछि।

1960 ई.सँ पूर्वक गाम आ 1960 ई.क पछातिक गाममे बहुत दूरी बनि गेल अछि। साठि ई.क पछाइत जहिया कोसी-कमलामे बान्ह-छहर बनल तहियासँ गामक मुँह-कान बिगड़य लगल, जाहिसँ गामक स्वरूपेँ बदैल गेल। अपन सभक जे भूमि अछि जकरा 'गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान' कहै छियै ओकर ढाल उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ अछि।

साठि ई.क पूर्वक जहिना आन-आन गाम सुन्दर छल तहिना गनौन सेहो सुन्दर गाम छल। सुन्दर गामक माने भेल गाछी-बिरछी, नदी-नालासँ सम्पन्न गाम। बाढ़िक प्रकोप जौँ हेबो करैत छल तऽ ओकर आयु मात्र अढ़ाइ दिन बान्हि देल गेल छल। माने भेल जे केहनो नमहर बाढ़ि किएक ने हुअए ओ अढ़ाइ दिनक पछाइत घटय लगैए। माने कम-सँ-कम नोकसान हएब।

गामसँ मैट्रिक पास केलाक पछाइत 1949मे राजनन्दन लाल दासजी कलकत्ता गेलाह। तहियाक कलकत्ता आजुक कोलकाता बनि गेल अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ 1960मे राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केलैन्ह। पछाइत प्राइवेट कम्पनीमे मार्केटिंगक रूपमे सत्ताइस वर्ष धरि नौकरी केलैन्ह।

कौलेजे जीवनसँ दासजी सामाजिक, साहित्यिक संस्था सबसँ जुड़ि अनवरत सक्रिय रहलाह। ओना, हाई स्कूलक जीवनमे हुनकापर समाजवादी पार्टीक नेता- जयप्रकाश बाबू, सूरजबाबू इत्यादिक प्रभाव पड़ल छल। जाहिसँ समाजवादी पार्टीक समर्थक बनि काजो केलाह। 1952क चुनावमे जय प्रकाश बाबूक हारक प्रभाव दासजीक मनपर बड्ड बेसी पड़लैन्ह।

कलकत्ता (कोलकाता)क प्रवास जीवनमे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीसँ प्रभावित भऽ लाल कार्डधारी सदस्य 1967 धरि रहलाह।

एम.ए. केलाक पछाइत जीविकोपार्जन लेल दास भाए सेल्स मैनेजमेन्ट एण्ड मार्केटिंग रिसर्चक ट्रेनिंग लेलैन्ह। पछाइत अनेको कम्पनीमे काज केलाह जाहिसँ अपन देशक संग शार्क देशक भ्रमण सेहो नीकसँ केलैन्ह।

कोलकाता ओहन महानगर अछि जाहिठाम साहित्य आ संस्कृतिक केन्द्र, विश्वभारती सन संस्थान तपस्वी मनीषी रवीन्द्रबाबूक स्थापित कएल अछि। हिन्दीक महान समीक्षक आ उपन्यासकार डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी सन सृजक बंगालेमे रहि सृजन केलैन्ह।

मिथिलाक सेहो एक-सँ-एक महान् विभूति मनीषी बंगालक धरतीपर साधना केलैन्ह अछि। जकरे फलाफल मैथिली भाषा साहित्य सेहो अछीये। विश्वमे सबसँ पहिने उन्नैस सए उन्नैस (1919)मे मैथिली भाषा साहित्यक स्नात्कोत्तरक (एम.ए.) अध्यापन कलकत्ते विश्वविद्यालयमे शुरू भेल।

विद्याव्यसनी राजनन्दन लालजीकेँ एतय बहुतो मातृभाषानुरागी लोकनिक साहचर्य प्राप्त भेलैन्ह। बाबू साहेब चौधरी आ सत्यनारायण दासक तऽ दहिने हाथ रहलाह। जकर फलस्वरूप छात्रवस्थाहिमे कविवर सीताराम झाजीक (1891-1965) सुप्रसिद्ध पाँति-

पढ़ि-लिखि जे ने बजैछ हो निज मातृभाषा मैथिली।

मन होइछ झिटुकी सँ तेकर हम कान दुनू ऐँठि ली।।

सँ अतिशय प्रभावित भऽ हिनको हृदयमे मातृभाषानुरागक पुष्प धीरे-धीरे प्रस्फुटित होइत गेलैन्ह। नौकरी-जीवनक शुरूयेसँ जखन केतौ बाहर जाए छलाह अपन काज निपटा, अपन देश-कोसक लोककेँ भाँज लगबै छलाह। जाहिमे मणिपुरसँ लऽ कऽ कश्मीर धरि अपन गौँआँ-घरूआ आ अपन बोलियो-वाणी भेटिये जाए छेलैन्ह। ओना बोली-वाणी जे भेटैत होइन मुदा एकटा मैथिलक जीवन तऽ भेटिये जाएइ छेलैन्ह, एहिसँ मिथिला आ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति अनुराग बढ़िते गेलैन्ह।

पण्डित देवनारायण झा आ कामरेड पीताम्बर पाठकक संग सम्पर्क भेलाक फलस्वरूप 1958मे मिथिला सांस्कृतिक सम्मेलनमे दासजी अपन पूर्ण सक्रियता देखौलैन्ह।

1942क 'भारत छोड़ो आन्दोलन'मे जखन राजनन्दन भाए पाचम कक्षाक छात्र रहैथ, पंडौल मिडील स्कूलमे पढ़ैत रहैथ तहिये एकटा बाल स्वतंत्रता सेनानीक रूपमे काज शुरू केलैन्ह। छात्रावस्थाहिसँ विभिन्न राजनीतिक दलसँ दास भाए अतिशय प्रभावित छलाह। कोलकाता प्रवासक दौरान वामपंथी राजनीतिसँ प्रभावित भऽ भारतीय कम्युनीस्ट पार्टीक राजनीतिमे कुदि पड़लाह आ ओकर विविध गतिविधिमे अपन सक्रिय सहभागिता देब लगलाह अओर अपन शान्तिपूर्ण पारिवारिक जीवन सेहो जीबय छलाह। यातना आ संघर्षसँ भरल पूर्व पुरुखाक जीवन यात्रा हिनका लेल संजीवनी बनल रहलैन्ह।

मिथिला मैथिलीक विकासार्थ सदति कार्यरत रहि सबसँ पहिने 'मिथिला दर्शन'

मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे अपन अपरिमित सहयोग देब प्रारम्भ केलैन्ह (एहि पत्रिकाक स्वामीत्व आ सम्पादनक दायित्व छल स्वर्गीय प्रबोध नारायण सिंह (1924-2005)कें) पछाइत मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड कम्पनीक स्थापना भेल। जाहिमे चेयरमेन भेलाह स्व. प्रवोध नारायण सिंह, मैनेजिंग डायरेक्टर भेलाह उदित नारायण झा आ कम्पनी सेक्रेटरी भेलाह राजनन्दन लाल दास। आपसी विवादसँ पत्रिका किछु दिनक पछाइत बन्न भऽ गेल।

संघक विवादसँ आहत 1966मे एकटा नव संस्थाक स्थापना केलैन्ह 'ऑल इण्डिया मैथिल संघ' जकर अध्यक्ष महावीर झा आ सचिव भेला स्वयं। ओना, हिनका हृदयमे, अपन भाषा-साहित्यक अनुरागक धारा प्रबल रूपमे प्रवाहित होइते रहैन। अग्निजीवी पत्रिका 'आखर'क प्रवेशांक 1967क दीपावलीक अवसरपर प्रकाशित केलैन्ह। किछु अंक प्रकाशित भेला पछाइत आपसी विवादसँ ऊहो पत्रिका बन्न भऽ गेल।

पत्रिका बन्न भेला पछाइत हिनक भाषानुरागी मन छटपटा गेलैन्ह। ओहि समयमे एकटा सामाजिक ओ साहित्यिक संस्था 'कर्णगोष्ठी' 1963मे स्थापना भेल। जकर स्थापनाकालहिसँ दास भाए एकर सक्रिय विरोध केलैन्ह। हुनकर मन मानि रहल छेलैन्ह जे एहिसँ जातिवादी मानसिकताकेँ बढ़ावा भेटत। गोष्ठीक पहिल स्मारिका प्रकाशित भेल 1974मे। जाहिमे ओ कर्ण-कायस्थक वैवाहिक समस्यापर एकटा जोरदार लेख लिखलैन्ह, जे प्रकाशित भऽ ओहि पत्रिकामे संग्रहित अछि। वैचारिक मतभेद चलैत रहल। किछुए बर्खक पछाइत ओ कर्णगोष्ठीसँ सम्बद्ध भेला आ 1981मे 'कर्णामृत' पत्रिकाक शुभारम्भ भेल, जेकर प्रधान सम्पादक अर्जुनलाल करण आ सहयोगी सम्पादक भेलाह राजनन्दन लाल दास।

मार्केटिंग कार्यसँ जुड़ल नेपालसँ लऽ कऽ भारतक कोण-कोणक भ्रमण करिते छलाह। जे 'कर्णामृत' पत्रिकाक प्रचार-प्रसारमे नीक संयोग बनल। पत्रिकाक आजन्म ग्राहक तीस सएसँ ऊपर अछि, जे आर्थिक स्थिति सेहो बढ़ियाँ बना लेलक। मिथिला-मैथिलीक दुर्भाग्य रहबे कएल अछि जे अर्थक अभावमे केते नीक रचनो आ केते नीक पत्रिको असमये कालकवलित भइये गेल अछि।

पत्रिकाक संग-संग साहित्यिक जनजागरण दिकेँ दासजी ध्यानमे राखि अनेको साहित्यिक पोथी सेहो प्रकाशित केलैन्ह। जाहिमे उपन्यास, कथा, कविता, नाटक, लोकगाथा, संस्मरण, समालोचना इत्यादि विभिन्न विधाक पोथी सभ प्रकाशित भेल, जाहिमे- 'अर्द्धनारीश्वर' (1981), 'साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास : व्यक्तित्व ओ कृतित्व' (1983), 'नागभूमि' (1985), 'तेसर कनियाँ' (1986), 'मैथिलीक दधीचि बाबू भोला लाल दास' (1991), 'अनंग कुसमा' (1999), 'नाट्यरूप फुटपाथ' (2001), 'उत्तर जनपद' (2003), 'आदिम गुलाम' एवं 'कनकी' (2003), 'मणिकरण' (2003), 'हुनकासँ भेँट भेल छल' (2004), 'प्रपाणिका' (2005), 'भारतीक बिलाड़ि' (2005), 'मैथिली लोक गाथाक इतिहास' (2005), 'जिजीविषा' (2005), 'अग्नि शिखा' (2005), 'चित्रा-विचित्रा' (2005), 'खोहक अन्हार' (2005) आ मणिपद्म (ब्रज किशोर वर्मा)जीक बीछल कथा (2005) इत्यादि महत्वपूर्ण पोथी सभ अछि। जीवनक अन्तिम सीमा धरि दास भाए भाषा-साहित्य लेल अपनाकेँ समर्पित केने रहलाह।

हिनक स्मरणशक्ति गजब छेलैन्ह। बजैक क्रममे एहेन कार्यक सूत्रवाक्य बाजि दैत छलाह जकर जबरदस्त प्रभाव सुननिहारपर पड़ैत छल। बजैक शैली एहेन जे मुहावरा, कहावत आ गमैया बोली अपने-आप प्रकट होइत रहैत छेलैन्ह, तऽ सुननिहारकेँ आकर्षण बढ़िये जाइत छेलैन्ह। केहनो परिस्थिति किएक नञि हिनका सोझामे आबैन्ह मुदा कखनो ओ विवेकहीन नञि भेलाह। समाज आ साहित्यक प्रति तेना समर्पित छलाह जे कखनो मनसँ समर्पित भाव आ विचार हटबे ने करैन्ह।

ओ मिथिलासँ बाहर जीवन बितौलैन्ह मुदा कोलकाता प्रवास रहितो जाहि रूपेँ मैथिलीक सेवा केलैन्ह ओ कहियो बिसरल नञि जा सकत। भाषा-साहित्यसँ अगाध मोह, जीवन-जगतक गम्भीर अनुभव भरल छेलैन्ह,जे जीवनमे भाषा-शैली आ दृष्टिनिर्माणक समुचित विकास देलकैन्ह। ओ मात्र, योजनाप्रिय नञि, ओहि योजनाकेँ धरतीपर आनि क्रियान्वित केना कएल जाए, ताहु लेल सदैव चिन्तित रहैत छलाह। अपन सीमित साधनक बीच केना कोनो सांगठनिक दायित्वकेँ निमाहल जाए, तेकर विशेष अनुभव छेलैन्ह।

हिनके सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप 'मैथिली संग्राम समिति'क संगठन 1967मे भेल। जकर अध्यक्ष उदितनारायण झा आ मंत्री स्वयं अपने छलाह। मैथिली संग्राम समिति मैथिलीक मान्यताक लेल विविध मांगक हेतु केन्द्र आ बिहार सरकारक मंत्रीकेँ सेहो घेराव कऽ कतेको बेर स्मारपत्र देलक।

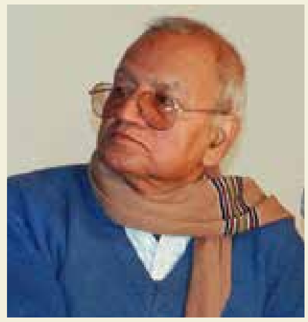
1981सँ माने जहियासँ 'कर्णामृत' पत्रिकाक आरम्भ भेल, तहियासँ जीवनक अन्तिम समय धरि दास भाए अपन मानवीय दायित्वक निर्वहन केलैन्ह।

पत्रिकाक संग-संग मेघावी आ निर्धन छात्रक लेल 'योगेन्द्र स्मृति छात्रवृत्ति कोष', प्रतिभाशाली रचनात्मक मैथिली लेखनक निमित्त 'श्रीमती सीतावती स्मृति मैथिली सम्वर्द्धन कोष' एवं उत्कृष्ट कलाक प्रोत्साहनार्थ 'श्रीमती रासोदेवी स्मृति कला सम्वर्द्धन कोष' इत्यादि बनेबामे भरपूर सहयोग केलैन्ह।

1985सँ 'कर्णामृत पत्रिका'मे शारदीय अंक राजनन्दन भाए बढ़ौलैन्ह, जाहि माध्यमसँ प्रमुख रचनाकार सभहक विशेषांक 'शारदीय अंक' करिकऽ सेहो निकालब शुरू केलैन्ह। जाहिमे 1. राधाकृष्ण चौधरी स्मृति अंक (1986), 2. मणिपद्म श्रद्धांजलि अंक (1986), 3. किरण स्मृति अंक 1989, 4. मिथिला विभूति अंक 1992, 5. जगदीपनारायण चौधरी दीपक स्मृति अंक 1993, 6. श्रीकान्त मण्डल स्मृति अंक 1994, 7. आरसी प्रसाद सिंह स्मृति अंक (1997), 8. प्रभास कुमार चौधरी स्मृति अंक (1998), 9. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' स्मृति अंक (1999), 10. मणिपद्म स्मृति अंक 2000, 11. महाकवि लाल दास स्मृति अंक 2001 इत्यादि अनेको विशेषांक अनवरत निकालैत रहलाह।

श्रद्धाक संग भाए राजनन्दन लाल दासजीक समर्पण, साहस, निर्भिकपन आ पीतमरूपनकेँ आदर करैत आशा करै छी जे एहि उतारक सम्पादक 'कर्णामृत' पत्रिकाकेँ भेटत।

पद्मश्री मानस बिहारी वर्माजीक असामयिक निधन



पूर्व राष्ट्रपति श्री ए पी जे अब्दुल कलाम जीक निकटतम सहयोगी, भारतमे स्वनिर्मित लड़ाकू विमान तेजसक निर्माणमे अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभेनिहार, पहिल बेर उड़ल तेजसक एल.सी.ए. प्रोग्रामक निदेशक, 2018मे भारत सरकारसँ पद्मश्री सम्मानसँ सुशोभित 29 जुलाई 1943मे बाउर गाममे जनमल मानस बिहारी वर्माजीक असामयीक निधन 78 वर्षक वयसमे विगत 04 मई 2021 भऽ गेल। गौरतलब अछि जे ***मिथिलांगनक सितम्बर 2020 अंक***मे अपन कार्यक अनुभव साझाँ करैत बच्चाक विजनकेँ विकसित करबा पर जोड़ देने छलाह। किछ दिन पूर्व मेल पर आयल हुनक संदेश साझाँ कऽ रहल छी - *Dearest Mukeshji, Thanks a lot. MITHILANGAN Ank46-47 was quite informative and spell-binding, with very broad canvass of Mithila's cultural life.I wish you all grand success in your efforts.My apologies, couldn't type in devnagari. May God Bless you. MB VERMA*

हिनक असामयिक स्वर्गारोहण सँ पुरा मिथिलांगन परिवार मर्माहित अछि, अपन एकटा अभिभावकक गेनाय सबकेँ विचलित कऽ देलक। ईश्वर शोकाकुल परिवारकेँ दृढ़ इक्षा शक्ति प्रदान करैथ। मिथिलांगन परिवार दिस सँ ब्रह्मलीण आत्माकेँ अश्रुपूर्ण सादर श्रद्धांजलि।

नहि रहलाह प्रसिद्ध रंगकर्मी कुमार गगन आ मनोज मनुज

मैथिली रंगमंचक प्रणेता, वरिष्ठ रंगकर्मी, रंगजगतक पुरोधा, पटना हाई कोर्टमे सहायक रजिस्टार कुमार गगनकेँ विगत 18 अप्रेलकेँ निधन भऽ गेलैन्ह।

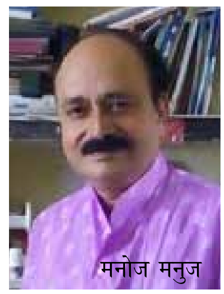
पटनाक मैथिली रंगमंचसँ जुड़ल एकटा अओर वरिष्ठ रंगकर्मी मनोज मनुज सेहो अपन नश्वर शरीरक त्याग कऽ देलैन्ह।

गौरतलब अछि जे मिथिलांगन डिजिटल मंच पर आबि दूनू रंगकर्मी मिथिलांगनक मान बढ़ा चुकल छथि।

मिथिलांगन परिवार दिससँ दूनू महान नाटककार-रंगमंचीय व्यक्तित्वकेँ सादर नमन! विनम्र श्रद्धांजलि!!!



कुमार गगन



मनोज मनुज

साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत साहित्यकार श्याम दरिहरेक निधन



मैथिली भाषाक वरिष्ठ साहित्यकार, 2016मे 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कॉम' लेल साहित्य अकादेमी सम्मानसँ सम्मानित 19 फरवरी 1954मे जनमल श्याम दरिहरे जीक 67 वर्षक उम्रमे 25 जून 2021ब्रेन हेमरेजसँ निधन भऽ गेलैन्ह। ओ मैलोरंग द्वारा प्रदत्त 'श्याम दरिहरे रंग सम्मान'क प्रायोजक छलाह।

झारखंडक हजारीबागमे डिविजनल कमांडेंटक पदसँ वर्ष 2014मे सेवानिवृत्त भेल दरिहरे अपना पाछाँ धर्मपत्नी आ दू पुत्र छोड़ि गेलाह। हुनक निधनसँ संपूर्ण साहित्य जगतक लेल अपूरणीय क्षति अछि।

मिथिलांन परिवार एहि महान आत्माकेँ विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि।

रंगकर्मी अभय चौधरी जीक स्वर्गवास



मिथिलांगनक रंगमंच प्रभारी संजय चौधरीक अनुज रंगकर्मी अभय चौधरी 'चुन्नू' जीक कोरोनासँ असामयीक निधन भऽ गेलैन्ह। मिथिलांगनक अनेको नाट्य प्रस्तुतिमे वस्त्र-विन्यास अओर अभिनयसँ दर्शकक हृदय जीतयवला महामारी कोरोनासँ हारि गेलाह। नैका बनिजारामे बाछा तिलंगाक भूमिका हुनक यादगार प्रस्तुतिमे सँ एक छल।

महज वर्षक अभयजी अपना पाछाँ पत्नी आ दू संतान छोड़ि गेलाह। ईश्वर शोकाकुल चौधरी परिवारकेँ दृढ़ इक्षा शक्ति प्रदान करैथ। मिथिलांगन परिवार दिससँ दिवंगत आत्माकेँ अश्रुपूर्ण सादर श्रद्धांजलि।

गौतम कुमार मल्लिक नेशनल चैपियन ट्रॉफीमे दिल्लीक कप्तान चयनीत

मधुबनी नवासी गौतम कुमार मल्लिक क्रिकेटमे उभरैत सितारा छथि। नेशनल चैम्पियन ट्रॉफी, गोवामे फरवरी 2021मे दिल्ली नाईट दिससँ सबसँ बेसी रन बनाबयबाला खिलाड़ी रहलाह। एहि खेलक आयोजन ऑल इंडिया क्रिकेट एसोसिएसन केने छल। हलांकि फाइनलमे मैच उत्तर प्रदेशक टीत जीतलक।



बचपनेसँ क्रिकेटमे बेसर रूचि रहलैन्ह। वो केंद्रीय विद्यालय बदरपुरक दिससँ मेरठ आ अन्तर विद्यालय प्रतियोगितामे सेहो अब्बल खिलाड़ी रहल छथि। इंद्रपस्थ विश्वविद्यालयमे सेहो अपन कॉलेज दिससँ 2019मे प्रतिनिधि कएलैन्ह। एहि बेर पुनः टी-20 सी सी एलकें नेशनल चैपियन ट्रॉफीमे दिल्लीक कप्तान लेल चयनीत भेलाह, जकर मैच संभवतः सितम्बर 2021मे दिल्लीमे होएत। संगे टी-20 एन पी एलमे सेहो दिल्लीक कप्तान लेल चयनीत भेला, जे मैच गोवामे होएत। मिथिलांगन हिनक सुखद आ सफल भविष्यक कामना करैत अछि।

देवशंकर नवीनकें दिनकर राष्ट्रीय सम्मानक घोषणा



जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीक प्रोफेसर पद पर कार्यरत मैथिली आ हिन्दीक सुप्रसिद्ध कवि, कहानीकार, समालोचक, अनुवाद प्रो. देवशंकर नवीनकेँ वर्ष 2021 लेल दिनकर राष्ट्रीय सम्मान देबाक निर्णय कएल गेल। ई सम्मान हुनका दिनकर जयन्तीक अवसर पर 23 सितम्बर 202कें बेगूसरायमे देल जाएत। प्रो नवीन नेशनल बुक ट्रस्ट आ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालयमे अपन सेवा दऽ चुकल छथि।

डॉ. कनक लताकें राष्ट्रीय शिक्षा गौरव पुरस्कार

शिक्षा, कौशल विकास अओर अनुसन्धानक क्षेत्रमे उत्कृष्ट आ अनुकरणीय योगदान लेल मेट्रो कॉलेज ऑफ हेल्थ साइन्सेज एंड रिसर्च, ग्रेटर नोएडाक निदेशिका, बेलराही ग्रामवासी डॉ. कनक लता कें सटर फॉर एजुकेशन ग्रोथ एंड रिसर्च (CEGR)क 15हम पुरस्कार समारोह मे **राष्ट्रीय शिक्षा गौरव पुरस्कार 2021** प्रदान कएल गेल।





चन्दना दत्तकें राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2021 डिजिटल रूपें प्रदान कएल गेल

विभा रानी कें सूरज प्रकाश मारवाह साहित्य रत्न अवार्ड

विभारानीक साहित्यिक अवदानक लेल एशियन एकेडमी आफ आर्ट एवं मारवाह स्टूडियो द्वारा आयोजित '7म ग्लोबल लिटरेरी फेस्टिवल 2021' मे हुनका 'सूरज प्रकाश मारवाह साहित्य रत्न अवार्ड' देल गेल।



मल्लिक होंडा परिसरमे व वृक्षारोपण कार्यक्रम

ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस दिल्ली- हरियाणा अओर कायस्थ प्रगति मंच द्वारा दिनांक 1 अगस्त 2021क मल्लिक होंडा परिसर, जैतपुर, नई दल्लीमे वृक्षारोपणक कार्यक्रम केर अयोजन कएल गेल। एहि अवसर पर ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंसक प्रबंध न्यासी श्रीमति रागिणी रंजन लोग सबकें गाछ लगाबय लेल प्रेरित कएलैन्ह। जी के सी द्वारा संचालित गो-ग्रीन कार्यक्रम संपूर्ण भारतवर्षमे चलि रहल अछि। ओहि अवसर पर जी के सीकें पदाधिकारीगण समेत अनेक गणमान्य अतिथिगण लोकनि अपन-अपन विचार रखलन्हे। श्री बी के मल्लिक द्वारा भगवान चित्रगुप्तक फोटो श्रीमति रागिणी रंजनजीकें देल गेल आ 19 दिसंबर 2021 कऽ दिल्लीमे ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंसमे सबकें आबय लेल आह्वान कएल गेल।

बिहार संग 4 राज्यक लेल 'लेप्रा'क ब्रांड एंबेसडर बनलीह लोक गायिका मैथिली ठाकुर

बिहार स्थित लेप्रा सोसाइटी बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश अओर दिल्ली प्रदेश लेल मैथिली ठाकुरकेँ अपन ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त केलक। लेप्रा सोसाइटी सम्पूर्ण भारतवर्षमे कुष्ठसँ ग्रसित मरीजक सेवा कार्यसँ प्रारंभ करैत ग्रामीण आ शहरी क्षेत्रमे आँखिक विभिन्न परियोजना अओर विगत एक दशकसँ फाइलेरियासँ ग्रसित मरीजक मुफ्त चिकित्सा, परामर्श व पुनर्वसन संबंधी कार्यक्रममे लागल अछि।

बिहार राज्यक परियोजना समन्वयक रजनी कांत सिंहक अथक प्रयास अओर निरंतर काजक अवलोकनक बाद सुश्री मैथिली ठाकुर लेप्राक प्रस्तावकेँ सहर्ष स्वीकार केलैन्ह अओर भविष्यमे आर बेसी गरीब आ निरीहजनक कल्याण हेतु काज करबाक लेल अग्रिम शुभकामन देलैन्ह। द्वारका दिल्लीमे आयोजित एकटा कार्यक्रममे रजनी कांत सिंह द्वारा सुश्री ठाकुरकेँ अंग वस्त्र प्रदान कएल गेलैन्ह आ हुनक संस्तुति हेतु हृदयसँ आभार व्यक्त केलैन्ह। सुश्री ठाकुर प्रस्ताव स्वीकार करैत शुभकामना संग संस्थाक प्रयास हेतु सतत कार्यरत रहबाक आश्वासन देलैन्ह।



डिजिटल रूपेँ मनाओल गेल मिथिलांगनक वार्षिकोत्सव अओर अभय महोत्सव

गत 16 फरवरी 2021केँ मिथिलांगन अपन वार्षिकोत्सव 'सरस्वती पूजनोत्सव' डिजिटल रूपेँ मनोलक। दिनमे पूजा लेल देवेश्वरी भवनमे सचिव निर्भयजी संग समीपक लोकसब उपस्थित भेलाह अओर राति 08.00 बजेसँ टीम सुन्दरमजी सांस्कृतिक कार्यक्रमक फेसबुक लाइव द्वारा आनन्द लेलैन्ह।



संगहिं विगत 25 जुलाईकेँ अभय महोत्सव सेहो डिजिटले रूपमे मनाओल गेल, जाहिमे कार्यक्रमक प्रारूप निम्न प्रकारेँ छलः-

1. डॉ दीपक दास द्वारा **'कोरोणा एक महामारी विषय'** पर चर्चा।
2. श्रीमती इंदिरा दास द्वारा **'कोरोनाक सामाजिक प्रभाव आ निदान'** विषय पर वक्तव्य।



3. बच्चा-बुच्चीक संगीत।
4. प्रशस्ति-पत्र वितरण।
5. टीम सुन्दरम द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम।

दूनू कार्यक्रम अओर समस्त डिजिटल कार्यक्रम लेल संचालक संजय चौधरी जीकेँ अनन्त शुभकामना।

मिथिलांगन सुर संग्राम - एकटा सुखद प्रयास

मिथिलामे पहिल बेर एहन सुअवसर आयल छल जहन मैथिली लोक संगीतकेँ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रमे रहनिहार मैथिल महिला कलाकारकेँ अपन-अपन प्रतिभाकेँ प्रदर्शित करबाक समुचित मंच आ अवसर भेटल। आ ई अवसर एकटा वृहद सोच थीक जे मैथिली भाषाक एक मात्र डीजिटल मंच मिथिलांगन द्वारा प्रदान कएल गेल।

मिथिलांगन मंच पर बहत्तरिटा महिला प्रतिभागी कलाकारक संगे शुरू भेल ई कार्यक्रम महज 78 दिन चलल जे मात्र भारत देशेटामे नञि अपितु समस्त विश्व पटल पर सेहो छायल रहल आ अखन धरि निरंतर सुर्खीमे बनल रहल अछि। पूर्णतया मैथिल महिलाक लेल समर्पित कार्यक्रममे सोवियत संघ, संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, नेपाल आदिमे रहनिहारि मैथिलानी शामिल छलीह। आदित्य बिरला ग्रुप द्वारा विशेष प्रयोजित एहि चर्चित संगीत कार्यक्रमक ग्रैण्ड फिनाले 21 मार्च 2021क समपन्न भेल, जाहिमे तीनटा कलाकर क्रमशः प्रथम पुरस्कार श्रीमती किरण प्रभाजी, राउरकेला, उड़ीसासँ; द्वितीय पुरस्कार श्रीमती माला झाजी, भीलवाड़ा, राजस्थानसँ अओर तेसर पुरस्कार श्रीमती आरती मिश्राजी दिल्लीसँ विजयी भेलीह। हिनका सबकेँ मिथिलांगन मंचसँ पुरस्कृत कएल गेलैन्ह संगहि सब प्रतिभागीकेँ विशेष प्रशस्ति पत्र दऽ सम्मानित कएल गेलैन्ह। सुर संग्राम कार्यक्रमक माध्यमसँ सब प्रतिभागी मिथिलांगन मंचकेँ धन्य केलैन्ह संगे समस्त मिथिला गौरवान्वित भेल।

मिथिलांगनक लक्ष्य मैथिली भाषा, साहित्य, कला आ संस्कृतिकेँढ ओहि तमाम प्रवासी मैथिलक संग जोड़वाक छल जे मिथिला क्षेत्रकेँ होइतो मैथिली परम्परासँ कटि गेल छेलैथ। जे मैथिली लोकसंगीत मिथिलाक आंगन-घर धरि सिमटि कऽ रहि गेल छल, मिथिलांगन संस्था ओहि समस्त प्रतिभाकेँ घरक देहरीसँ बाहर निकालि कऽ बड़ पैघ फलक पर प्रस्तुत कएलक। आइ करीब छः मास एहि कार्यक्रमकेँ समाप्तिक होमय जा रहल अछि तथापि मिथिलांगन सुर संग्राम कार्यक्रमक दीवानगी आइयो चर्चाक विषय थिक आ निरन्तर रहत। आइ समस्त प्रतिभागीकेँ एकटा अपन पहचान छैन्ह। लोक सब आइयो हैरानीमे अछि जे एहन प्रतिभाशाली मैथिल महिला कलाकार सब हमरा बीचमे छथि।

मिथिलाक सुपरिचित कलाकार श्रीमान संजय चौधरीजीक संयोजन आ श्रीमान



सुन्दरम चौधरीजीक निर्देशनमे ई कार्यक्रम, एकटा विशेष कोर कमिटीक संचालन आ दिशा निर्देशमे लोकप्रियताक सर्वोच्च शिखर प्राप्त कएलक। मैथिली लोकसंगीतक विकास आ उज्ज्वल भविष्यक लेल एकटा विशाल मार्ग सुगम कएलक। जाहिसँ मैथिली संगीत कला प्रेमीकेँ एकटा अभिनव प्रयोग आ ओकरा अत्यन्त करीबसँ स्पर्श करबाक सुखद अनुभूति प्राप्त करवाक अवसर भेटलैन्ह, जाहिमे गोसाऊनी गीत, विद्यापतिक रचित गीत, शुभ संस्कारक विभिन्न विधाक गीत, मिथिला पावनि-तिहारक लोकगीत, बेटी विवाहसँ लऽ कऽ विदाई धरिक गीत, सोहर, समदाऊन, बटगबनी, लगनी, महेशवाणी, संध्या, पराती आदि कतेको विधाक गीत-संगीत प्रस्तुत कएल गेल।

मैथिली संगीतक एहि कार्यक्रमक एकटा अओर विशेषता हमरा जनतबे रहल जे लोक गीतकार सभहक उत्कृष्ट रचना सबकेँ सेहो निकटसँ स्पर्श करबाक अवसर मैथिली लोकसंगीत प्रेमीजनकेँ प्राप्त भेलैन्ह, जाहिमे आदरणीय मैथिलीपुत्र प्रदीप, शिव कुमार झा, तारानन्द लाल दास, शैलरीता दास, दामोदर लाल दास, योगेन्द्र योगी, मानवर्धन कंठ, ब्रह्मदेव लाल दास, अरविंद कुमार लाल प्रमुख छलाह।

मिथिलांगन सुर संग्रामक एहि निर्विवाद कार्यक्रममे कतेको रास विद्वान आ संगीतज्ञ जजगण पारम्परिक लोक संगीतक एहि विशाल आ एतिहासिक कार्यक्रममे लोक संगीतक संगे निष्पक्ष न्याय करैत नजरि एलाह, जाहिमे- मानवर्धन कंठ, सुन्दरम, रामश्रेष्ठ पासवान, डॉ मनोज झा, आसुतोष मिश्रा, विद्या चौधरी, वीनिता मल्लिक, राखी दास, विजय शंकर पाठक, पूजा झा, सुरेन्द्र नारायण यादव छलाह। एहि कार्यक्रमकेँ शिखर धरि पहुँचेबामे कुशल संचालन मंडलक संग मृत्युंजय चौधरीक महत्वपूर्ण भूमिका छल। संचालन टीममे चर्चित कलाकर कल्पना मिश्रा दिल्लीसँ, सुष्मता आनन्द बेंगलूरसँ, छवि दास दिल्लीसँ कार्यक्रमकेँ समस्त मैथिल जनमानस धरि पहुँचौलैन्ह। आशुतोष मिश्र, मनोज झा, पूजा झा, सुन्दरत चौधरी, विद्या चौधरी सन कला पारखीक नजरि प्रतिभागीक सब प्रस्तुति पर रहलैन्ह आ ओ लोकनि निष्पक्ष भऽ निर्णय लेलैन्ह।

प्रतियोगितामे विजेता पुरस्कारसँ पुरस्कृत होइथ छथि आ बाँकी प्रतिभागी मंचक अनुभवसँ पुरस्कृत होइत छथि। एहि महान कार्यक्रमकेँ सफलतापूर्वक पूर्ण हेबामे जे अधीरता छल ओ प्रतिभागी लोकनिक अनुशासन आ दर्शक आ श्रोता लोकनिक स्नेहसँ पुर्ण भेल।

अरविंद चन्द्र दास 'सुबोध'
कोषाध्यक्ष, मिथिलांगन

त्रैमासिक पत्रिका 'मिथिलांगन'

त्रैमासिक पत्रिका मिथिलांगन,
अछि मिथिलाक धरोहर।
मात्र एकताक भाव भरल अछि,
लागल अछि मिथिलाक मोहर।।
सिया धिया छथि बहिन किशोरी,
पाहुन छथि मिथिलाकेँ राम।
कमल कुमुदिनी सुंदर जोड़ी,
लागथि चांद सुरज समान।।
परम पवित्र मिथिलाक भूमि पर,
जनम हमर सभहक वरदान।
त्रिशूल चक्रपाणि माए करथि,
सभहक सदिखन कल्याण।।
कार्य कुशल मिथिला वासीकेँ,
स्नेहक भरल अछि भंडार।
मिठगर रूचिगर सुंदर मिथिला,
तेहने अछि मीठगर व्यवहार।।
थिक अप्पन सभहक पत्रिका,
सब कियो पढ़ू अछि विशेष।
लांघि सीमा पार कतहु रहु,
चाहे रहु देश-विदेश।।
गर्व हमर मिथिलावासीकेँ,
मिथिला हमर सुसभ्य कहाबय।
नव नञि कतेक युगसँ मिथिला,
माटीक अपन सुगंध बहावय।।
अखंड मिथिलाक मिथिलांगन,
मिली-जुली राखु सम्हारी।
बस देखु ई मधुर पाती,
चाहु दिस अहिकेँ दियउ पसारि।।
श्वर तहने संस्कार तहने,
जेहन जानकी जनक जमाय।
यश पसरल चहुदिस मिथिलांगनकेर,
आनन्द उड़ नै समाय।।
पसरी रहल अछि सब दिशामे,
एकरहीं सुर संग्राम।
ढुकि प्रेम नगर मिथीलामे,
'कुसुम लता' करय प्रणाम।।

कुसुम लता
लौफा, झंझारपुर

'मिथिलांगन' पोथीक समीक्षा

मिथिलांगनकेँ सब कियो पढ़ू,
कतेक गुणक ई खान छै।
मिथिलांगनक सब पाठककेँ,
'राजीव कमल'केँ प्रणाम छै।।
अंक 47 हाथमे आयल,
अछि ई रंगमंच विशेष।
जानब सबटा हाल एतयसँ,
रहु चाहे देश-विदेश।।
डिजाइन संग सज्जा संजीवक,
आवरण रविंद्र कुमार दास।
संपादक मुकेश जी तऽ,
अपनेमे छथि एकदम खास।।
खानपानमे खटगर मिठगर,
व्यंजन बतावथि विशाखदत्त।
माखनक बर्फी, नेबो अचार संग,
संपादकीयमे छथि मुकेश दत्त।।
सौंदर्य प्रसाधन संतोषी कर्णक,
नवांकुरमे अछि हमर गाम।
पोथी समीक्षा रत्ना बनर्जीक,
त प्रणाम अछि हे हमर गाम।।
बाल मचानमे नेनाकेँ देखु,
कलाकृति अछि एक-सँ-एक।
आलेख, नाटक, साक्षात्कार संग,
बिहनी कथा पढ़लहुँ अनेक।।
सच्चिदानंद लाल दास बतौलैन्ह,
मैथिल कर्ण कायस्थक बात।
किछु मतान्तर बुझी परैत अछि,
फेर करब कहियो ई ज्ञात।।
कविता एक-सँ-एक छपल अछि,
रंग मंचक ई अंक विशेष।
किछु लोक अपन मत देने छथी,
सबहक पढ़लहुँ लिखल आलेख।।
साक्षात्कारमे सब अपन मत रखलैथ,
किछु मिलल किछु अलग प्रथा।
प्रण, फोक आ फोबिया पढ़लहुँ,
छल जे एहिमे लघु कथा।।
तीन गोटेक सम्मान समीक्षा,
दुलारी, ज्योति संग नूतन बाला।
लाल दासक जयंती विशेष संग,
ब्रह्मदेव लालक व्याख्यानमाला।।
ई अछी हमर समीक्षा मिथिलांगनकेँ,
कलमकेँ दऽ रहल छी विराम।
छोट छीन लिखकय समीक्षा,
कय रहल छी हम 'राजीब' प्रणाम।।

राजीव कमल
कोलकाता

श्रद्धेय पाठकगण,

अपनेक पत्र, मेल अओर व्हाट्स अप द्वारा मिलल सुझाव आ विचार पत्रिकाकेँ उत्कृष्ठ बनेबामे सदति सहायक होएत रहल अछि। जकर परिणामस्वरूप अहाँ सभहक सुझाव पर कतेको नव स्तम्भक शुरूआत कएल गेल अछि, आशा अछि अहाँ सबकेँ नीक लागत। ओहि स्तम्भ सभ पर अपन विचार आ टिप्पणीसँ पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकेँ अवश्य अवगत कराबी, जाहिसँ एहिमे छुटि गेल त्रुटिकेँ अगिला अंकमे सुधारल जा सकय।

कोनो विषय पर अपनेक कि सोचब वा कहब अछि, एहि प्रसंग पर अपन मंतव्य, अपन विचारसँ अन्य पाठक लोकनिक ज्ञान अओर जानकारीकेँ बढ़यबाक लेल शीघ्र कागत-कलम उठाऊ आ अपन विचार लिखि मिथिलांगनकेँ **संपादक, मिथिलांगन, ए-40, कैलाश अपार्टमेन्ट, प्लाट नं-2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078** भेजु। अपने लोकनि अपन मंतव्य केँ मिथिलांगनक **ई-मेलः** **mithilangan@gmail.com** पर सेहो प्रेषित कऽ सकैत छी।

नव स्तम्भमे अपन भागिदारी बनाबय लेल ओहि स्तम्भसँ जुड़ल प्रश्न, जिज्ञासा मंतव्यकेँ लिखि भेजु, बीछल मंतव्यकेँ मिथिलांगनक आगामी अंकमे अपनेक नामक संग प्रकाशित कएल जाएत।

\- संपादक



॥ ॐ नमो भगवते चित्रगुप्ताय नमः ॥
kayasthvivaah.com
कायस्थ समाज की निःशुल्क वैवाहिक वेबसाइट
• अपना प्रोफ़ाइल रजिस्टर करें फ्री में
• लीजिये व्हाट्सअप्प कनेक्टिविटी
• लीजिये हमारे एक्सपर्ट की मदद
• चुनिये सुयोग्य वर-वधू का रिश्ता
Register Now!
रजिस्ट्रेशन एवं सभी जानकारी निःशुल्क है
www.kayasthvivaah.com
अपना बायोडेटा 9810075792 पर whatsapp करें

Published and Printed by Abhay Kumar Lal Das for and on behalf of Mithilangan, A-40, Kailash Apartment, Plot No.-2, Sector-4, Dwarka, New Delhi-110078, at Anand Sons (India), C-87, Ganesh Nagar (Pandav Nagar Complex), Delhi-92